



# श्रीहरि-भजनामृत.

भाग २ रा.



# श्रीहरिभजनामृत.



Cl. 49863 भाग २ रा. No. 2327  
1996



संग्राहक

रा. जगन्नाथ रघुनाथ श्रीजगाधिकर  
प्रकाशक

क्षीरसागर आणि कंपनी.

( या पुस्तकाचे सर्व प्रकारचे कायमचे हक्क प्रकाशक यांनी  
आपले स्वाधीन ठेविले आहेत )

किंमत १२ आणे.

---

प्रिंटर—कृष्णराव सखाराम पाटकर,  
“ श्रीलक्ष्मीनारायण ” प्रेस ४०२ ठाकुरद्वार, मुंबई.

प्रकाशक—यशवंत रघुनाथ क्षीरसागर  
भायखळा, हेन्सरोड, चाळ नं. २१४, मुंबई येथे प्रसिद्ध केले.

---

पुस्तकें मागविण्याचा पत्ता—

क्षीरसागर आणि कंपनी,

बुकसेलर,

भायखळा हेन्सरोड, चाळ नं. २१४,

मुंबई नं. ११.

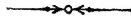
## प्रकाशकाचे दोन शब्द.



आजं चार वर्षे आर्दी बुकसेलरचा धंदा करीत आहो. त्यामुळे महाराष्ट्रातील लोक नाटके कादंबऱ्यांचेच भोक्त नसून चांगले वाङ्मयही त्यांस आवडत असे आढळून आल्यावरून आमचे मित्र व प्रसिद्ध महाराष्ट्र-कवि-चरित्रकार रा.रा. जगन्नाथ खुनाथ आजगांवकर यांकडून श्रीहरिभजनामृत नांवाच्या पुस्तकाचे तीन भाग तयार करून घेतले. रा. आजगांवकर हे या विषयांत किती पारंगत आहेत हे त्यांना वेळेवेळीं मिळालेल्या बक्षिसांवरून वाचकांस माहीत आहेच. सध्याचे दिवसांत अशा प्रकारची पुस्तके प्रसिद्ध करणे किती दुरापास्त झाले आहे हे सांगायचास पाहिजे असे नाही. या पुस्तकास जर चांगला लोकाश्रय मिळाला तर अशा प्रकारची पुस्तके विद्वान् मंडळी-कडून तयार करवून ती आश्रयदात्यांस अगदी स्वस्त किंमतीत देण्यांत येतील. चांगल्या प्रकारच्या वाङ्मयाचा महाराष्ट्र समाजांत प्रसार करणे हे आम्ही आमच्या उद्योगाचें मुख्य ध्येय ठरविले आहे व तदनुसार आमचे प्रयत्नही चालू आहेत. या प्रयत्नास यश येणें हें मुख्यतः महाराष्ट्रांतील गुणज्ञ व सक्षि जनांच्या सक्रिय सहाय्युत्तीवर अवलंबून असून ही सहाय्युत्ती आह्मांस भरपूर मिळेल अशी आमची खात्री आहे.

मुंबई ५-८-१८.

श्रीरसागर आणि मंडळी.



## प्रस्तावना.



महाराष्ट्र-कवि-चरित्र-लेखनाचा उद्योग करीत असतां गेल्या दहावीस वर्षांत बहुतेक सगळ्या जुन्या मराठी कवींची उपलब्ध कविता मला चाळावी लागली. त्या वेळीं ठिकठिकाणीं अशीं कांहीं सुंदर पद्ये माझ्या अवलोकनांत आलीं कीं त्यांतील प्रसाद, प्रेमळपणा, अर्थगांभीर्य, भापासौंदर्य, काव्यप्राचुर्य इत्यादि गुणसमुच्चयाच्या निदर्शनानें मी अगदीं वेडावून गेलों. व पुढें मागें ह्या सर्व रमणीय पद्यपुष्पांची एक तीन पदरी सुंदर माला गुंफून ती प्रेमळ व रासिक जनास अर्पण करावी असाही विचार मनांत आला. परंतु अनुकूल परिस्थितीच्या अभावीं हा विचार कृतींत उतरविण्याचें काम बरेच दिवस लांबणविर पडलें होतें. शेवटीं, गेल्या वर्षी या ग्रंथाचा पहिला भाग मोठ्या प्रयासानें छापून प्रसिद्ध केला. छपाईचें काम मनासारखें झालें नसतांही, काढलेल्या सर्व प्रति अवध्या. चार महिन्यांत खपून गेल्या. रासिक विद्वानांनीं व वर्तमानपत्रकर्त्यांनीं ग्रंथांतील पद्यांच्या निवडीविषयीं अनुकूल अभिप्राय व्यक्त केले त्यामुळे उत्तेजन येऊन ग्रंथाचे पुढील दोन्ही भाग मी लवकरच लिहून काढले. परंतु छपाईस लागणाऱ्या द्रव्याच्या अभावीं “ उत्पद्यंते विलीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः ” अशी स्थिति होते कीं काय या विचारांत, मुंबईतील बहुतेक ग्रंथप्रकाशकांस, ग्रंथ छापून प्रसिद्ध करण्याविषयीं विनंति केली असतां, हल्लीं कागदाच्या भयंकर महागाईत, हें मोठ्या खर्चाचें व धाडसाचें काम अंगावर घेण्याचें धैर्य एकाच्याही अंगीं दिसेना. बहुतेकांची प्रवृत्ति कादंबऱ्या नाटकांकडेच विशेष दिसली. परंतु “ सत्य संकल्पाचा दाता भगवान ” या संत-वचनाप्रमाणें, माझे मित्र रा. माधवराव रघुनाथ क्षीरसागर, क्षीरसागर व कंपनीचे उत्साही मालक यांनीं, माझ्या श्रमाचा योग्य मोबदला मला व देऊन हें पुस्तक प्रसिद्ध करण्याचें काम हातीं घेतलें व त्याप्रमाणें सदर

तीन्ही भाग सुबक रीतीने छापून प्रेमळ हरिभक्तांस आज ते प्रेमांनै सादर करीत आहेत. पहिल्या भागाच्या प्रथमावृत्तीस महाराष्ट्रांतील रसिकांनी जसा उदार आश्रय दिला तसाच या तीन्ही भागांस ते देतील अशी प्रकाशकांप्रमाणेच माझीही खात्री आहे.

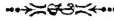
प्रस्तुत ग्रंथाच्या पहिल्या भागांत बहुतेक सर्व जुन्या मराठी कवींचीं अगदीं निवडक व अत्यंत प्रेमळ अशीं एकंदर २५२ पदे दिलीं आहेत. दुसऱ्या भागांत उत्तर हिंदुस्थानांतील सूरदास, तुलसीदास, नानक, कबीर, मीराबाई वगैरे बहुतेक सर्व जुन्या कवींचीं सुमारे ३२५ निवडक पदे दिलीं आहेत; व तिसऱ्या भागांत महाराष्ट्रांतील सर्व संतकवींचे ४७९ निवडक अभंग दिले आहेत. हीं पद्ये किती सरस आहेत हे त्यांच्या प्रत्यक्षावलोकनानें वाचकांच्या निदर्शनास येण्याजोगे असल्यामुळे त्यासंबंधाने येथे विशेष कांहीं लिहिण्याची आवश्यकता आहे असे वाटत नाहीं; तथापि नुसती भाविकपणाची दृष्टि सोडून केवळ काव्यदृष्टीने पाहणाऱ्या रसिकामहो हा पदसंग्रह अगदीं तल्लीन करून सोडील अशी माझी खात्री आहे. शेवटीं रा. क्षीरसागर यांचे पुनः एकवार आभार मानून ही प्रस्तावना पूर्ण करितों.

ज. र. आजगांवकर.

मुंबई. ता. २५।७।१८



# पदांची सूची.



|                             |     |
|-----------------------------|-----|
| अ                           |     |
| अबकी राखि लेहु गोपाल        | १२  |
| अब हौ नाच्यो बहुत गुपाल     | ३९  |
| अपने संग रलाई बे पैने       | ४३  |
| अबि गति गति जानी न परै      | ४६  |
| अपने विरदकी लाज विचारो      | ४६  |
| अपने लालको जिमावत पैया      | ५२  |
| अस कछु समुझि परै रघुराया    | ६६  |
| अब तुम कब स्मरोगे राम       | ६८  |
| अखेर मरना है मरना है        | ६८  |
| अब आये प्रान क्यों मेरे धाम | १०२ |
| अपनी डगर चलयो जा रे         | १०७ |
| अच्छा लेहु ब्रजघासी कन्दैया | १०९ |
| अब तो प्रगट भई जग जानी      | १११ |
| अबके माधो मोहि उधार         | ११६ |

|                              |     |
|------------------------------|-----|
| आ                            |     |
| आदि सनातन हरि अविनाशी        | १   |
| आज श्रीगोकुलमें बजत बधावराही | ३   |
| आज हरि रैन उनीदे आये         | १७  |
| आज कछु कुंजनमें बरसासी       | २२  |
| आई बदरिया वरसन हारी          | २२  |
| आंखिया हरिदर्शनकी प्यासी     | ३६  |
| आपहि धनक धारी प्रभुजी        | ६८  |
| आज बंशीबट वरसत रंग           | ८८  |
| आली मोही लागत वृंदावन नीको   | ९३  |
| आली री रासमंडल मध्य          | १०१ |

|                       |     |
|-----------------------|-----|
| आज नंदलाल मुखचंद नयनन | ११० |
| आराति कीज सुदरवरका    | ११९ |

|                     |    |
|---------------------|----|
| इ                   |    |
| इकदिन होगा कूच जरूर | ९९ |

|                           |     |
|---------------------------|-----|
| ऊ                         |     |
| ऊधो मोही ब्रज विसरत नाहीं | ३४  |
| ऊधो धनि तुमरो व्यवहार     | ३५  |
| ऊधो कर्मनकी गति न्यारी    | ३५  |
| ऊधो सो मुरत हम देखी       | ३६  |
| ऊधो चलो विदुर घर जये      | ५०  |
| ऊधो करे सवे बुरे          | ११४ |

|                           |     |
|---------------------------|-----|
| ए                         |     |
| ए तो श्रम नाहिंन तबहु भयो | १०४ |

|                          |    |
|--------------------------|----|
| ऐ                        |    |
| ऐसो कब करि है मन मेरो    | ३७ |
| ऐसे को उदार जगमाही       | ६३ |
| ऐसा मूढता या मनकी        | ६३ |
| ऐसा कान प्रभूकी रीती     | ६६ |
| ऐसी हरि करत दासपर प्रीति | ७३ |
| ऐसो श्रीरघुवीर भरोसो     | ७४ |
| ऐसे राम दीन हिनकारी      | ७४ |
| ऐसो हैरे भाई हारिस       | ९१ |

|                          |    |
|--------------------------|----|
| औ                        |    |
| और कोई समझो तो समझो      | ४७ |
| और कौन मांगिये को मांगवो | ६३ |

| क                                 | घ                              |
|-----------------------------------|--------------------------------|
| कर विचार वृषभानु दुलारी १३        | घर घर ते वनिता जो बन ५२        |
| काहें देखे रि धनश्यामा ३६         | च                              |
| कबहुं नहिं न गहर कियो ३९          | चल रे योगी नंदभवनमें ४         |
| कब दुरिहौ रघुनाथ हमारे ६२         | चलो री क्यों ना मानना          |
| कालिके फनन ऊपर निरत गोपाल ११      | कुंज कुटीर १८                  |
| कांकटलीना धालो म्हाशि फूटे २०     | चलो पिया वाही कदम तेर झूलें २२ |
| का हे ते हरि मोहि बिसारो ९६       | चल गये दिलके दागनगीर ११४       |
| किन तेरो गोविंद नाम धन्यो ११८     | चार वीस अवतार घर ४७            |
| कुब्जानें जादु डारा ३५            | चोआ चंदन मरदन अंगा ९२          |
| कृष्णनाम रसना रटत सोई धन्य ३२     | छ                              |
| कृपा कर दरशन दीजो हरी ३६          | छबीले बंसी नेक बजावो ५८        |
| केते दिन हरि सुमिरन विन खोये ७६   | छबि आछी बनी बनवारीकी ११०       |
| केशव कहि न जाय क्या कहिये ८०      | छांडो लंगर मोरी बहिया ग होना ८ |
| कैसे रास रसहि मैं गाऊं १०१        | छांड दे माननी श्यामसंग १०५     |
| को माता को पिता हमारे २१          | ज                              |
| कोई मोछो दिलां दियां बांगा तूं ७८ | जब हरि मुरलीनाद प्रकाश्यो १४   |
| कोऊ हरिसमान नहिं राजा ८८          | जयति नवनागरी सकल गुणसागरी १८   |
| को याचिये शंभु तज आन ९४           | जब ते मोहीं नंदनंदन २५         |
| कोऊ माई लैहैं री गोपालहीं १११     | जगमें देखत हूं सब चोर ५१       |
| कौन जतन विनर्ता करिये ७१          | जय जय जय रघुवंश दुलारे ५६      |
| ख                                 | जगके रुसे ते क्या भयो ६२       |
| खेल सब पैसेका ६९                  | जमका अजब तडाका बे ६९           |
| ग                                 | जगतमें झुटी देखी प्रीत ८५      |
| गिरिवर धन्यो अपने करको १०७        | जय जय जगज्जननि देवि ९४         |
| गोपी गोपाललाल रासमंडल माहीं १६    | जयति जयसुरसरी जगदखिल ९८        |
| गोपी प्रेमकी धुजा ३३              | जय नारायण ब्रम्हपरायण ११९      |
| ग्वारन क्यों ठाडी नंदपौरी ११२     | जागिये गोपाललाल जननी ४         |

जागिये ब्रजराज कुंवर कमल कोश

|                              |    |
|------------------------------|----|
| फूले                         | ५  |
| जागो बंशीवारे ललना जागो मोरे | ५  |
| जागो हो मोरे जगत उजारे       | ५  |
| जागो जागो हो गोपाल           | ५  |
| जाको मन लाग्यो गोपालसों      | ३१ |
| जानत प्रीति रीति यदुराई      | ४८ |
| जाउं कहां तजि चरण तिहारे     | ६१ |
| जानत प्रीति रीति रघुराई      | ७३ |
| जाको लगन रामकी नाहीं         | ८१ |
| जित देखो तित श्याम मई है     | ३४ |
| जिन प्रेमरस चाख्या नहीं      | ८४ |
| जिन मग रोको नंदकिशोर         | ८९ |
| जे जन शरण गये ते तारे        | ३८ |
| जै भगीरथ नंदनी मुनिचित-      |    |
| चकोर                         | ५३ |
| जै जानकि नाथा जै श्रीरघुनाथा | ९३ |
| जो तुम सुनो यशोदा गोरी       | ७  |
| जोवनकी मदमाती डोले रो        |    |
| गुजरीयां                     | २० |
| जो मैं हरी न शस्त्र गहाऊं    | ५० |
| झ                            |    |
| झुलो सुंग हिंडोले झुलाऊं     | २३ |
| ट                            |    |
| टेर सुनो ब्रजराज दुलारे      | ४९ |
| ठ                            |    |
| ठुमक गति चला                 | ११ |
| ठुमक चलत रामचंद्र            | ५८ |
| तजो मन हरिविमुखनको संग       | ७९ |

त

|                               |     |
|-------------------------------|-----|
| तांडवगति मुंडनपर निरत         |     |
| वनमाली                        | १२  |
| तुम टेढो म्हारी टेढी गगरिया   | २०  |
| तुम का जानोरी गूजर दधिकी      | २१  |
| तुमबिन श्रीकृष्ण देव और       |     |
| कोन मेरो                      | ४४  |
| तुमबिन कौन हमारो प्रभुजी      | ८८  |
| तुम जाओ जा जाओ                | १०३ |
| तुम सुनो राधिका विनयकान       | १०४ |
| तुम काहेको लाडिली मान करत     | १०५ |
| तू मेरा मनमोहन सांवलिया       | ३०  |
| तू तो राम सुमर जग लरवा दे     | ७०  |
| तेरी हँसन बोलन लाल मेरे       | २५  |
| तेरा राम बसता है तेरेहि मनमें | ८१  |
| तोमि त्रियानहिं भवन भट्ठी     | १८  |
| तेरे जा नयना करे अनिवारे      | २५  |
| तोहि डगर चलत का भयोरी         | १०९ |

द

|                            |     |
|----------------------------|-----|
| दर्शन देना प्राण प्यारे    | १०९ |
| दरमादे ठाढे दरवार          | ११८ |
| दिलदार यार प्यारे गलियेमें | २६  |
| दीनन दुखहरन देव संतन       |     |
| दितकारी                    | ३९  |
| दीन भयो गजराज दीन भयो      | ४१  |
| दीन का दयालु दानि दूमरा    | ६४  |
| दीन दयालु दिवाकर देवा      | ८७  |
| देखोरी यह कैसो बालक        | ९   |

देख चरित मोहिं अचरज आवैं ८  
देख युगल छबि सावन लाजै २२  
देख सखि आज रघुनाथ शोभा ७५

ध

धनि धनि श्रीवृंदावन धाम ३७  
धन धन धन मात गंग ५४

न

नहीं छोड़ूं रे बाबा रामनाम ५१  
नवल रघुनाथ नव नवल  
श्रीजानकी ६१  
नर अचेत पापसैं डर रे ८८  
नयननका चंचलता कहा काने १०३  
नमो नमो वृंदावन चंद ११६  
नारी हू न जानै बैदा २४  
नाथ मोही अवकी बेर उबारो ४५  
नाम जपन क्यों छोड़ दिया ८६  
नाचै छी छबीली नंदका कुमार १०२  
नामकी पैज राखो धनी ११७  
निरतत गोपाल संग राधिका बनी १६  
नंद भवनको भूषण माई ६  
नंदलाल निहुर होय बैठ रहे १०६

प

पति राखो मोरी श्याम विहारी ४२  
परम पुनीत प्रीति नंदनंदन १२०  
पारब्रह्म परमेश्वर अविगत भुवन ५९  
पाती सखा मधुवनसे आई ११३  
पल्ले रे अवधू हो मतवारा ८३  
पूछत प्रेम वधू मृदुबानी ५७  
मृतना विष दे अमृत पायो ११८

प्यारी मैं ऐसे देखे श्याम १  
प्यारो पैये केवल प्रेममें ३४  
प्रभुके ऊंच नीच नहीं कोई ३२  
प्रीति की रीति रघुनाथ जाने ७२  
प्रीतम जान लेहू मनमाहीं ८०  
प्रीतम तुम मोहि प्राण ते प्यारो ८७

व

बलि बलि जाऊं मधुर सुर गावो ६  
बजरी भदरी मोहनको चंचल ७  
वरजो नहीं मानत बारबार ९  
वसे मेरे नयनमे नंदलाल २९  
वसे मेरे नयननमें दोउ चंद ३०  
वजावै मुरलीकी तान सुनावै ५२  
वस्स करजी हू न वस्स करजी ९७  
वनत बनाऊं कछु बन नहीं १०६  
बंसुरी तू कवन गुमान भरी १३  
बंन काट मुरारी हमरे ४३  
बामुरी बजाइ आज रंगसों मुरारी १४  
बिलंब उजि माखन देरी भाई ७  
बिहरत बागवा मे देखे कुल ५५  
बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको ५६  
ब्रजपर नीकी आज घटा १०९

भ

भक्त हेट अवतार धरो मे २१  
भरत कपिसैं उक्कण हम नाहीं ६५  
भलाई करते बुराई होती तो बी ७०  
भजो रे भग्या रामगोविंद हरी ७०  
भज मन रामचरन सुखदाई ८३  
भजो मन वृंदावन सुखदाई ११५

|                                 |     |
|---------------------------------|-----|
| भीगत कुंजनमें दोड़ आवत          | २३  |
| भोर भयो जागो रघुनंदन            | ५४  |
| म                               |     |
| मन अटक्का बेपरवा हे नाल         | २९  |
| मन मोहलीया श्यामने              | ३१  |
| मन मानेकी बात नहीं कछु          | ३३  |
| मनमें मंजु मनोरथ होरी           | ५५  |
| मन रे प्रभुकी शरण विचारो        | ७९  |
| मनकी मनही माहीं रही             | ८६  |
| मन रे कौन कुमति तैं लीन्ही      | ८९  |
| मन राम सुभिर पलतायगा            | ९०  |
| माधव केवल प्रेम पियारा          | ३३  |
| माधोजू जो जन ते बिगैर           | ३८  |
| मालक कुल आलम के हो तुम          | ४५  |
| माधव गति तेरी ना जानी           | ४५  |
| माटी खुदी करेदी यार             | ७८  |
| माधो हरि हरि हरि मुख कहिये      | ९२  |
| माल जिन्होंने जपा किया          | ९३  |
| माधोजी मोसम मंद न कोऊ           | ९८  |
| मान तज चल सजनी                  | १०५ |
| माथे पै, मुकुट धुतिकुंडल        | ११३ |
| मुकुंद मुकुंद जपो संसार         | ९२  |
| मुकुट माथे धरे खोर चंदन करे     | ११० |
| मूरख छांड वृथा अभिमान           | ८२  |
| मृदु मुसकन कीजै धोरी धोरी       | १०६ |
| मेरे नयनोका तारा है मेरा गोविंद | २६  |
| मेरे गिरिधर गुपाल दूसरो न कोई   | २७  |
| मेरे रानाजी मैं गोविंदके गुन    | ८६  |
| मेरे भलो कियो राम आपनी भलाई     | ८९  |

|                                 |     |
|---------------------------------|-----|
| मेरी सुध लीजो श्रीब्रजराज       | ११७ |
| मेरे माधोजी आयो हौं सरे         | ११७ |
| मैं योगीयश गाथारी बाला          | ३   |
| मैंया मेरी कव बाढैगी चोटी       | ६   |
| मैंया मैं गाय चरावन जैहों       | १०  |
| मैं गिरिधर संग राती गँवैया      | २७  |
| मैं नूं बरज न भोलडी मां पीया    | २८  |
| मैंनूं हरदम रहैं दावा           | २९  |
| मैं किहि कहों विपति अति भारी    | ६५  |
| मोसम कौन कुटिल खलकामी           | ४०  |
| मोही मत रोकैं तूं एरी           | १०२ |
| मोहन मैं गूजर बरसानें           | १०७ |
| मोसों बात सुनो ब्रजनारी         | १०८ |
| मोहनी रूप बनायो हरिबाना         | ११३ |
| मोसम कौन अधम जगमाही             | ११६ |
| मंगल मूरति मारुत नंदन           | ८७  |
| मंगल आरति गोपालकी               | ११९ |
| म्हातें पार उतारो जी थाने       | ४०  |
| म्हारी सुध लीजो हो त्रिभुवन धनी | ४२  |

## य

|                             |     |
|-----------------------------|-----|
| यमुना न जान पावे भरने न देत |     |
| पानी                        | १०  |
| यह मन नेक न कहाँ कैरे       | ८५  |
| यय कमरी कमरी कर जानत        | १०८ |
| यह जानत तुम नंद महरसुत      | १०८ |
| यशुमति बार बार यह भावै      | ११४ |
| या ब्रजमें कैसी धूम मचाई    | २३  |
| या सावरेसों मैं प्रीति लगाई | २७  |

या जग मीतन देख्यो कोई ७९  
मेरी यह को है री पाँह १०७

## र

रच्यो श्रीवृंदावन रासगोविंद १५  
रहरी मानिनि मान न काँजै १९  
रघुवर आज रहो मेरे प्यारे ५५  
रघुवर तुमको मेरी लाज ६१  
रहुवे बाँबा रहुवे अज्या ७७  
रजधानी तुमरे चितनीकी १०८  
रानाजी तैं जहर दीनी मैं जानी २८  
रामनाम तू भजले प्यारे ७०  
राम सुमिर राम सुमिर यहि तेरो ७७  
राम जप राम जप राम जप ७८  
राम सुमिर ले सुमिरन कर ले ८०  
राम रंग लाग, हरि रंग लगा ८२  
रामराम रम रामराम रट ९५  
राधाजूकी सहज अटपटी बोलत १०३  
रे मन राम भरासो भारी ६२  
रे मन रामसो कर प्रीत ७७  
रे प्राणी क्या मेरा क्या तेरा ९१  
रौनै गईरी प्यारी छाँजे हठरी १०५  
रोके मोरी गौलवा मैं कैसे जाऊँ ९

## ल

लटक लटक चलत चाल  
मोहन आवै ११  
लगा है हृश्क तुम सेती निबाहोरे ३०  
लज्जा मोरी राखो श्याम हरी ४१  
लाज न लागत दास कहावत ६७

लालको नाचन शिखवत प्यारी १०५  
लागीरे लगनियां मोहनासो ११०  
लाल तेरे चपल नयन अनियारे १११  
लोचन भये श्यामके चेरे १११  
लंगर मोको गारियां दे दे जारी ९

## व

वारियां वे लाल वारियां १७  
वृंदावन कुंजधाम विचरत पिय १५  
वृंदावन विपिन सघन बंशीवट ३७  
वंदों मैं चरणसरोज तिहारे १२

## श

शरद निशि देख हरि हर्ष पायो १४  
शरण गहु शरण गहु शरण गहु  
रावणा ५६  
शरण गये प्रभु को न उबारे ११६  
शीश मुकुट मणि विराज १०  
श्याम तिहारी मदन मुरलिया १३  
श्याम तेरी नँसुरी नेक बजाऊँ १९  
श्याम मोस खेलो न होरी २४  
श्यामसुंदर मनमोहनी मूरत सुंदर ३८  
श्याम श्याम रटत प्यारी १०६  
श्रित कमलाकुचमंडल धृत ४९  
श्रीकृष्णको ध्यान मेरे निशिदिनारि २८  
श्रीकृष्णजीके कमलनेत्र कटि० ४८  
श्रीराधे देडारोना बांसुरी ५३  
श्रीरघुवीरकी यह बानी ७२  
श्यामचंद्र कृपालु भज मन ८१

| स                         |     |
|---------------------------|-----|
| सफल जन्म मेरो आज भयो      | ७   |
| सखि मोहि मोहन लाल मिलावै  | १९  |
| सभसे ऊँची प्रेमसगाई       | ३१  |
| सखेरी मुनिसंग बालक काके   | ५४  |
| सब दिन गये विषयके हेत     | ७६  |
| सब कछु जीवतको व्यवहार     | ८५  |
| समज बूझ दिल खोज पियारे    | ८६  |
| सभ सुख रामनाम लबलाई       | ९१  |
| सखी जबसो नंदलाल निहारे    | ९४  |
| साधो रामचरण विश्रामा      | ९०  |
| सांची कहो रंगीले लाल      | १७  |
| सांवरे दा भालन माथ सानू   | २६  |
| सांवरोजग तारन आधो         | ४७  |
| सांचे मनके माँता रघुवर    | ६३  |
| सावन घन गरजें धूम धूम     | ६७  |
| सांची कहो कै प्यारी हाँसी | १०४ |
| साँझ परी घर आये न कन्हैया | ११३ |
| सुन लंजै विनती मोरी       | ४१  |
| सुनधुन मुरली वैन बाजें    | १०० |
| सुन अलकावाले कृष्णजी मोर  | ११८ |
| सोई बडो जो हरिगुन गावै    | ९०  |
| संकट काट मुरारी हमरे      | ४२  |

संग चलीं ब्रज बाल लाल कर १०१

ह

|                                |     |
|--------------------------------|-----|
| हमसें रूठ रहत क्यों प्यारा     | १७  |
| हमरो दान देहु ब्रज नारी        | १९  |
| हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो    | ४०  |
| हरि हौ बडी बेरको ठाढा          | ४३  |
| हरिकी गती नहीं कोड जानै        | ४४  |
| हम भक्तनके भक्त हमारे          | ५०  |
| हरि हरि हरि सुमरण करा          | ५१  |
| हरिकी लाला कहत न आव            | ५३  |
| हम रघुनाथ गुणनके गवध्या        | ६१  |
| हरिजू मेरो मन हठ न तजै         | ६४  |
| हरिनाम लाढा लेत रे तरा         | ८४  |
| हरि हौ सभ पाततनका नायक         | ९५  |
| हरसे भी मन प्रीत लगा ले        | ९७  |
| हरिनाम कभी ना पुकारा           | ९९  |
| हर हर हर हर हर हर हेर          | ११२ |
| हे अच्युत हे पारब्रम्ह अविनाशी | ४८  |
| हे कोई दमका बात जगतम           | ९६  |
| हौ हरि पतितपावन सुने           | ६०  |
| हँस पूछै जनकपूरकी नारी         | ५०  |
| हँसका गुजार दम साइ             | ७६  |

श्रीशंकर प्रसन्न.



## श्रीहरि-भजनामृत.



भाग २ रा.

पद १. ( राग बिळावल. )

आदि सनातन हरि अविनाशी । सदा निरंतर घट घट बासी ॥  
पूरण ब्रम्ह पुराण बखाने । चतुरानन शिव अंत न जाने ॥ मंहिमा  
अगम निगम जिहि गावै । सो यशुदा लिये गोद खिलावै ॥ एक  
निरंतर ध्यावै ज्ञानी । पुरुष पुरातन है निर्वानी ॥ शुक शारदको  
नाम अधारा । नारद शेष न पावै पारा ॥ जप तप संयम ध्यान न  
आवे । सोइ नंदके आँगन धावे ॥ लोचन श्रवण न रसना नाशा ।  
बिन पद पाणि करै परकाशा ॥ अरुण असित सित वरण नधारे ।  
मुनि मनसामें कहा विचारे ॥ विश्वंभर निजनाम कहावे । घर घर  
गोरस जाय चुरावे ॥ जरा मरण ते रहित अमाया । मात पिता  
मुत बंधु न जाया ॥ आदि अनंत रहे जलसाई । परमानंद सदा  
सुखदाई ॥ ब्रानरूप हिरदैमें बोलै । सो बछरनके पाछे डोलै ॥ जल



थल अनल अनिल नभ छाया । पांच तत्त्वमें जग उपजाया ॥  
 लोक रचै पालै अरु मारै । चौदह भुवन पलकमें धारै ॥ काल डरै  
 जाके डरभारी । सो ऊखल बाँध्यो महतारी ॥ माया प्रकट सकल  
 जगमोहै । करण अकरण करै सोई सोहै ॥ जाकी माया लखैन कोई ।  
 निर्गुण सगुण धरे वपु दोई । शिवसनकादिक अंत न पावै ॥ सो गोप-  
 नकी गाय चरावै । गुण अनंत अविगतिहिं जनावै । यश अपार  
 श्रुति पार न पावै ॥ चरण कमल नित रमा पलोवै । चाहत नेक  
 नयनभर जोवै ॥ अगम अगोचर लीलाधारी । सो राधावश कुंज-  
 बिहारी ॥ जो रस ब्रम्हादिक नहिं पायो ॥ सो रस गोकुल गलिन  
 बहायो ॥ बडभागी यह सब ब्रजवासी । जिनके सँग खेलै अवि-  
 नाशी ॥ सूर सुयश कहि कहा बखानै ॥ गोविंदकी गति  
 गोविंद जानै ॥

### पद २. ( राग भैरव )

देखोरी यह कैसो बालक रानी यशोमति जाया है । सुंदर वरण  
 कमलदललोचन देखत चंद्र लजाया है ॥ पूरण ब्रम्ह अलख अवि-  
 नाशी प्रगट नंद घर आया है । मोर मुकुट पीतांबर सोहै केसर  
 तिलक लगाया है । कानन कुंडल गल बिचमाला कोटि भानु छबि-  
 छाया है । शंख चक्र गदा पद्म विराजै चतुर्भुज रूप बनाया है ॥  
 परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुमति सुत कहलाया है । मच्छ कच्छ  
 वाराह और वामन रामरूप दरशाया है ॥ खंभ फाटि प्रगटे नरहरि  
 वपुजन प्रह्लाद लुडाया है ॥ परशुराम बुध निह कलंक है भुविका  
 भार मिटाया है । कालियमर्दन कंसनिकंदन गोपीनाथ कहाया है ॥

मधुसूदन माधव मुकुंद प्रभु भक्तवल्ल पद पाया है ॥ शिवसनकादिक  
अरुब्रम्हादिक शेष सहस्रमुख गाया है ॥ सो परब्रम्ह प्रगट है ब्रजमें  
छट छट दधि खाया है ॥ परमानंद कृष्ण मनमोहन चरण कमल  
चित लाया है ॥

### पद ३. ( राग पीछ. )

आज श्रीगोकुलमें ब्रजत बधावरारी । यशुमति नंदलाल पायो  
कंसराज काल पायो गोपनने ग्वालपायो वनको श्रृंगाररी ॥ गोअन  
गोमाल पायो याचकन भागपायो सखियन सुहाग पायो प्रियावर  
सँवरारी ॥ देवनने प्रानपायो गुणियनने गान पायो भक्तन भगवान  
पायो सूर सुखदावरारी ॥

### पद ४ ( राग भैरव. )

मैं योगी यश गायारी बाला मैं योगी यश गाया ॥ तेरे सुतके  
दर्शन कारण मैं काशी तजि धाया ॥ परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल  
लोक जामाया ॥ अलख निरंजन देखन कारण सकल लोक फिरि-  
आया । धनि तेरो भाग यशोदा रानी जिन ऐसो सुत जाया ॥ गुणन  
बड़े छोटे मत भूलो अलख रूप धरआया ॥ जो भावै सो लीजिय  
रावल करो आपनी दाया ॥ देहु अशीश मेरे बालकको अविचल  
बाँटै काया ॥ ना मैं ले हौं पाटपटंवर ना मैं कंचन माया ॥ मुख देखों  
तेरे बालकको यह मेरे गुरुने बताया ॥ कर जोरे बिनवै नंदरानी सुन  
योगिनके राया ॥ मुख देखन नहिं देहौं रावल बालक जात डराया ॥  
जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यों जात डराया ॥ तीन लोकका  
साहब मेरा तेरे भवन छिपाया ॥ कृष्णलालको लाई यशोदा क

अंचर मुख छाया ॥ गोदपसार चरणरज बंदी अति आनंद बढ़ाया ॥  
निरखनिरख मुख पंकज लोचन नयनन नीर बहाया ॥ सूर श्याम  
परिकर्मा करके श्रृंगीनाद बजाया ॥

पद ५. ( राग भैरव. )

चल रे योगी नंदभवनमें यशुमति तोहिं बुलावैं ॥ लटकत लटकत  
शंकर आवैं मनमें मोद बढ़ावैं ॥ नंद भवनमें आयो योगी राइ लोन  
कर लीनो ॥ वार फेर लालाके ऊपर हाथ शीशपै दीनो ॥ व्यथा  
भई सब दूर बदनकी किलकि उठे नंद लाला । खुशी भई नंदजू  
की रानी दीनी मोतिनमाला ॥ रहुरे योगी नंद भवनमें ब्रज में  
बासो कीजै । जबजब मेरो लाला रोने तबतब दर्शन दीजै ॥ तुम  
तो योगी परम मनोहर तुमको वेद बखानैं । बूढो बाबू नाम हमारे  
सूरश्याम मोहिं जानैं ॥

पद ६. ( राग भैरव. )

जागिये गोपाल लाल जननी बलिजाई । उठो तात भयो प्रात  
रजनीको तिमिर गयो खेलत सब ग्वाल बाल मोहन कन्हवाई ॥ उठो  
मेरे आनंदकंद किरणचंद मंद मंद प्रकश्यो आकाश भानु कमलन  
सुखदाई । संगी सब पुरत वेनु तुम विना न छुटे धेनु उठो लाल  
तजो सेज सुंदर वर राई ॥ मुख ते पट दूर कियो यशुदाको दर्श  
दियो माखन दधि माँगि लियो विविधरस मिठाई । जेवत दोउ  
राम श्याम सकल मँगल गुणनिधान जूठनि रहि थारमें सो मान-  
दास पाई ॥

पद ७. ( राग भैरव. )

जागिये ब्रजराज कुँवर कमल कोश फूले । कुमुद वृंद सकुच भये  
भृंग लता झूले ॥ तमचर खग शोर सुनो बोलत बनराई । राँभत गौ  
क्षीर देन बछरा हित धाई ॥ विधु मलीन रवि प्रकाश गावत ब्रज  
नारी । सुंदरश्याम प्रात उठे अंबुजकरधारी ॥

पद ८. ( राग भैरव. )

जागो बंशीवारे ललना जागो मोर प्यारे ॥ रजनी वीती भोर भयो  
है घरघर खले किंवारे ॥ गोपी दही मथन सुनियत हैं कैंगनाकं झन-  
कारे ॥ उठो लालजी भोर भयो है मुरनर ठाढे द्वारे ॥ ग्वाल बाल  
सब करत कुलाहल जयजय शब्द उचारे ॥ माखन रोटी हाथमें  
लीन्हीं गौअनके रखवारे ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर शरण  
आयाँको तारे ॥

पद ९. ( राग भैरव. )

जागो हो मोरे जगत उज्यारे । कौटिमदन मुमुकुन पट वारत  
कमल नयन अँखियनके तारे ॥ ग्वाल बरछ सबरे सँग लैंक यमुन  
तीर बन जाउ सधारे । परमानंद कहत नँद रानी दूरजिन जाउ  
मेरे ब्रजकं रखवारे ॥

पद १०. ( राग ललित. )

जागो जागो हो गोपाल । नाहिन अति सोइयत है प्रात परम  
शुचिकाल ॥ फिरफिर जात निराखि मुख छिनछिन सब गोपनके  
बाल । बिन बिकसे मनोकमल कोश तेते मधुकर कीमाल ॥ जो तुम  
मोहिं पतियाद नसूर प्रभु सुंदरश्याम तमाल । तो उठिये आपन  
अवलोकिये तजि निद्रा नयन विशाल ॥

## पद ११. ( राग बिलावल. )

बलिबलि जाऊँ मधुर सुर गावो । अबकी बेर मेरे कुँवर कन्हैया  
 नंदहि नाच दिखावो ॥ तारी दै दै अपने करकी परम प्रीति उप-  
 जावो । आन जंतु धुनि सुनि डरपत कत मोभुज कंठ लगावो ॥  
 जिन शंका जिय करो लाल मेरे काहेको शर्मावो । बाँह उठाय  
 काल्हकी नाई धौरी धेनु बुलावो ॥ नाचो नेक जाऊँ बलि तेरी मेरी  
 साथ पुरावो । रत्न जडित किंकिणि पद नूपुर अपने रंग बजावो ॥  
 कनक खंभ प्रतिबिंब आपनो नव नवनीत खवावो । परम दयालु  
 मूरके उरते टारे नेक न जावो ॥

## पद १२. ( राग रामकली. )

मैया मेरी कब बाढैगी चोटी । किती बेर मोहिं दूध पियत भइ  
 यह अजहूँ है छोटी ॥ तू जो कहत बलकी बनी उयो हो है लांबी  
 मोटी । काढत गुहत न्हावावत जे है नागिन सी भुईं छोटी ॥ काचो  
 दूध पियावत मोहन देती माखन रोटी । मूर मैया याही रस रिझयो  
 हरि हलधरकी जोटी ॥

## पद १३. ( राग बिलावल. )

नंद भवनको भूषण माई । यशुदाको लाल वीर हलधरको राधा-  
 रमण परम सुखदाई ॥ शिवको धन संतनको सर्वस महिमा बेद  
 पुराणन गाई । इंद्रको इंद्र देव देवनको ब्रह्मको ब्रह्म अधिक अधि-  
 काई ॥ कालको काल ईश ईशानको अतिहि अतुल तोहयो नहिं  
 जाई । नंददासको जीवन गिरिधर गोकुल गामको कुँवर कन्हाई ॥

पद १४. ( राग बिलावल. )

सफल जन्म मेरो आज भयो । धनि गोकुल धनि नंद यशोद  
जिनके हरि अवतार लियो ॥ प्रगट भयो अब पुण्य सुकृत फल  
दीनबंधु मोहिं दर्श दियो । वारंवार नंदके आँगन लोटत द्विज आनंद  
भयो ॥ मैं अपराध कियो बिन जाने को जाने किहिं वेष जियो ।  
सूरदास प्रभु भक्तहेतुवश यशुमतिके अवतार लियो ॥

पद १५. ( राग भैरव. )

बिलंब तजि माखन देरी भाई । बछरे हमरे दूर निकस गये दधि  
मथति देरलाई ॥ जो न देय तोरे बछरे न चारू हौं नहिं बिपिन को  
जाई । यह लै अपनी कारी कमरिया मुरली औ लकुटाई ॥ इतनी  
कह हारि अतिहि रिसाने लोटत भूमि कन्हाई । धूरसहित सब अँग  
लिपटाने भैया लेत उठाई ॥ गोदी बीच बिठाय यशोदा मुख चूम  
दूध पिलाई । धनि धनि भाग सूर जननी जाके कृष्ण करत लरिकाई ॥

पद १६. ( राग देवगंधार. )

जो तुम सुनो यशोदा गोरी । नंदनंदन मेरे मंदिर में आज करत  
हैं चोरी ॥ हौं भई आन अचानक ठाढ़ी कछो भवनमें कोरी ॥ रहे  
छिपाय सकुच रंचक ह्वै मनोभई मति भोरी ॥ मोहिं भयो माखन  
पछतावो रीती देख कमोरी । जब गहि नाहि कुलाहल कीन्हों तब  
गहि चरण निहोरी ॥ लागे लेन नयन जल भर भर पैं हरि कान न  
तोरी । सूरदास प्रभु देत निशा दिन ऐसे आप सलोरी ॥

पद १७. ( राग काफी. )

बर्जरी महरी मोहनको चंचल चोर चतुर सुत तेरो ॥ आंगन  
आवै गोरस खावै दधि मटकी भूपर पटकावै । बाल रुआवै घूम

मचावै ऐसो नित उठ करत बखरो ॥ पलनापर उखलाहैं टिकावै  
तापर चढकर माखन लावै कपि बालनको टेर खिलावै देखत  
दुखित भयो मन मेरो ॥ छिप कर भीतर जाय निकासै अंधकार में  
मणि प्रकाशै ना पावै तो गारी देवै आग लगो उजरो घर तेरो ॥  
सांजहि धेनु बत्स लै आवै यशुदाजू दुख सह्यो न जावै । राख गाम  
अपनो हम जावैं केशव जन मन प्रेम घनेरो ॥

पद १८. ( राग सहानो. )

देख चरित मोहिं अचरज आवै । जो करता जग पालक हरता  
सो अब नंदको लाल कहावै ॥ विन कर चरण श्रवण नासा दृग  
नेति नेति जाको श्रुति गावैं । ताको पकर महरि अँगुरी ते आंगनमें  
चलिबो सिखरावै ॥ ब्रह्म अनादि अलक्ष अगोचर ज्योति अजन्म  
अनंत कहावैं । सो शशि वदन सदन शोभाको नैंद रानी निज गोद  
खिलावै ॥ जाके डर डोलत नभ धरणी काल कगल सदा भय  
पावै । सो ब्रजराज आज जननी की भौंह चढाको निरखि डरावै ॥  
जाके सुमिरण ते जीवनको भव बंधन छनमें छुट जावै । सोई आज  
बैँध्यो ऊखल ते निरखनको सगरो ब्रज धावै ॥ पूरण काम क्षीरसा-  
गर पति माँग माँग दधि माखन खावै । भक्ताधीन सदा नारायण  
प्रेम कि महिमा प्रगट दिखावै ॥

पद १९. ( राग सोरठ. )

छांडो लँगर मोरी बहिया गहो ना ॥ मैं तो नारि पराये घरकी  
मेरे भरोसे गुपाल रहो ना । जो तुम मेरी बेहां गहत हो नैंने मिलाय  
मेरे प्राण हरोना ॥ बृंदावनके कुंजगली में रीत छोड अनरीत  
करोना । मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल चित टारे टरोना ॥

पद १४. ( राग बिलावल. )

सफल जन्म मेरो आज भयो । धनि गोकुल धनि नंद यशोद  
जिनके हरि अवतार लियो ॥ प्रगट भयो अब पुण्य सुकृत फल  
दीनबंधु मोहिं दर्श दियो । वारंवार नंदके आँगन लोटत द्विज आनंद  
भयो ॥ मैं अपराध कियो बिन जाने को जाने किहिं वेष जियो ।  
सूरदास प्रभु भक्तहेतुवश यशुमतिके अवतार लियो ॥

पद १५. ( राग भैरव. )

बिलंब तजि माखन देरी भाई । बछरे हमरे दूर निकस गये दधि  
मथति देरलाई ॥ जो न देय तोरे बछरे न चारू हौं नहिं बिपिन को  
जाई । यह लै अपनी कारी कमरिया मुरली औ लकुटाई ॥ इतनी  
कह हारि अतिहि रिसाने लोटत भूमि कन्हाई । धूरसहित सब अँग  
लिपटाने भैया लेत उठाई ॥ गोदी बीच बिठाय यशोदा मुख चूम  
दूध पिलाई । धनि धनि भाग सूर जननी जाके कृष्ण करत लरिकाई ॥

पद १६. ( राग देवगंधार. )

जो तुम सुनो यशोदा गोरी । नंदनंदन मेरे मंदिर में आज करत  
हैं चोरी ॥ हौं भई आन अचानक ठाढ़ी कछो भवनमें कोरी ॥ रहे  
छिपाय सकुच रंचक है मनोभई मति भोरी ॥ मोहिं भयो माखन  
पछतावो रीती देख कमोरी । जब गहि नाहि कुलाहल कीन्हों तब  
गहि चरण निहोरी ॥ लागे लेन नयन जल भर भर पैं हरि कान न  
तोरी । सूरदास प्रभु देत निशा दिन ऐसे आप सलोरी ॥

पद १७. ( राग काफी. )

बर्जरी महरी मोहनको चंचल चोर चतुर सुत तेरो ॥ आँगन  
आवै गोरस खावै दधि मटकी भूपर पटकावै । बाल रुआवै घूम



मचावै ऐसो नित उठ करत बखरो ॥ पलनापर उखलाहैं टिकावै  
तापर चढकर माखन लावै कपि बालनको टेर खिलावै देखत  
दुखित भयो मन मेरो ॥ छिप कर भीतर जाय निकासै अंधकार में  
मणि प्रकाशै ना पावै तो गारी देवै आग लगो उजरो घर तेरो ॥  
सांजहि धेनु वत्स लै आवै यशुदाजू दुख सह्यो न जावै । राख गाम  
अपनो हम जावैं केशव जन मन प्रेम घनेरो ॥

पद १८. ( राग सहानो. )

देख चरित मोहिं अचरज आवै । जो करता जग पालक हरता  
सो अब नंदको लाल कहावै ॥ विन कर चरण श्रवण नासा दृग  
नेति नेति जाको श्रुति गावैं । ताको पकर महरि अँगुरी ते आंगनमें  
चलिबो सिखरावै ॥ ब्रह्म अनादि अलक्ष अगोचर ज्योति अजन्म  
अनंत कहावैं । सो शशि वदन सदन शोभाको नंद रानी निज गोद  
खिलावै ॥ जाके डर डोलत नम धरणी काल कगल सदा भय  
पावै । सो ब्रजराज आज जननी की भौंह चढाको निरखि डरावै ॥  
जाके सुमिरण ते जीवनको भव बंधन छनमें छुट जावै । सोई आज  
बैँध्यो ऊखल ते निरखनको सगरो ब्रज धावै ॥ पूरण काम क्षीरसा-  
गर पति माँग माँग दधि माखन खावै । भक्ताधीन सदा नारायण  
प्रेम कि महिमा प्रगट दिखावै ॥

पद १९. ( राग सोरठ. )

छांडो लँगर मोरी बहिया गहो ना ॥ मैं तो नारि पराये घरकी  
मेरे भरोसे गुपाल रहो ना । जो तुम मेरी बेहां गहत हो नैंने मिलाय  
मेरे प्राण हरोना ॥ बृंदावनके कुंजगली में रीत छोड अनरीत  
करोना । मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल चित टारे टरोना ॥

पद २६. ( राग हमीर कल्याण. )

ठुमक गति चला । अनोररी चाल । मारे मुकुट मकराकृत कुंडल  
केसर बेदी भाल ॥ आगे गैयां पाछे गैयां सँग सोहैं ब्रजबाल ।  
विष्णुदास मुरली धरकी छवि देखत भई निहाल ॥

पद २७. ( राग खमाज. )

लटक लटक चलत चाल मोहन आवै । भावै मन अधर मुरली  
मधुर सुर बजावै ॥ चंदन कुंडल चपल डोलन मोरमुकुट चंद्रकलन  
मंद हँसन जियाकी फँसन मोहनी मूरत राजै । अकुटी कुटिल  
चपल नयन अरुण अधर मधुर बैन गति गयंद चारु तिलक भाल-  
पर विराजै । लछनदास श्याम रूप नख शिख शोभा अनूप रसिक  
भूप निरखि बदन कोटि मदन लाजै ॥

पद २८. ( राग काफी. )

कालीके फनन ऊपर निरत गोपाल लाल अद्भुत छवि कहि न  
जाय त्रिभुवन मन मोहैं । तत्ता येई येई करत हरत सबके चित्त  
जात गात सुर नर मुनिजन चित्र लिखे सोहैं ॥ रुनक लुनक नूपुर  
धुन उठत उठत पैजनी पग ठुमक ठुमक किकिणी कटि बाजत  
चित करखैं । विद्याधर किन्नर गंधर्व जहां उघटत गत जय जय जय  
भाषत सुर बधू पुष्प वरपैं ॥ ज्यों ज्यों फण ऊंचे करत त्यों त्यों  
कृष्ण मोरें लात देत न अवकाश प्रभु नाचत गति धीमें । तरुण  
बदन गरल वमन सरल किये या विधि कर लटक लटक पटकत  
पग ललित रंग भीने ॥ नारदादि शिव विरंचि तज प्रपंच धरत  
आन ताको पग दुर्लभ सोई उरग शीश धारें । विद्याधर प्रभु

दयाल तज विवाद कियो निहाल काली तेरे धन्य भाग बिसरत  
न बिसारें ॥

पद २९. ( राग काफ़ी )

तांडव गति मुंडन पर निरत वनमाली । पंपंपं पग पटकत  
फंकफंक फनन ऊपर बिबिबि विनति करत नाग बधूआली ॥ १ ॥  
संसंसं सनकादिक नननं नारदादि गंगंगं गंधर्व सभी देत ताली ॥ २ ॥  
सूरदास प्रभुकी बानी किंकिंकिं किनहूँन जानी चंचंचं चरण  
धरत अग्य भयो काली ॥ ३ ॥

पद ३०. ( राग कानडा )

बंदौ मैं चरण सरोज तिहारे । सुंदर श्याम कमल दल लोचन  
ललित त्रिमंग प्राणपति प्यारे ॥ जे पद पद्य सदाशिवको धन  
सिंधुसुता उतरे नहिं टारे । जे पद पद्य तात रिस त्रासत मन बच  
क्रम प्रल्हाद सम्हारे ॥ जे पद पद्य फिरत वृंदावन अहि शिर धरि  
अगणित रिपु मारें । जे पद पद्य परस ब्रज युवती सर्वस दे सुत  
सदन बिसारे ॥ जे पद पद्य लोकत्रय पावन सुरसरि दरश कटत  
अधभारे । जे पद पद्य परसि ऋषिपत्नी नृप अरु व्याध अमित  
खल तारे ॥ जे पद पद्य फिरत पांडव गृह दूत भये सब काज  
सँवारे । ते पद पंकज सूरदास प्रभु त्रिविध ताप दुख हरण हमारे ॥

पद ३१. ( राग बिहाग. )

अबकी राखि लेहु गोपाल । दशो दिशा ते दुसह दवागिनी उपजी  
है यहिकाल ॥ पटकटबांस काँस कुश चटकत लटकत ताल तमाल ।  
उचटत अति अंगार फुटत फिर झपटत लपट कराल ॥ धूम धुंधि

बाँटि धुर अंबर चमकत बिच बिच ज्वाल । हरिन वराह मोर  
चातक पिक जरत जीव बेहाल ॥ जिनजिय डरो नयन सब मूँदो  
हँसि बोले नँदलाल । सूरअनल सब वंदन समानी अभयकरे ब्रजबाल ॥

पद ३२. ( राग परज. )

बैसुरी तू कवन गुमान भरी ॥ सोनेकी नाहीं रूपेकी नाहीं  
नाहीं रतन जरी । जात सिफत तेरी सब कोइ जानै मधुवनकी  
लकरी ॥ क्यारी भयो जव हरी मुख लागीं बाजत विरह भरी । सूर-  
श्याम प्रभु अब क्या करिये अधर न लाग तरी ॥

पद ३३. ( राग देस. )

श्याम तिहारी मदन मुरलिया तनक सीने मन मोह्यो । यह सब  
जीव जंतु जल थलके नाद स्वाद सुर पोह्यो ॥ धरणी ते गोवर्द्धन  
धरयो कोमल प्राण आधार । अब हरी लटक रहत है टेढ़े तनक  
मुरलिया भार ॥ हमें छुड़ाय अधर रस पीवे करे नरंचक कान ।  
सूरदास प्रभु निकस कुंज ते चेरी सौत भइ आन ॥

पद ३४. ( राग काफी. )

कर विचार वृषभानु दुलारी ॥ ग्वालरूपधर छलन कृष्णको नंद  
गामकी ओर सिधारी ॥ जहाँ हरी अपनी गाय चरावें तहां आप चल  
आई । देख रूप मोहे मुरलीधर भूलगये चतुराई ॥ अरे मित्र क्या  
नाम तिहारो बास कहां है तेरो । मैं तो तोहीं कभूँ नहीं देख्यो करत  
सदा ब्रज फेरो ॥ गोर ग्वाल भानपुरके हम गोधन वृंद चरावें ।  
रसिक विहारी गाह हमारी आई भज कहूँ पावें ॥

## पद ३५. ( राग गौड मलार )

शब्द निशि देख हरि हर्ष पायो । विपिन वृंदावनहिं सुभग फुले  
 सुमन रास रुचि श्यामके मनहिं आयो ॥ परम उज्ज्वल रैनि चमक  
 रहि भूमिपर सदा फल तरुन प्रति सुभग लागै । तैसोई परम रम-  
 णीय यमुना पुलिन त्रिविध बहै पवन आनंद जागै ॥ राधिका रमण  
 बन भवन सुख देखके अधर धर वेणु सुर ललित गाई नाम लैलै  
 सकल गोप कन्यानके सबनके श्रवण यह ध्वनि सुनाई ॥ सुनत  
 उपज्यो मयन परत ना काहू चैन शब्द सुन श्रवण भई विकल  
 भारी । सूर प्रभु ध्यान करके चली उठ सभी भवन जननेह तज  
 घोषनारी ॥

## पद ३६. ( राग कल्याण )

जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो । जंगम जडधावर चर कीन्हें  
 पहिने जलज विकाश्यो ॥ स्वर्गपताल दशोदिशि पूरण धुनि अच्छा-  
 दित कीनो । निशि हहि कल्पसमान बढाई गोपिनको सुख दीनो ॥  
 भर्मत भये जीव जल थलके तनुकी सुध न सम्हार । सूरश्याम  
 मुख वेणु विराजत उलटे सब व्यवहार ॥

## पद ३७. ( राग भैरव )

बांसुरी बजाई आज रंगसों मुरारी । शिव समाधि भूल गई  
 मुनिजन की तारी ॥ वेद भनत ब्रह्मा भूले ब्रह्मचारी । सुनतही  
 आनंद भयो लगी है करारी । रमा सब ताल चूकी भूली नृत्यकारी  
 यमुना जल उलट बहते सुधना सँभारी ॥ श्रीवृंदान बंसी बजी तीन  
 लोक प्यारी । ग्वाल बाल मगन भये ब्रजकी सभ नारी ॥ सुंदरश्याम

मोहनी मूरत नटवर वपु धारी । सूर किशोर मदन मोहन चरणों बलिहारी ॥

पद ३८. ( राग जंगला )

वृंदावन कुंज धाम विचरत पिय प्यारी । कति ककी शरद रैनि चदकी उजारी ॥ पवन मंद मंद चलत फूली फुलवारी । विकसे सर कमल फूठे शोभा अतिभारी ॥ झरना चहुँ ओर झरत यमुना सुखकारी । आनंदकी रैनि जान मुरली मुखधारी ॥ लैलैके नाम सकल तेरी ब्रजनारी । सुनके धुन भवन त्याग धाई सुतदारी ॥ उलटे तनुचीर पहर आई मिलसारी । विणा मृदंग चंग बाजत करतारी ॥ दास सुखानंद प्यारे चरण न बलिहारी ॥

पद ३९. ( राग कल्याण )

प्यारी मैं ऐसे देखे श्याम ॥ बांसुरी बजावत गावत कल्याण ॥ कबकी मैं ठाढ़ी भैयां मुध बुध भूल गैयां छौने जैसे जादू डारा भूले मोसे काम ॥ जब धनु कान पैया देहकी ना सुध रहिया तन मन हर लीनो विरहों वाले कान्ह ॥ मीरा वाई प्रेम पाया गिरिधरलाल ध्याया देह सों विदेह भैया लागो पग ध्यान ॥

पद ४०. ( राग देस )

रच्यो श्रीवृंदावन रास गोविंद । चलो सखी देखन चलिये नवल-अनर ॥ यमुनाके नीरे तीरे शीतल सुगंध । त्रिविध पवन डोलैं अति गति मंद ॥ खँजरी सरगी बाजै ताल मृदंग । धीण उपग मुरली मौहर मुहचंग ॥ भाळमें तिलक सोहै मृगभद देख । मुरली यनोहर जीको नखर भेख ॥ ब्रह्मा देखें विष्णु देखें नारी नरेश ।

देखन आये शुभ गोरी गणेश ॥ वृंदावन माहिं रच्यो रास विलास ।  
गुण गावैं स्वामी माधुरी दास ॥

पद ४१. ( राग भैरव )

निरतत गोपाल संग राधिका बनी । बाहुदंड भुजन मेलि मंडल  
मध्य करत केलि सरस गान श्याम करैं संग भामिनी ॥ मोर मुकुट  
कुंडल छबि काछनी बनी विचित्र शलकत उरहार विमल थकित  
चादनी । परम मुदित सुरनर मुनि वर्षत सब कुसुममाल वारत तन  
मन प्राण कृष्कदास स्वामिनी ॥

पद ४२. ( राग झिझोटी )

गोपी गोपाल लाल रास मंडल माहीं । तत्ता भेई ता मुगंध  
निरतत गहि बाहीं ॥ द्रुम द्रुम द्रुम दम मृदंग छन नन नन रूद  
रंग दगता दृगता लतंग उघटत रसनाई । बीचलाल बीचबाल प्रति  
प्रति अति द्यति रसाल अविगत गति अति उदार निरखि दृग  
सराहीं ॥ श्रीराधा मुख शरद चंद पोंछत जल श्रम अनंद श्री ब्रज  
चंद लटक करत मुकुट लाहीं ॥ तत्तत तत सुवर गात सारीगम  
पदनी ग ठाठ और पदाहिं प्रलाद दांप दंपनि अति सादाहें ।  
गावत रसभरे अनंद तान तान सुर अमर उमंगत छबि अति ।  
अनंद रीझत हरी राधाहिं ॥ छाये देवन विमान देखत सुर शक्त भान  
देबांगनां निधान रीक्षि प्राण वाराहिं । चकित थकित यमुना नीर  
खलमृग जग मग शरीर धन नैदक कुमार बलि बलि जाय सूर-  
दास रास सुख तिहारहिं ॥

पद ४३. ( राग कमाद- )

वारियां वे लाल वारियां ॥ तुसा अमनां फेरा पामनां कुंजइमा-  
रियां ॥ कौन सखीके तुम रँग राते हमसे अधिक प्यारियां ॥ उंची  
अठारियां ते लाल किवारियां तक-रहियां बाट तिहारियां ॥ मिराके  
प्रभु गिरिधर नागर या छवि पर बलहारियां ॥

पद ४४. ( राग भैरव )

सांची कहो रँगिले लाल । जावक मे कहां पाग रंगाई रंगरेजिन  
कोइ मिली है ग्वाल ॥ बदन रंग कपोलन दीये अरुण अधर भये  
श्याम तमाल । माला कहां मिली बिन गुनकी नख शिख देखत भई  
बिहाल ॥ जिन तुमरे मन इच्छा पुजई धन्य धन्य पियाधन वे बाल ।  
मूरड्याम छवि अछुत राजत यही देख मोको जंजाल ॥

पद ४५. ( राग रामकली. )

आज हरी रैनि उनीदे आये । अंजन अधर ललाट महावर नयन  
तमोर खवाये ॥ शिथिलत वसन मगरजी माला कंकन पीठ मुहाये ।  
लटपटी पाग अटपटे भूषणबिन गुन हार बजाये ॥ शिथिल गात  
अरु चाल डगमगी भ्रुकुटी चंदन लाये । मूरदास प्रभु यहि अचंभो  
तीन तिलक कहँ पाये ॥

पद ४६. ( राग पूर्वी ).

हमसे रूठ रहत क्यों प्यारी । कितमुख फेर फेर दग बैठो कौन  
चूक वृषभानु दुलारी ॥ गव्यों सखन सँग मै यमुना तट जहँ जल  
भरत रही ब्रजनारी । मोते कहन लगीं गागर भर लालन देहु  
उठाय हमारी ॥ मैं सुनी जब कही सबन मिल लेंगी समक्ष तुझें



देखन आये शुभ गोरी गणेश ॥ वृंदावन माहि रच्यो रास विलास ।  
गुण गावें स्वामी माधुरी दास ॥

पद ४१. ( राग भैरव )

निरतत गोपाल संग राधिका बनी । बाहुदंड भुजन मेलि मंडल  
मध्य करत केलि सरस गान श्याम करै संग भामिनी ॥ मोर मुकुट  
कुंडल छबि काछनी बनी विचित्र शलकत उरहार विमल थकित  
चादनी । परम मुदित सुरनर मुनि वर्षत सब कुसुममाल वारत तन  
मन प्राण कृष्णदास स्वामिनी ॥

पद ४२. ( राग झिझोटी )

गोपी गोपाल लाल रास मंडल माहीं । तत्ता थेई ता मुगंध  
निरतत गहि बाहीं ॥ द्रुम द्रुम द्रुम दम मृदंग छन नन नन रूद  
रंग दगता दगता लतंग उघटत रसनाई । बीचलाल बीचबाल प्रति  
प्रति अति द्यति रसाल अविगत गति अति उदार निरखि दृग  
सराहीं ॥ श्रीराधा मुख शरद चंद पोंछत जल श्रम अनंद श्री ब्रज  
चंद लटक करत मुकुट लाहीं ॥ तत्तत तत सुवर गात सारीगम  
पदनी ग ठाठ और पदाहिं प्रलाद दांप दंपनि अति सादाहे ।  
गावत रसभरे अनंद तान तान सुर अमर उमंगत छबि अति ।  
अनंद रीझत हरी राधाहिं ॥ छाये देवन विमान देखत सुर शक्त भान  
देबांगनां निधान रीक्षि प्राण वाराहिं । चकित थकित यमुना नीर  
खलमृग जग मग शरीर धन नैदक कुमार बलि बलि जाय सूर-  
दास रास सुख तिहारहिं ॥

पद ५०. ( राग कानडा. )

रहरी मानिनी मान न कीजै । यह जोवन अंजलिको जल है  
जो गोपाल माँगै तो दीजै ॥ छिन छिन घटत बढ़त ना जनी ज्यों  
ज्यो कला चंद्रकी छाँजै । पूरव पुण्य सुकृत फलकीनो काहे न रूप  
नयन भर पीजै ॥ सौंह करत तेरे पायँनकी ऐसे दिवन दशो दिन  
जीजै ॥ सूर सुजीवन सफल जगतको वैरी बाँध विवश करली जै ॥

पद ५१. ( राग काफी. )

सखी मोहि मोहन लाल मिलावै । ज्यों चकोर चंदाको इकटक  
भुँगी ध्यान लगावै ॥ बिन देखे मोहि कलन परेरी यह कह सभन  
सुनावै । बिन कारण मैं मानकियारी अपने हि मन दुख पावै ॥  
हाहा करि करि पाँयन परि परि हरि हरि टेरि लगावै । सूरश्याम  
बिन कोटि करो जो और नाहि निय भावै ॥

पद ५२. ( राग कल्याण. )

श्याम तेरी बँसुरी नेक बजाऊं । जो तुम तान कहो मुरलीमें सोई  
सोई गान सुनाऊं ॥ हमरे भूषण तुम सभ पहरो हौं तुमरे सभ  
पाऊं । हमरी बिंदरी तुमहि लगावो हौं शिर मुकुट धराऊं ॥ तुम  
दाधि बेचन जाहु वृंदावन हौं मग रोकन आऊं । तुम्हरे शिर माखन-  
कि मटुकिया हौं मिल ग्वाल छुटाऊं ॥ माननी होकर मान करो  
तुम हौं गहि चरण मनाऊं । सूरश्याम प्रभु तुम जो राधिका हौं  
नैदलाल कहाऊं ॥

पद ५३.

हमरो दान देहु ब्रजनारी । मद मोती गजगामिनि डोलै तू दाधि  
बेचन हारी ॥ रूप तोहि विधनाने दीयो ज्यों चंदा उजियारी । मटुकी

शीश कटी ले नयना मोतिन माँग सँवारी ॥ हार हमेल गलमें राजै  
अलकैं घघूरवाली । या ब्रजमें जे ती सुंदर हैं सब हम देखी भारी ।  
नारायण तेरी या छबि पर नँद नंदन बलिहारी ॥

पद ५४. ( राग मल्हार. )

जोबन की मदमाती डोले री गुजरिया । अंग अंग जोबन की  
उठत तरंग नई नयना कजरारे बाँके तिरछी नजरिया ॥ हाथनमें  
चूरी नक बेसर करन फूल मुंदरी ललित छबि देत अँगुरिया ॥  
अबलों तोसी नहीं देखी नारायण दधिकी बेचनहारी नंदकी नगरिया ॥

पद ५५. ( राग सोरठ. )

कांकडली ना धालो म्हारी फूटे गागडली । तू तो ठानो घर में  
ठाकड हौं भी ठाकडली ॥ आकड़ आकड़ बोलो कन्हा मैं भी आक-  
डली । मोढे थानो कारी कामर हाथमें लाकडली ॥ नौलख धेनु नंद  
धर दुहिया एकन बाखडली । माखन माखन आप ने खायो रहगई  
छाछडली ॥ जाय पुकारूं कंसके आगे मारे थापडली । बृंदावनमें  
रास रच्यो है मोरकी पांखडली ॥ नरसीके स्वामी सामलिया दूध में  
साकडली ॥

पद ५६. ( राग परज. )

तुम टेढ़ो म्हारी टेढ़ी गगरिया । टेढ़ी टेढ़ी चाल चलो त्रिभंगी  
काहे को दिखवे लाला टेढ़ी पगरिया ॥ टेढ़ी अलकमें क्या बाँधूंगी  
कछु न सुहावे मोहिं यारी सगरियां । टेढ़ो श्रीवृंदावन गोकुल टेढ़ा  
बाहूसे टेढ़ी वृषभानु नगरिया ॥ टेढ़ो श्रीनंद बाबा मात यशोदा और  
टेढ़ी वृषभानु दुलरिया । सूरदास टेढ़ेकी संगत टेढ़े होकर  
पार उतरिया ॥

पद ५७. ( राग असावरी. )

को माता को पिता हमारे । कब जन मत हमको तुम देख्यो  
हँसी लगत सुनि बात तुम्हारे ॥ कब माखन चोरीं कर खायो कब  
बांधे महतारी । दुहत कौन गैयाको चारत बात कही तुम भारी ॥  
तुम जानत मोहि नंद ढटोना नंद कहाते आये । मैं पूरण अविगत  
अविनाशी माया सबन भुलाये ॥ यह सुनि ग्वालि सबी मुसकानी  
ऐसेही गुण जानत । सूरश्याम जो निदस्यो सबही मात पिता  
नहि मानत ॥

पद ५८. ( राग सोरठ. )

तुम का जानोरी गूजर दधिकी बेचनहार । कौन पिता को मात  
हमारे जन्म अजन्म रूप रँग धार ॥ भुवके भार उतारन कारन लीन  
मनुज अवतार । मेरी माया जगत भुलानो मेरो कछो सत्यकर मानो  
गावत वेद पुराण भागवत यश गावत श्रुति चार ॥ जो मेरो निज  
दास कहावे रसिक प्रीतम निज भाक्ति पावे ब्रह्मादिक सनकादिक  
नारद शेष न पावत पार ॥

पद ५९. ( राग असावरी. )

भक्त हेत अवतार धरों मैं । कर्मधर्मके वश मैं नाहीं योग यज्ञ  
मनमें न करों मैं ॥ दीन गुहार सुनों श्रवण न भर गर्व वचन सुन  
हृदय जरों मैं । भावाधीन रहों सबहीके और न काहू ते नेक डरों  
मैं ॥ ब्रह्मा आदि कीटलौ व्यापक सबको सुख दे दुखहि हरो मैं ॥  
सूरश्याम तब कछो प्रगटही जहां भाव तहँ ते न हरो मैं ॥

मचावै ऐसो नित उठ करत बखरो ॥ पलनापर उखलाहैं टिकावै  
तापर चढकर माखन लावै कपि बालनको टेर खिलावै देखत  
दुखित भयो मन मेरो ॥ छिप कर भीतर जाय निकासै अंधकार में  
मणि प्रकाशै ना पावै तो गारी देवै आग लगो उजरो घर तेरो ॥  
सांजहि धेनु वत्स लै आवै यशुदाजू दुख सह्यो न जावै । राख गाम  
अपनो हम जावैं केशव जन मन प्रेम घनेरो ॥

पद १८. ( राग सहानो. )

देख चरित मोहिं अचरज आवै । जो करता जग पालक हरता  
सो अब नंदको लाल कहावै ॥ विन कर चरण श्रवण नासा दृग  
नेति नेति जाको श्रुति गावैं । ताको पकर महरि अँगुरी ते आंगनमें  
चलिबो सिखरावै ॥ ब्रह्म अनादि अलक्ष अगोचर ज्योति अजन्म  
अनंत कहावैं । सो शशि वदन सदन शोभाको नंद रानी निज गोद  
खिलावै ॥ जाके डर डोलत नम धरणी काल कगल सदा भय  
पावै । सो ब्रजराज आज जननी की भौंह चढाको निरखि डरावै ॥  
जाके सुमिरण ते जीवनको भव बंधन छनमें छुट जावै । सोई आज  
बैँध्यो ऊखल ते निरखनको सगरो ब्रज धावै ॥ पूरण काम क्षीरसा-  
गर पति माँग माँग दधि माखन खावै । भक्ताधीन सदा नारायण  
प्रेम कि महिमा प्रगट दिखावै ॥

पद १९. ( राग सोरठ. )

छांडो लँगर मोरी बहिया गहो ना ॥ मैं तो नारि पराये घरकी  
मेरे भरोसे गुपाल रहो ना । जो तुम मेरी बेहां गहत हो नैंने मिलाय  
मेरे प्राण हरोना ॥ बृंदावनके कुंजगली में रीत छोड अनरीत  
करोना । मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल चित टारे टरोना ॥

पद ५७. ( राग असावरी. )

को माता को पिता हमारे । कब जन मत हमको तुम देख्यो  
हँसी लगत सुनि बात तुम्हारे ॥ कब माखन चोरीं कर खायो कब  
बांधे महतारी । दुहत कौन गैयाको चारत बात कही तुम भारी ॥  
तुम जानत मोहि नंद ढटोना नंद कहाते आये । मैं पूरण अविगत  
अविनाशी माया सबन भुलाये ॥ यह सुनि ग्वालि सबी मुसकानी  
ऐसेही गुण जानत । सूरश्याम जो निदस्यो सबही मात पिता  
नहि मानत ॥

पद ५८. ( राग सोरठ. )

तुम का जानोरी गूजर दधिकी बेचनहार । कौन पिता को मात  
हमारे जन्म अजन्म रूप रँग धार ॥ भुवके भार उतारन कारन लीन  
मनुज अवतार । मेरी माया जगत भुलानो मेरो कछो सत्यकर मानो  
गावत वेद पुराण भागवत यश गावत श्रुति चार ॥ जो मेरो निज  
दास कहावे रसिक प्रीतम निज भाक्ति पावे ब्रह्मादिक सनकादिक  
नारद शेष न पावत पार ॥

पद ५९. ( राग असावरी. )

भक्त हेत अवतार धरों मैं । कर्मधर्मके वश मैं नाहीं योग यज्ञ  
मनमें न करों मैं ॥ दीन गुहार सुनों श्रवण न भर गर्व वचन सुन  
हृदय जरों मैं । भावाधीन रहों सबहीके और न काहू ते नेक डरों  
मैं ॥ ब्रह्मा आदि कीटलौ व्यापक सबको सुख दे दुखहि हरो मैं ॥  
सूरश्याम तब कछो प्रगटही जहां भाव तहँ ते न हरो मैं ॥

पद ६०. ( राग मल्हार. )

आज कल्लु कुंजनमें बरसासी । बादर गण में देख सखी री  
चमकत है चपलासी ॥ नान्ही नान्ही बुंदन कल्लु धुरवासी पवन  
बहत सुखरासी । मंद मंद गर्जन सी सुनियत नाचत मोर सभासी ॥  
इंद्र धनुषमें बगमिल डोलत बोलत है कोकिलासी । इंद्रवधू छबि  
छाय रही है गिरि पर श्याम घटासी ॥ उमग मही रुह से महि  
कंपत फूली मृगमालासी । रहत प्यास चातककी रसना रस पीवत  
हों प्यासी ॥

पद ६१. ( राग मल्हार. )

आई बदरिया वरसन हारी । गरज गरज दामिनि दमकावें ज्यो  
चूंदरमें झलक किनारी ॥ मधुर मधुर कोयल बन बोले भवन भवन  
गावत ब्रजनारी । चलत पवन शीतल नारायण परत फुहार लगत  
अति प्यारी ॥

पद ६२. ( राग मल्हार. )

देख युगल छबि सावन लाजै । उत घन इत घन श्याम लाडेला  
उत दामिनि इत प्रिय सँग राजै ॥ उत वर्षत बुंदनकी लरियां इत  
गल मोतियन हार विराजै । उत दादुर इत बजत बांसुरी उत गर्जत  
इत नूपुर बाजै ॥ उत रँगके बादर इत बागे उतै धनुष वनमाल इत  
साजै । उत घन घुमड इतै दृग घूमत नारायण वर्षा सुख आजै ॥

पद ६३. ( राग पीछ. )

चलो पिया बाही कदम तेर झूलै ॥ झुकि रहि लता अति सघन  
प्रफुलित कालिंदीके कूलै ॥ बोलत मोर चकोर कोकिला अलिगण  
गुंजत भूलै ॥ ललित किशोरी मग बतरावें कहकह बतियाँ फूलै ॥

पद ६९. ( राग तोड़ी. )

जब ते मोहिं नंद नंदन दृष्टि परो माई । कहा कहूं वाकी छवि  
वरणां नहिं जाई ॥ मोरनकी चंद्रकला शीश मुकुट सोहै । केसरको  
तिलक भाल तीन लोक मोहै ॥ कुंडलकी झलक कपोलन परछाई ।  
मनां मीन सुरवर तजि मकर मिलन आई ॥ ललित भ्रुकुटि तिलक  
भाल चितवन में टोना । खंजनऔ मधुप मीन भूले मृग छौना ॥  
सुंदर अति नासिका सुग्रीव तीन रेखा । नटवर प्रभु वेप धरे रूप  
अति विशेषा ॥ हँसन दशन दाडिम अति मंद मंद हासी । दमक  
दमक दामिनी अति चमकी चपलासी ॥ क्षुद्र घंटिका अनूप वरणां  
नहिं जाई । गिरिधर प्रभु चरणकमल मीरा बलि जाई ॥

पद ७०. ( राग खमाज. ]

तेरे जी नयना कोरे अनियारे मतवारे प्यारे । रतवारे कजरारे  
मान मृग छौना बारे अंजना सँवारे खंजन वार डारे ॥ नंदके दुलारे  
मोह लीनो बंसीबारे प्यारे ऐसे जी अनोखे नयना काहेसे सँवारे  
कृष्णदास बलिहारे तन मन धन वारे विधना सँवारे दरत हूँ न टारे ॥

पद ७१. ( राग बरवा. )

तेरी हँसन बोलन लाल मेरे मन बसियां । चल ते मृगराज चाल  
कांधे सोहे रुमाल केसर के तिलक ऊपर फरकत मोर पखियां ॥  
मुरली अधरा न धरे गुंजमाल सोहे गरे हरी हरी कुंजनमें संग लि  
सखियां । अरजी जुग रामदास सुनिये महाराज श्याम निरख निरख  
नयननकी कोर मांझ रखिया ॥



बनाई ॥ कहां गये तेरे पिता नंदजी कहां यशोमति माई । कहां गये  
तेरे सखा संगके कहां गये बलभाई ॥ तुझे अब लेत छुड़ाई ॥  
फगवा लिये बिन जान न दूंगी करियो कोटि उपाई । लेहों चुकाय  
कसर सभ दिनकी तुमहो चोर चुराई ॥ छीन दधि माखन ग्वाई ॥  
धनि गोकुल धनि धनि श्रीवृंदावन धनि यमुना यदुराई । राधा कृष्ण  
युगल जोरी पर नंददास बलिजाई ॥ प्रीति उर रही न समाई ॥

पद ६७. ( राग जंगला सिंध )

इयाम मोसे खेलो न होरी पालागों कर जोरी ॥ गैयां चरावन मैं  
निकसी हूं सासन नंदकी चोरी । सगरी चंदुरिया न रंग भिजोवो  
इतनी सुनो बात मोरी ॥ छीन झपट मोरे हातसे गागर जोरसे बहियां  
मरोरी । दिल धडकत मेरो मांस चढत है देह कँपत गोरी गोरी ॥  
अबिर गुलाल लिपट गयां मुखसे सारीं रंगमे बोरी । सास हजारन  
गारी देवे अरु बालम जी ती न छोरी ॥ फाग खेलके तैंने रे मोहन  
क्या कीनी गति मोरी । सूरदास आनंद भयो उर लाज रही  
कछु थोरी ॥

पद ६८. ( राग देश. )

नारी हूं न जाने बैदा निपट अनारी रे । बूटी सभ झूठी परी  
औषध न कारी रे ॥ जाऊ वैद घर अपनेको मेरे पीर भारी रे । यमुना  
किनारे ठाढी ओढ कसूमी सारी रे ॥ नंद जूके डोटा मोहिं नयना  
भर मारी रे । गोकुलमें बैद बसैं साँवरो विहारी रे । वाहीको बुलायके  
दिखाडयो मेरी नारी रे ॥ पुरुषोत्तम प्रभु बैद हमारे वाही छबीले ते  
लगी है मेरी यारी रे ॥

दिन छूटे न छिनभर तार यह टूटे । लगी अब तो नहीं छूटे प्राण  
हरिचंद वारा है ॥

पद ७५. ( राग काफ़ी. )

या साँवरे सों मैं प्रीति लगाई । कुल कलंक ते नाही डरोंगी  
अबतों करों अपने मन भाई ॥ बीच वजार पुकार कहूं मैं चाहे करों  
तुम कोटि बुराई । लाज मरजाद मिली औरनको मृदु मुसकान मेरे  
बट आई ॥ बिन देखे मन मोहन को मुख मोहि लागत त्रिभुवन  
दुखदाई । नारायण तिनको सब फीको जिन चाखी यह रूप  
मिठाई ॥

पद ७६. ( राग बरवा. )

मैं गिरिधर सँग राती रवैया ॥ पँचरंग चोला रँगा दे सखी में  
झुरमट खेलन जाती ! ओही झुरमट मरो साई मिलेगा खोल तनी  
गल गाती ॥ चंदा जायगा मूरज जायगा जायगी धरन अकाशी ।  
पवन पानी दोनोंही जायेंगे अटल रहे अविनाशी ॥ सुरत निरत का  
दीउडा सँजोले मनसाकी कर ले बाती । प्रेमहटी का तेल मँगाले  
जग रह्या दिन ते राती ॥ जिनके पिया परदेश बसत हैं लिख लिख  
भेजें पाती । मेरे पिया मेरे माहि बसत हैं ना कहूं आती न जाती ॥  
पीहरे बसूं ना बसूंगी सास घर सद्गुरु शब्द सुनासी । ना घर तेरा  
ना घर मेरा कहगई मीरा दासी ॥

पद ७७. ( राग सोरठ. )

मेरे गिरिधर गुपाल दूसरो न कोई । जाके शिर मोर मुकुट मेरो  
पति सोई ॥ शंख चक्र गदा पद्म कंठ माल सोही । तात मात आत  
बंधु आपनो न कोई ॥ छाँड दुई कुलकी कान क्या करगा कोई ।

## पद ७२. ( राग देश. )

सांवरे दी भालन माये सानूं प्रेम ही कटारियां । सखी पूछें दोऊ  
चारे व्याकुल क्यों भैयां नारे रंगके रँगिले मोसें दृग भर मारियां ॥  
व्याकुल बेहाल भैयां सुध बुध भूल गैयां अजहूं न आये श्याम कुंज  
बिहारियां । यमुनाकी घाटी बाटी असां तेरी चाल पछाती बैसिया  
बजावीं कान्हा भैयां मतवारियां ॥ मीराबाई प्रेम पाया गिरिधर-  
लाल भ्याया तू तो मेरा प्रभुजी प्यारा दासी हौं तिहारियां ॥

## पद ७३. ( राग रेखता. )

दिलदार यार प्यारे गलियोंमें मेरे आजा । आंखें तरस रही हैं  
सूरत इन्हें दिखा जा ॥ चेरी हूं तेरी प्यारे इतना तू मत सतारं ।  
लाखोंही दुख सहारे टुक अबतो रहम खाजा ॥ तेरेही हेत मोहन  
छानी है खाक बनबन । दुख झेले शिर पै अनगिन अब तो गले  
लगाजा ॥ मनको रहूं मैं मारे कबतक बतादे प्यारे । सूखे विरहमें  
तारे पानी इन्हें पिलाजा ॥ सब लोक लाज खोई दिन रैन बैठ रोई  
जिसका कहीं न कोई तिसका तू जी बचाजा ॥ मुझको न यूं  
भुलाओ कछु शरम जीमें लाओ । अपनोंके मत सताओ ऐ प्राण  
प्यारे राजा ॥ हरिचंद नाम प्यारी दासी है जो तुम्हारी । मरती है  
वह बिचारी आकर उसे जिलाजा ॥

## पद ७४. ( राग देश. )

मेरे नयनोंका तारा है मेरा गोविंद प्यारा है ॥ व सूरत उसकी  
भोलीसी व शिर पगिया मठोलीसी । व बोलीमें ठठोलीसी बोल दृग  
बाण मारा है ॥ व घुंघर वारियां अलके व झोके वारिया पलके ।  
मेरे दिल बीचमें हलके छूटा घर बार सारा है ॥ दरश सुख रैन

रंगुली माए लाई कुल जहान । इकना नू रंग चढ गया इक रह  
गए अमना मान ॥

पद ८१. ( राग बेहाग. )

मन अटक्या बेपरवा हे नाल ॥ नयन फँसे दिल मिलया लोढे  
मूरख लोक असानू मोडे मेरा हरदम जादा आहे नाल ॥ मुल्लां काजी  
नमाज पढावन हूकम शरादा भय दिखलावन साडे इशक नू की  
इस राहे नाल ॥ नदियों पार सजन दा ठाना कीते कौल जरूरी  
जाना कुछ करलै सलाह मलाहे नाल ॥ आशिक सोई जेहडा इशक  
कमावे जितबल प्यारा उते बल जावे वुल्ले शाहा जा मिल नू  
अला हे नाल ॥

पद ८२. ( राग पहाड. )

मैनु हरदम रहि दाचा सजन दे शोक न जारे दा ॥ जब तें  
कीता असांवल फेरा हार शृंगार पया भट मेरा सीन रडके सांग  
गुझडा इशक न्यारे दा ॥ रल मिल सैयां मारन बोली ओह मेरा  
साहिब मैं ओहदी गोली रखदीहां जान पछान जामिन हशर रिहा-  
डेदा ॥ ना आदम ना हव्वा आई ताते जाता अपना माहीं आया  
साहब आप बनके रूप सतारेदा ॥ मीरां शाह विभूति रमायां सावरे  
देदर अलख जगावां ओही है सिरताज आजज नीच नकारे दा ॥

पद ८३. ( राग देवगंधार. )

बसे मेरे नयनन में नैदलाल । सांवरी सूरत माधुरी मूरत राजिव  
नयन विशाल ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अरुण तिलक दिये  
भाल । अधरन बंसी करमें लकुटा कौस्तुभमाणि वनमाल ॥ वाजूबंद

संतन सँग बैठ बैठ लोकलाज खाई ॥ अब तो बात फैल गई जाने सब कोई । अँसुअन जल सींच सींच प्रेम बोल बोई ॥ मीरा प्रभु लगन लगी होनी होसो होई ॥

पद ७८. ( राग सोरठ. )

रानाजी तैं जहर दीनी मैं जानी । जबलग कंचन कारीये नाहीं होत न बारा बानी ॥ लोक लाज कुल कान जगतकी बहाय दीनी जैस पानी ॥ अपने घरको परदा करले मैं अबला बौरानी । तरकश तांग लग्यो मेरे हियरे गरकगयो सनकानी ॥ मीरा प्रभुजीके आगे नाची चरणकमल लपटानी ॥

पद ७९. ( राग भैरव. )

श्रीकृष्णजीको ध्यान मेरे निशिदिनारी माई । माधुरी मूरत सोहनी सूरत चित्त लियो है चुराई ॥ लाल पाग लटक भाल चिबुक बेसर कंठ माल कर्णफूल मंदहास लोचन सुखदाई । मोरपंख शीश धरे मोतिनको हार गरे बाजूबंद पहुंची कर मुद्रिका सुहाई ॥ क्षुद्र घंटिका जेहर नूपुर बिछिया सुदेश अंग अंग देखत उर आनंद न समाई । मुरलीधर अधर श्याम ठाढ़े ब्रज युवति माहिं सप्त सुरन तान गान गोवर्द्धन राई ॥ निरख रूप अति अनूप छाके सुरनर विमान बल्लभ पद किंकर दामोदर बलि जाई ॥

पद ८०. ( राग जंगला. )

मैं नू बरज न भोलडी मां पीया नाल मैं रत्ती यां ॥ ना तकिया ना आसरा माए ना कोई राह गली । मैं शोहर टूंडा आपना माए कर कर बाहिं खली ॥ सांई फूल गुलाब दा मेरी झोलडी टूट पया । बेसर भोले सुंघया मेरे रोम रोम रच गया ॥ शाह सरफा महिंदी

तुमबिन तडफता जी जिवाओगे तो क्या होगा ॥ मेरे इस दिल  
 दिवानेको सताओगे तो क्या होगा । अजब दीदार रोशन है लिपा-  
 ओगे तो क्या होगा ॥ चुराकर दिल परायेको दिलाओगे तो क्या  
 होगा । जिगरके दर्दकी दारू बताओगे तो क्या होगा ॥ रसिक  
 गोविंद सीनेसे लगाओगे तो क्या होगा ॥

पद ८८. ( राग देश. )

मन मोहलिया श्यामने बंसीको बजाके । बेखुद किया दिलदारने  
 गुलफोंको दिखाके ॥ पटपीत मुकुट मोरलकुट लटपटी पहिया ।  
 चलते हैं लटक चाल से भुकुटीको न चाके ॥ अलमस्त किया दममे  
 ब्रजनारि को मोहन । मुरलीके साथ किंकिर्णा नूपुरको बजाके ॥  
 कुर्बान सनम् तुझ पै दीलो दीन हमारा । राग्यो ललित किशोरीको  
 गरसे लगाके ॥

पद ८९. ( राग सारंग. )

जाको मन लाग्यो गोपाल सों ताहि और नहि भावै । लेकर मीन  
 दूध में राख्यो जल बिन सचु नहि पावै ॥ जैसे शूरमा घायल धूमत  
 पीर न काहुं जनावै । ज्यों गूंगा गुड खाय रहत है स्वाद न काहु  
 बतावै ॥ जैसे सरिता मिली सिंधुमें उलट प्रवाह न आवै । तैसे मूर  
 कमलमुख निरखत चित इत उत न चलवै ॥

पद ९०. ( राग धनाश्री. )

सभसे ऊंचो प्रेम सगाई । दुर्योधनकी मेवा त्यागे साग विदुर  
 घर पाई ॥ जूटे फल शबरीके खाये बहु विधि प्रेम लगाई । प्रेमके  
 वश नृप सेवा कीनी आप बने हरि नाई ॥ राजसू यज्ञ युधिष्ठिर

अभूषण सुंदर नूपुर शब्द रसाल । दास गोपाल मदनमोहन पिय  
भक्तनके प्रतिपाल ॥

पद ८४. ( राग देवगंधार. )

बसे मेरे नयनन में दोउ चंद । गौर वर्ण वृषभानु नंदनी श्याम  
वरण नंदनंद ॥ गोलक रहे लुभाय रूपमें निरखत आनंदकंद । जय  
श्रीभट्ट युगल रस बंदों क्यों छूटे दृढ़ फंद ॥

पद ८५. ( राग परज. )

या ब्रजमें कल्लु देख्योरी टोना । ले मटुकी शिर चली गुजरिया  
आगे मिले बाबा नंदके लोना ॥ दधिका नाम बिसर गयो प्यारी  
लेले हुरी कोऊ श्याम सलोना । वृंदावनकी कुंज गली में आंख  
लगाय गयो मनमोहना ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर सुंदर  
श्याम सुधर रस लोना ॥

पद ८६. ( राग खेमटा. )

तू मेरा मनमोहन सामलिया । भौह कमान नान कानन लौं नयन  
बानहंस मारे कल्लु बलिया । ठुमक चलन बोलन मुख पंकज मधुरे  
हँसन कर डारे बेकलिया । जन रघुनाथ इते पर मोहन अब न  
बजा प्यारे लाल मुरलिया ॥

पद ८७. ( राग रेखता. )

लगा है इश्क तुम सेती निबाहोरो तो क्या होगा । मुझे है चाह  
मिलनेकी मिलाओगे तो क्या होगा ॥ हुसन चश्मोंके प्यालेभर पिला-  
ओगे तो क्या होगा । चमनबिच आन कर मुखड़ा दिखाओगे तो क्या  
होगा ॥ भरम धर्ता है कुल आलम हँसाओगे तो क्या होगा । सजन

पद ९३. ( राग कानडा. )

माधव केवल प्रेम पियारा । गुण अवगुण कछु मानत नाहीं  
जान लेहु जो जाननहारा ॥ व्याधाचर्ण अवस्था ध्रुवकी गज ने शास्त्र  
कौन विचारा । भक्त विदुर दासीमुत कहिये उग्रसेन कछु बल नहिं  
धारा । सुंदर रूप नहिं कुब्जाको निर्धन मित सुदामहु तारा । कहैं  
लौ वरणि सकौं सबहिनको मोपै जात न पारा ॥ मुन प्रभु सुयश  
शरण हौं आयो मोसे दीनको काहे बिसारा । भक्त राम पर वेग द्रवो  
क्यों ना कहिये दासन दास हमारा ॥

पद ९४. ( राग जिल्हा झिझोटी. )

गोपी प्रेमकी धुजा । जिनन गुपाल किये बश अपने उरधर  
श्याम भुजा ॥ शुक मुनि व्यास प्रशंसा कीनी उद्धव संत सराहीं ।  
भूरि भाग्य गोकुलकी वनिता अति पुनीत जगमाहीं ॥ कहा भयो  
जो विप्र कुल जन्म्यो सेवा सुमिरण नाहीं । श्वपच पुनीत दास पर-  
मानंद जो हारि सन्मुख जाहीं ॥

पद ९५. ( राग जंगला काफी. )

मन मानेकी बात नहीं कछु जातिको कारन ॥ कुब्जा कर्मा और  
भीलनी पूतना और निपाद । गति पाई जिन यशुमति जैसी भये  
भुवन विख्यात ॥ वाल्मीकि रथदास विदुर और केशव कबीर किरात ।  
सेन भक्त और सजन कसाई कहु इनकी क्या जात ॥ जप तप योग  
दान व्रत संयम नहिं इनसों हर्षात । रसिकनाथ प्रभु इक रस साँचो  
भावभक्ति पतियात ॥



## पद ९६. ( राग बेहाग. )

प्यारो पैये केवल प्रेम में । नहीं ज्ञान में नहीं ध्यान में नहीं करम  
कुल नेम में ॥ नहीं भारत में नहीं रामायण नहीं मनुमें नहीं वेदमें ॥  
नहिं झगरे में नहीं युक्ति में नहीं मतनके भेदमें ॥ नहीं मंदिरमें नहीं  
पूजामें नहीं घंटाकी घोर में ॥ हरीचंद वह बांध्या डोलै एक  
प्रेमकी डोर में ॥

## पद ९७. ( राग धनाश्री. )

ऊधो मोहिं ब्रज विसरत नाहीं । हंस सुताकी सुंदर कलरव अरु  
कुंजनकी छाहीं ॥ वे सुरभी वे बच्छ दोहनी खरिक दुहावन जाहीं ।  
ग्वाल बाल सभ करत कुलाहल नाचत गहिं गहिं बढीं ॥ यह मथुरा  
कंचनकी नगरी मणिमुक्ता जिहि माहीं । जबहिं सुरत आवत वा  
सुखकी जिय उमगत सुधि नाहीं ॥ अनगिन भौंति करी बहु लीला  
यशुदानंद निवाहीं । सूरदास प्रभु रहे मौन गह यह कह कह  
पछताहीं ॥

## पद ९८. ( राग मल्हार. )

जित देखों तित श्याम भई है । श्याम कुंजवन यमुना श्यामा  
श्याम गगन घन घटा छई है । सभ रंगनमें श्याम भरो है लोग कहत  
यह बात नई है । मै बोरन के लोगन ही की श्याम पुतरिया बदल  
गई है ॥ चंद्र सार रवि सार श्याम है मृगमद श्याम काम विजई  
है ॥ नीलकंठको कंठ श्याम है मनो श्याम ता बेलि बई है ॥ श्रुति  
को अक्षर श्याम देखियत दीप शिखा पद श्याम तई है । नर देव-  
नकी मोहर श्यामा अलग्ग ब्रह्म छबि श्याम भई है ॥

## पद ९९. ( राग देश. )

कुब्जाने जादू डारा जिन मोह्यो श्याम हमारा री । निशितिन चलय रहत नहि राखे इन नयनन जलधारा री । अब यह प्राण कैसे हम राखें बिछुरे प्राण अधारा री । ऊधो तब ते कल न परत है जब ते श्याम सिधारा री । अब तो मधुवन जाय ले आवो मुदर नंद दुलारा री । मूरदास प्रभु आन मिलावो नन मन धन सब वारा री ॥

## पद १००. ( राग नट. )

ऊधो धनि तुमरो व्यवहार । धन वे ठाकुर धन तुम मेवक धन बन परसन हार ॥ आम को काटि बचुर लगावन चंदन होकत भार । शाहको पकर चोरको छोरत चुगलनको अधिकार । दम्पको योग भोग कुब्जाको ऐसी समझ तिहार । हंस मयूर शुकापिक व्यागत कागनको इतबार ॥ तुम हरि पढे चातुरी विद्या निपट कपट चटमार । मूरश्याम कैसे निवहैगी अंध धुंध मरकार ॥

## पद १०१. ( राग रामकवी. )

ऊधो कर्मनकी गति न्यारी । सब नदियां जल भर भर रहियां सागर किस विधि खारी । उधल पंख दिथे बकुलाको कोयल कित गुणकारी । सुंदर नैन मृगाको दीने बनवन फिरत उजारी ॥ मूरख मूरख राजे कीने पंडित फिरत भिखारी । मूरश्याम मिलवे की आशा छिन छिन बीतत भारी ॥

## पद १०२. ( राग असावरी. )

ऊधो सो मूरत हम देखी । शिव सनकादि सकल मुनि दुर्लभ ब्रह्म इंद्र नहि पेखी ॥ खोजत फिरत युगो युग योगी योग युगत ने

न्यारी । सिद्ध समाधि स्वप्न नहीं दरशी मोहनी मूरत प्यारी ॥ निगम  
अगम विमला यश गावें रहत सदा दरबारी । तिलभर पार वार नहीं  
पायो कहि कहि नेति पुकारी ॥ नाथ यती अरु योगी जंगम ढूँढ़ रहे  
वनमाहीं । वेष धरे धरती भ्रमि हारे तिनहूँ दरशी नाहीं ॥ सो हम  
गृह गृह नाच नचाई तनक तनक दधि देके । रामदास हम रँग  
इमाम रँग जाहु योग घर लेके ॥

पद १०३. ( राग भैरव. )

आँखियां हरि दर्शनकी प्यासी । देख्यो चाहत कमल नयनको  
निशिदिन रहत उदासी ॥ केसर तिलक मोतिनकी माला वृन्दावनके  
वासी । नेह लगाय त्याग गये तृण सम डार गये गल फांसी ॥ काहूके  
मनकी को जानत लोगनके मनहासी । सूरदास प्रभु तुमरे दरश बिन  
लेहौं करवैट कासी ॥

पद १०४. ( राग असावरी. )

कहीं देखेरी घनश्यामा ॥ मोरें मुकुट पीतांबर सोहै कुंडल झलकै  
काना । सांवरि मूरत पर तिलक विराजै तिससों लगे मोरें प्राना ॥  
बरसाने सौंचली गुजरिया नंद गामको जाना ॥ आगे केशो धेनु चराधे  
लगे प्रेमके बाना ॥ सागर सूख कमल मुरझाना हंसा कियो पयाना ।  
भौरा रह गये प्रीतिके धोखे फेर मिलनको जाना ॥ वृन्दावनकी कुंज  
गलीमें नूपुर रुनझुन लाना ॥ मीरावाई को दरशन दीजो ब्रज तज  
अनत न जाना ॥

पद १०५. ( राग असावरी. )

कृपा कर दरशन दीजो हरी । नित प्रति ठाढी अपने द्वारे निरखें  
पंथ खरी ॥ छिन छिन अंतर बाहर आवां शांत न होत घरी । विरहें

अग्नि रची प्रति रोमन हा हा दग्ध करी ॥ तेरी लगन लगी मेरे  
अंतर नाहिन जात जरी । दुनीदास प्रभु तुमरे दरश बिन लोटत  
वरणि परी ॥

पद १०६. ( राग सहानो. )

धनि धनि श्रीवृंदावन धाम । जाकी महिमा वेद बखानत सब  
वेधि पूरण काम ॥ आश करत है जाकी रजकी ब्रह्मादिक सुरग्राम ।  
आडिलि लाल जहां नित विहरत रनि पति छबि अभिराम ॥ रसिक-  
नको जीवन धनकहि यत मंगल आठों याम । नारायण बिन कृपा  
युगल वर छिन न मिले विश्राम ॥

पद १०७. ( राग दादरा. )

ऐसो कब करि है मन मेरो । कर कर वा गुंजनके हरवा कुंजन  
नाहिं बसेरो ॥ ब्रजवासिनके टूक जूँठ अरु घर घर छाँछ महेपूरो ।  
भूक लगे तब मांग खाय हों गिनों न साँझ सवेरो ॥ इतनी आश  
व्यासकी पुजिये मेरो गांव न खेरो ॥

पद १०८. ( राग ब्रहार. )

वृंदावन विपिन सघन बंशीवट पुलिन रमन निधिवन कोकिलावन  
मोहन मन भावै । सेवा कुंज सुखको पुंज जहां राजत पिया प्यारी  
ललतादिक संग लिये उमग उमग गावै ॥ यमुना जल अति गंभीर  
कदमनकी जहां भीर ललित लता कुसुम भार अपने बरसावै ॥ हंस  
मोर कोकिला पपीहा जहाँ शब्द करें पशु पक्षी दास कान्हर राधा-  
कृष्ण राधाकृष्ण राधाकृष्ण गावै ॥

## श्रीहरि-भजनामृत.

पद १०९. ( राग जंगला. )

श्याम सुंदर मन मोहनी मूरत सुंदर रूप उजारी रे । चरणकमल  
पिंडुरी जघन पर सोहत कटि लचकारी रे ॥ नाभि गँभीर हृदय अति  
कोमल कृपा सिंधु वनवारी रे । भुज आजानु करन बिच बंसी लकुट  
लिये गिरिधारी रे । ग्रीव चिबुक मृदु हँसन मनोहर हौं लखि छबि  
बलि हारी रे । नाश नयन भौह अति बांकी जिन मोही व्रजनारी  
रे ॥ श्रवण कपोलन पर छूटी वे नागिनि लट बलदारी रे । भाल  
विशाल पेच शिर जूटा मुकुट झुलन सुखकारी रे ॥ युगल किशोर  
मोरपंख धारी अब क्यों सुरत बिसारी रे ॥

पद ११०. ( राग बिलावल. )

माधोजू जो जन ते बिगैरै । सुन कृपालु करुणामय कवहूँ प्रभु  
नहि चित्त धरै ॥ ज्यों शिशु जननि जठर अंतरगत शत अपराध  
करै । तऊ तनय तनु तोष पोष चित विहँसत अंक भरै ॥ यदपि  
बिद्वज जर हतन हेत कर कर कुठार पकरै । तदपि स्वभाव सुशील  
सुग्रीतल रिपु तनु ताप हरै ॥ कारण करन अनंत अजित कह  
किहि विधि चरण परै । यह कलि काल चलत नहि मोपै मूर  
शरण उबरै ॥

पद १११. ( राग भैरवी. )

जे जन शरण गये ते तारे । दीन दयालु प्रगट पुरुषोत्तम सुनिये  
नंददुलारे ॥ माला कंठ तिलक माथे दे शंख चक्र वपु धारे । जितने  
रवि छाया के कनका तितने दोष हमारे ॥ तुमरे दरश प्रताप तेज  
ते तत्क्षण ते सभ टारे । मानिकचंद प्रभु के गुण ऐसे महा पतित  
निस्तारे ॥

पद ११२. ( राग धनाश्री. )

कबहूँ नाहिं न गहर कियो । सदा स्वभाव सुलभ सुमिरण वश  
भक्तन अभय दियो ॥ गाय गोप गोपी जन कारण गिरि कर कमल  
लियो । अघ अरिष्ट केशी काली मथ दावा अनल पियो ॥ कंस वंश  
वध जरासन्ध इति गुरुसुत आन दियो । कर्पत सभा द्रुपदतनयाको  
अंबर आन छियो ॥ काकी शरण जाऊँ यदुनंदन नाहिं और वियो ।  
मूरदयास सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदु लहियो ॥

पद ११३. ( राग धनाश्री. )

अब हों नाच्यो बहुत गुपाल । काम क्रोधको पहर चोलना कंठ  
विषयकी भाल ॥ महा मोहके नूपुर बाजत निंदा शब्द रसाल ॥  
तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधिकी ताल ॥ मायाको कीट  
फटा बांध्यों लोभ तिलक दियो भाल । कोटिक कला नाच दिखराई  
जल थल सुध नहीं काल ॥ मूरदास की सबी अविद्या दूर करो  
नंदलाल ॥

पद ११४. ( राग तोड़ी. )

दीनन दुख हरन देव संतन हितकारी । अजामील गीध व्याह  
इनमें कहो कौन साध पक्षीहूँ पद पढात गणिका सीतारी ॥ ध्रुव के  
शिर छत्र देत प्रल्हादको उबार लेत भक्त हेत बांध्यों सेत लंकपुरी  
जारी । तंदुल देत रीझ जात साग पातसों अघात गिनत नाहीं जूठे  
फल खाटे मीठे खारी ॥ गजको जब ग्राह ग्रस्यो दुःशासन चीर खस्यो  
सभा बीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी । इतने हारि आय गये वचनन  
आरूढ़ भये मूरदास द्वारे ठढो आघरो भिखारी ॥

## पद ११५. ( राग टोडी. )

मोसम कौन कुटिल खल कामी । जिन तनु दियो ताहि बिसराये  
ऐसो निमकहरामी ॥ भर भर उदर विषयको धावों जैसे शूकर ग्रामी ।  
हरि जन छांड हरी विमुखनकी निशिदिन करत गुलामी ॥ पापी कौन  
बडो है मोते सब पतितन में नामी । सूर पतितकी ठौर कहां है  
सुनिये श्रीपति स्वामी ॥

## पद ११६. ( राग देश सोरठ. )

हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो ॥ समदरशी है नाम तिहारो  
चाहे तो पार करो ॥ इक नदिया इक नाले कहावत मैलो नीर  
भरो । जब मिल करके एक वर्ण भये सुरसरि नाम परो । इक  
लोहा पूजा में राख्यो इक गृह वधिक परो । पारस गुण अवगुण  
नहिं चितने कंचन करत खरो ॥ यह माया भ्रम जाल निवारो  
सूरदास सगरो ॥ अबकी वेर मोहिं पार उतारो नहिं प्रण  
जात ठरो ॥

## पद ११७. ( राग सोरठ. )

म्हाने पार उतारो जी थाने निज भक्तनकी आन । हमरे अवगुण  
नेक न चितवो अपनो ही कर जान ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह  
ब्रह्म भूल्यो पद निर्वान । अब तो शरण गही चरणनकी मत दीजो  
मोहिं जान ॥ लाख चुरासी भरमत भरमत नेक न परी पछान ।  
भवसागरमें वह्यो जात हौं रखिये श्याम सुजान ॥ हौं तो कुटिल  
अधम अपराधी नहिं सुमिच्यो तेरो नाम । नरसीके प्रभु अधम उधा-  
रन गावत वेद पुरान ॥

पद ११२. ( राग धनाश्री. )

कबहूँ नाहिं न गहर कियो । सदा स्वभाव सुलभ सुमिरण वश  
भक्तन अभय दियो ॥ गाय गोप गोपी जन कारण गिरि कर कमल  
लियो । अघ अरिष्ट केशी काली मथ दावा अनल पियो ॥ कंस वंश  
वध जरासन्ध इति गुरुसुत आन दियो । कर्पत सभा द्रुपदतनयाको  
अंबर आन छियो ॥ काकी शरण जाऊँ यदुनंदन नाहिं और वियो ।  
**मूरदया** सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदु लहियो ॥

पद ११३. ( राग धनाश्री. )

अब हों नाच्यो बहुत गुपाल । काम क्रोधको पहर चोलना कंठ  
विषयकी माल ॥ महा मोहके नूपुर बाजत निंदा शब्द रसाल ॥  
तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधिकी ताल ॥ मायाको कीट  
फटा बांध्यों लोभ तिलक दियो भाल । कोटिक कला नाच दिखराई  
जल थल सुध नहीं काल ॥ **मूरदास** की सबी अविद्या दूर करो  
नंदलाल ॥

पद ११४. ( राग तोड़ी. )

दीनन दुख हरन देव संतन हितकारी । अजामील गीध व्याह  
इनमें कहो कौन साध पक्षीहूँ पद पढात गणिका सीतारी ॥ ध्रुव के  
शिर छत्र देत प्रल्हादको उबार लेत भक्त हेत बांध्यों सेत लंकपुरी  
जारी । तंदुल देत रीझ जात साग पातसों अघात गिनत नाहीं जूठे  
फल खाटे मीठे खारी ॥ गजको जब ग्राह ग्रस्यो दुःशासन चीर खस्यो  
सभा बीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी । इतने हारि आय गये वचनन  
आरूढ़ भये **मूरदास** द्वारे ठढो आघरो भिखारी ॥



तुमरी ॥ वसन प्रभाव किये करुणानिधि सैना हार परी । सूरइयाम  
जब सिंह शरणई स्यालों को काहि डरी ॥

पद १२१. ( राग भैरवी. )

पति राखो मोरी श्याम विहारी । बनवारी गिरिधारी श्रीकृष्ण  
मुरारी ॥ शूर समूह भूषण सब बैठे भीष्म द्रोण कर्ण व्रत धारी ।  
कही नराकैं कोउ बात परस्पर इन पतितन मेरी अपत विचारी ॥  
बल विहीन पांडव सुत डोलैं भीम गदा कर सों महि डारी । रही  
न पैज प्रबल पारथकी जब से धरणी धर्मसुत हारी ॥ लाक्षागृह ते  
जरत उवाग्यो नाथ तुम्हें छोड कहिं हौं पुकारी । अब लग नाथ नाहिं  
कञ्चु ब्रिगन्यो उघरत माथ अनाथ पुकारी ॥ छूटत लाज दास दासि-  
निकी बहुरि आयका करि हो मुरारी । सूरके स्वामी वेगि दरश देव  
फिरि पछितै हौ देख उघारी ॥

पद १२२. ( राग धनाश्री. )

म्हारी सुध लीजो हो त्रिभुवन धनी । छोनी दल शिशुपाल ले  
आयो तुम अजहूँ नसुनी ॥ कुंडिनपुरको घेर लियो है गाढी विपति  
बनी । हौं हठ ठान रही अपने जिय खाय मरूंगी कनी ॥ ताके संग  
जीवत नहिं जै हौं यह निश्चय मति ठनी । थोरी से बहुती कर  
जानो और कहां को धनी ॥ विष्णुदास पर कृपा कीजिये रख  
लीजै रुकमनी ॥

पद १२३. ( राग असावरी. )

संकट काट मुरारी हमरे संकट काट मुरारी । संकटमें इक संकट  
उपज्यो अरज करै मृग नारी ॥ इक ढिग बावर जाय गडरिया इक  
ढिग श्वान विहारी ॥ इक ढिग जा अग साडी इक ढिग जा बैठ्यो

फंद कारी ॥ उलटी पवन बावरकी लागी श्वान गयो ससकारी ।  
बरनी से भुजंग जो निकस्यो तिन डस्यो फंद कारी ॥ नाचत कूदत  
हरनी निकसी भली करी गिरिधारी । मूरदास प्रभु तुमरे दग्नको  
चरण कमल बलि हारी ॥

पद १२४. ( राग असावरी. )

बंधन काट मुरारी हमरे बंधन काट मुरारी । ग्राह गजराज लडे  
जल भीतर ले गये अंबु मंझारी ॥ गजकी ढेर सुनी यदुनंदन तर्जी  
गरुड असवारी । पांचाली कारण प्रभु मेरे पग धाय्यो गिरिधारी ॥  
पद शठ खैचत निकसत नाही सकल सभा पचहारी । चरण स्पर्श  
परम पद पायो गौतम ऋषिकी नारी ॥ गणिका शबरी इन गति  
पाई बैठे विमान सिधारी ॥ सुन मुन सुयश सदा भक्तनको सुखसो  
भज्यो इक वारी । विभीचंद दर्शनको प्यासो लीजिये मुरत हमारी ॥

पद १२५. ( राग देश सोरठ. )

हरि हैं बडी बेरको ठाढो । जैसे और पतित तुम तारे तिनहीं  
में लिख काढो ॥ युग युग विरद यही चल आयो ढेर कहत हैं  
ताते । मरियत लाज पंच पतितनमें हैं घटकहो कहाने ॥ कै अब  
हार मान कर बैठो कै कर विरद सही । मूर पतित जो झूठ कहत  
है देखो खोल बही ॥

पद १२६. ( राग बडहंम. )

अपने संग रलाई बे मैनु अपने संग रलाई ॥ राह पवां तां थाडी  
बेढे बेले लखां बताई ॥ चीते बाघे कौडल हारे भखर करन अदाई ॥  
भार तेरे जागत्तर चढ्या वेडा पार लंघाई ॥ हौल दिले दा थरई ॥  
कंबे शबदे पार लंघाई ॥ पहलां नेह लगायासी ऐवें आपे चाई चाहें

मैं लाया के तुध लाया सी अपनी ओर निभाई ॥ जे कर आये है  
 लड लाया तीवें गले लगाई ॥ बुल्लाशाह इहाना मुखडा घूंघट  
 खोल दिखाही ॥

पद १२७. ( राग सोरठ. )

हरिकी गति नहिं कोऊ जानै । योगी यती तपी पचहारे अरु  
 बहु लोग सयाने ॥ छिनमें राव रंकको करहीं राव रंक कर डारे ।  
 रीते भरै भरे दरकावे यह ताको व्यवहारे ॥ अपनी माया आप पसारे  
 आपै देखनहारा । नाना रूप धरै बहु रंगी सबसे रहत नियारा ।  
 अमित अपार अलक्ष निरंजन जिन सब जग भरमाया ॥ सकल  
 भरम तज नानक प्राणी चरण ताहि चित लाया ॥

पद १२८. ( राग तोडी. )

तुमबिन श्रीकृष्ण देव और कोन मेरो । कई अनेक ऐरावत ऐसो  
 बल मेरो ॥ मैं तो अभिमानी नाम जान्यो नहिं तेरो । भ्रमत भ्रमत  
 व्यास लगी चाह्यो चित मेरो ॥ सभी कुटुंब छोड नाथ सागर पद  
 गेरो । जलमें पग बोरतही आन ग्राह घेरो ॥ मैं तो बल हीन नाथ  
 बाहि बल घनेरो । मात पिता भाई बंधु कुटुंब तो घनेरो ॥ दशो  
 दिशा हेरहर शरण गह्यो तेरो । के ते गज ग्राह फंद अतुलित बल  
 श्रीमुकुंद काटो भव फंद प्रभू जरा न जर फेरो ॥ डूबत गजराज  
 जान टेरेत श्रीकृष्ण नाम दीनबंधु दीनानाथ बिरद जात तेरो । लडत  
 लडत देर भई आयो अंत मेरो ॥ जब लग मैं जीवों नाथ जपों नाम  
 तेरो । गोपीनाथ मदन मोहन करुणा कर हेरो ॥ सूरदास गरुड छोड  
 कर दिये निबेरो ॥

पद १२९. ( राग धनाश्री. )

नाथ मोहिं अबकी वेर उबारो । तुम नाथनके नाथ स्वामी दात  
नाम तिहारो ॥ करमहीन जन्मको अंधो मोते कौन नकारो । तीन  
लोकके तुम प्रतिपालक मैं तो दास तिहारो ॥ तारी जात कुजात  
प्रभूजी मोपर कृपा धारो । पतितनमें इक नायक कहिये नीचनमे  
सरदारो ॥ कोटि पापि इक पासंग मेरे नरक कियो हठतारो ॥ मौके  
ठौर नहीं अब कोऊ अपनो विरद सम्हारो । भुद्र पतित तुम तारे  
रमापति अब न करो जिय गारो ॥ मूरदास सांचो तब माने जे  
होय मम निस्तारो ॥

पद १३०. ( राग सोरठ. )

मालक कुल आलम केहो तुम सांचे श्रीभगवान । स्थावर जंगम  
पानी पावक धरनी बीच समान ॥ सममें जलवा तेरा देखा कुदरतके  
कुरबान । सुदामाके दरिद्र खोये पांडे की पहचान ॥ दो मृदा तंदु-  
लकी चाबी बखशे दो जहान । भारत में अर्जुनकी खातर आप भये  
रथवान ॥ उसने अपनी कुलको देखा छुट गये तीर कमान । ना  
कोइ मारे ना कोइ मरता तेरो ही अज्ञान ॥ यह तो चेतन अचल  
अमर है यह गीताको ज्ञान । मुझ आजज पर कृपा कीजे बंद  
अपना जान ॥ मीर माथों मैं शरण तिहारी लागे चरणन ध्यान ॥

पद १३१. ( राग कलिंगडा. )

माधव गति तेरी ना जानी ॥ मारन कारन चली पूतना स्तन  
विष लपटानी ॥ ताको गति यशुमतिकी दीनी सो वैकुण्ठ सिधानी ॥  
लख गउअनको दान करत है राजा नृगसों दानी । ताको मुख किर-

लेका दीना पाछे कूप पठानी ॥ बलि राजा स्वर्ग धामकी खातर रचे  
 यज्ञ बहु दानी ॥ सो राजा पाताल पठायो चौकी ताकी मानी ॥ बड़े  
 बड़े राज भूपनकी बेटी तिनको योग दहानी । कुब्जा मालन कंसकी  
 चोरी सों कीनी पटरानी । पांचो पांडव अधिक सनेही सोहि म अचल  
 गिरानी ॥ दुर्योधन राजा बड़ा अभिमानी ताकी मुक्ति निशानी ॥  
 शेष नागको नेता कीनो पर्वत कियो मथानी । चौदा रत्न मथन  
 कर काढे तब लक्ष्मी घर आनी ॥ जैसी जाकी मनोकामना  
 तैसी कर दिखलानी ॥ **सूरदास** आनंद मगन भयो प्रेम भक्ति  
 मन मानी ॥

पद १३२. ( राग धनार्थी. )

अधि गति गति जानी न परै । मन वच अधम अगाध अगोचर  
 किहि विधि बुधि सचैरै ॥ अति प्रचंड पौरुषसो मातो के हरि भूख  
 भरै । तज उद्यम अकाश कर बैठयो अजगर उदर भरै ॥ कबहुंक  
 नृप बूडत पानी में कबहुंक शिला तरै । बागरसे सागर कर राखे  
 चहुं दिशि नीर भरै ॥ पाहन बीच कमल विकसाहीं जल में अगिन  
 जरै । राजा रंक रंक ते राजा ले शिर छत्र धरै ॥ **सूर** पतित तर  
 जाय छिनक में जो प्रभु टेक करै ॥

पद १३३. ( राग अडाणा. )

अपने विरदकी लाज विचारो । सभ घटके तुम अंतर्धामी भव-  
 सागर ते पार उतारो ॥ गुण औगुण यह कछु न मानो ज्यों जानो  
 ल्यों पतित उधारो । **जानकीदास** प्रभु शरण तुम्हारी आवागमनका  
 दोष निवारो ॥

पद १३४. ( राग बिभास. )

और कोइ समझो तो समझो हमको एती समझ भली है ॥ ठाकुर  
नंद किशोर हमारे ठकुरायन वृषभानु लली है ॥ सुवल आदि ले सखा  
श्यामके राधासंग ललिता जो अली है । नितको लाड चाप मेवा  
मुखभाग बेलि बढ सुफल फली है ॥ वृंदावन बीथिन यमुना तट  
वेहर न ब्रज रज रंग रली है । कहै भगवान हित रामराय प्रभु समेत  
इनकी कृपा बली है ॥

पद १३५. ( राग जंगला )

सांवरो जग तारन आयो । निशिदिन जाको वेद रटत है सुर  
नर पार न पायो ॥ मथुरा में हरि जन्म लिया है गोकुल जाय बसायो ।  
गाल यशुमतिको कहायो ॥ भानु सुता में कूदि परे हैं विपधर जाय  
जगायो । फणि पति लै पाताल पठायो तीन लोक यश गायो ॥ मनो  
मेघुला झुक आयो ॥ भारत में प्रण भीषम राख्यो अर्जुन रथमें  
रहायो । गीता ज्ञान दया कर दीनो रूप विराट दिखायो ॥ भर्म  
इनको जो मिठायो ॥ वृंदावन में रास रचो है गोपी ग्वाल नचायो ।  
सूरदास यह प्रेमको झगरो हरप निरख कर गायो । बहुरि इतना  
मुख पायो ॥

पद १३६. ( दोहा. )

चार बीस अवतार धर, जनकी करी सहाय । रामकृष्ण पूरण भये,  
हिमा कही न जाय ॥ चौपाई ॥ नेति नेति कह वेद पुकारैं । सो  
पधरन पर मुरली धारैं ॥ जाको ब्रह्मादिक मिल ध्यावहिं । ताहि पूत  
नहि नंद कुलावहिं ॥ शिव सनकादिक अंत न पावैं । सो सखियन  
ग रास रचावैं ॥ सकल लोकमें आप पुजावैं । सो मोहन ब्रजराज

कहावैं ॥ निरंकार निर्भय निरवाना । कारण संत धरे तिन जाना ।  
निर्गुण सगुण भेद ना कोई । आदि अंत मधि एकै सोई ॥ दोहा ॥  
योगी पावै योगसों; ज्ञानी लहै विचार ॥ नानक पावै भक्तिसों-  
जाको प्रेम अधार ॥

### पद १३७ ( राग सोरठ )

जानत प्रीति रीति यदुराई । कोअस जग मतिमंद मनुज जो भज  
तन सकल बिहाई ॥ कनक भवन में रुक्मिणिके संग राजत सब  
सुख छाई । रंक दीन लखि मीत सुदामहिं धाय लियो उर लाई ॥  
यदुकुल कौरव कुल पांडव कुल जाहिं जाहिं भई सगाई ॥ तहिं तहिं  
ब्रजवासिनकी बातें वर्णत वदन सुखाई ॥ छपन विधि व्यंजन दुर्यो-  
धन राख्यो सदन बनाई । सो तजि विदुर साग भोजन किय बहुल  
सगाह मिठाई ॥ सुर दुर्लभ यदुकुल विलास वर प्रभुता प्रभु बिसराई ।  
श्रीरघुराज भली भारत में पारथ सारथि आई ॥

### पद १३८. ( राग देश. )

हे अच्युत हे पारब्रह्म अविनाशी अघनाश । हे पूरण हे सर्व में  
दुखभंजन गुण तास ॥ हे संगी हे निरंकार हे निर्गुण सब टेक । हे  
गोविंद हे गुणनिधान जाके सदा विवेक ॥ हे अपरंपर हर हरे हैं  
भी होवन हार । हे संतनके सदा संग निराधार आधार ॥ हे ठाकुर  
हैं दासरो में निर्गुण गुण नहीं कोय । नानक दीजै नाम दान राखै  
हिये परोय ॥

### छंद १३९.

श्रीकृष्णजीके कमल नेत्र कटि पीतांबर अधर मुरली गिरिधरं ॥  
मुकुट कुंडल करल कुटिया सांवरे राधे वरं ॥ कूल यमुना धेनु आगे

सकल गोपिन मन हरं । पीत वस्त्र गरुड वाहन चरण नित सुख  
सागरं ॥ करत केलि कलोल निशिदिन कुंज भवन उजागरं । अजर  
अमर अडोल निश्चल पुरुषोत्तम अपरापरं ॥ गो गीनाथ गुपाल गिरि-  
धर कंस हरनाकुश हरं । गल फूल माल विशाल लोचन अधिक सुंदर  
केशवं । बंसीधर वसुदेव छैया बलि छल्यो हरि वामनं । जल डूबते  
गज राख लीनो लंक छेदो रावनं ॥ सप्त द्वीप नौखंड चौदा भुवन  
कीने इक पलं । द्रौपदीकी लाज राखी कहां लौ उपमा करं ॥ दीना-  
नाथ दयालु पूरण करुणामय करुणाकरं । कवि दत्तदास विलास  
निशिदिन नाम जपत नित नागरं ॥

पद १४०. ( राग गुर्जरी. )

श्रित कमला कुचमंडल धृत कुंडल ए ॥ कलित ललित वनमाल  
जय जय देव हरे ॥ दिनमाणि मंडल मंडन भवखंडन ए ॥ मुनिजन  
मानस हंस जय० ॥ कालियविपधर गंजन जनरंजन ए ॥ यदुकुल  
नलिन दिनेश जय जय० ॥ मधुमुरनरकविनाशन गरुडासन ए ॥  
सुरकुल केलिनिधान जय जय० ॥ अमल कमलदललोचन भव-  
मोचन ए ॥ त्रिभुवन भवननिधान जय जय० ॥ जनकसुताकृत  
भूषण जित दूषण ए ॥ समरशयित दशकंठ जय जय० ॥ अभिनव  
जलधर सुंदर धृतमंदर ए ॥ श्रीमुख चंद्रचकोर जय जय० ॥ तव  
चरणे प्रणतावय मिति संभावण ए ॥ कुरुकुशलं प्रणतेषु जय जय० ॥  
श्रीजयदेव कवेरिदं कुरुते मुदं मंगलमुज्ज्वल गीत जय जय० ॥

पद १४१. ( राग सोरठ. )

टेर सुनो ब्रजराज दुलारे । दीन मलिन हीन शुभ गुणसों आय  
पयो हूं द्वार तिहारे ॥ काम क्रोध अति कपट लोभ मद सोइ माने



निज प्रीतम प्यारे । भ्रमत रझो इन संग विषयन में तो पद कमलन  
में उरधारे ॥ कौन कुकर्म कियो नहिं मैंने जो गये भूल सो लियं  
उधारे । यहां लौं खेप भरी रचपचके चकित रहे लखिके बन जारे ॥  
अब तो एक बार कहो हंसके आजहि सों तुम भये हमारे । याही  
कृपा ते नारायणकी वेगि लगेगी नाव किनारे ॥

पद १४२. ( राग मल्हार. )

हम भक्तनके भक्त हमारे । सुन अर्जुन प्रतिज्ञा मोरी यह व्रत टरत  
न टारे । भक्त न काज लाज हिय धरके पांय पियादे धाये । जहं  
जहं भीर परी भक्तनको तहं तहं होत सहाये ॥ जो भक्तनसों वैर करत  
है सो निज वैरी मेरो ॥ देख विचार भक्तहित कारण हांकत हों रथ  
तेरो ॥ जीतों जीत भक्त अपनेकी हार हार विचारों । सूरश्याम जो  
भक्त विरोधी चक्र सुदर्शन मारों ॥

पद १४३. ( राग विहाग. )

ऊधो चलो विदुर घर जैये । दुर्योधनके कहां काज जहं आदर  
भावन पैये ॥ गुरुमुख नहीं बडो अभिमानी कापर सेवकरहिये । टूटी  
छत मेघ जल बरसै टूटो पलंग बिछैये ॥ चरण धोय चरणोदक  
लीनो त्रिया कहै प्रभु ऐये । सकुचत वदन फिरत छिपाये भोजन काह  
मंगैये ॥ तुम तो तीन लोकके ठाकूर तुमसे कहा दुरैये । हम तो प्रेम  
प्रीतिके ग्राहक भाजी साग चखैये ॥ सूरदास प्रभु भक्तनके वश  
भक्तन प्रेम बढैये ॥

पद १४४. ( राग जंगला. )

जौ मैं हरी न शस्त्र गहाऊं । तो लाजों गंगा जननीको सतनु  
सुत न कहाऊं ॥ शर धनु तोड महारथ माहं कपिध्वज सहित

गिराऊं । पांडव सैन समेत सारथी शोणित सिंधु बहाऊं ॥ जीवों तो यश लेव जगतमें जीत निशान फिराऊं । मरों तो मंदिर भेदी भानु को सुरपुर जाय बसाऊं ॥ इतनी शपथ करौं प्रभु तुमरी क्षत्रिय गति ना पाऊं । **सूरश्याम** रण विजय सखाको जियत न पीठ दिखाऊं ॥

पद १४५. ( राग बसंत. )

नहीं छोड़ूं रे बाबा राम नाम । मेरो और पढ़न सों नहीं काम ॥ प्रल्हाद पठाये पढ़न शाल । संग सखा बहु लिये बाल ॥ मोको कहा पढ़ावत आल जाल । मेरी पटिया पै लिख देउ श्रीगोपाल ॥ यह पंडे-मर्का कब्यो जाय । प्रल्हाद बुलाये वेग धाय ॥ तू राम कहनकी छोड़ जान । तुझे तुरत छुड़ाऊं कब्यो मान ॥ मोको कहा मतावां बार बार । प्रभु जल थल नभ कीने पदार ॥ इक राम न छोड़ूं गुरुहि-गार । मोहिं घाल जार चाहे मार डार ॥ काढ खड्ग कोप्यो रिसाय । तुझे राखन हारो मोहिं ब्रताय ॥ प्रभु खंभसे निकमे हां विस्तार । हरनाकुश छेयो नख विदार ॥ श्री परम पुरुष देवादि देव । भक्त हेतु नरसिंह भेव ॥ कह कवीर कोउ लखे न पार । प्रल्हाद उधारे अमित बार ॥

पद १४६. ( राग मारंग. )

हरि हरि हरि सुमिरण करो ॥ हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि की कथा होत है जहां । गंगादू चल आवैं तहां ॥ यमुना सिंधु सर-स्वति आवैं । गोदावरी विलंब न लावैं ॥ सर्व तीर्थ को बासो तहां । **सूर** हरिकथा होत है जहां ॥

पद १४७. ( राग दादरा. )

जगमें देखत हूं सब चोर । प्रथमे चोर जोर इंदिन वश महा

निज प्रीतम प्यारे । भ्रमत रझो इन संग विषयन में तो पद कमलन  
में उरधारे ॥ कौन कुकर्म कियो नहिं मैंने जो गये भूल सो लियं  
उधारे । यहां लौं खेप भरी रचपचके चकित रहे लखिके बन जारे ॥  
अब तो एक बार कहो हंसके आजहि सों तुम भये हमारे । याही  
कृपा ते नारायणकी वेगि लगेगी नाव किनारे ॥

पद १४२. ( राग मल्हार. )

हम भक्तनके भक्त हमारे । सुन अर्जुन प्रतिज्ञा मोरी यह व्रत टरत  
न टारे । भक्त न काज लाज हिय धरके पांय पियादे धाये । जहं  
जहं भीर परी भक्तनको तहं तहं होत सहाये ॥ जो भक्तनसों वैर करत  
है सो निज वैरी मेरो ॥ देख विचार भक्तहित कारण हांकत हों रथ  
तेरो ॥ जीतों जीत भक्त अपनेकी हार हार विचारों । सूरश्याम जो  
भक्त विरोधी चक्र सुदर्शन मारों ॥

पद १४३. ( राग विहाग. )

ऊधो चलो विदुर घर जैये । दुर्योधनके कहां काज जहं आदर  
भावन पैये ॥ गुरुमुख नहीं बडो अभिमानी कापर सेवकरहिये । टूटी  
छत मेघ जल बरसै टूटो पलंग बिछैये ॥ चरण धोय चरणोदक  
लीनो त्रिया कहै प्रभु ऐये । सकुचत वदन फिरत छिपाये भोजन काह  
मंगैये ॥ तुम तो तीन लोकके ठाकूर तुमसे कहा दुरैये । हम तो प्रेम  
प्रीतिके ग्राहक भाजी साग चखैये ॥ सूरदास प्रभु भक्तनके वश  
भक्तन प्रेम बढैये ॥

पद १४४. ( राग जंगला. )

जौ मैं हरी न शस्त्र गहाऊं । तो लाजों गंगा जननीको सतनु  
सुत न कहाऊं ॥ शर धनु तोड महारथ माखं कपिध्वज सहित

बन्यो अधिकैया । चतुर भुज प्रभु गिरिधर न लालको व्याखू करा-  
वत लेत बलैया ॥

पद १५१. ( राग नट. )

हरिकी लीला कहत न आवै । कोटि ब्रह्मांड छिनहि में नाशै  
छिनही में उपजावै ॥ बालक वच्छ ब्रह्म हर लैगयो ताको गर्व नशायै ॥  
ऐसो पुरुषारथ सुन यशुमति खीजत पुनि समझायै ॥ शिव सनका-  
दिक अंत न पावै भक्तवच्छल कहवायै । सुरदास प्रभु गोकुल में सो  
घर घर गाय चरायै ॥

पद १५२. ( राग वसंत. )

श्री राधे देडारोना बांसुरी मोरी । जिस बंसी में मोरे प्राण बसत  
हैं सो बंसी गई चोरी ॥ सोनेकी नाहीं कान्हा रूपेकी नाहीं हरे हरे  
बांनकी पोरी । काहेसे गाऊं राधे काहेसे बजाऊं काहेसे लाऊं  
गडआं घेरी । मुखसे गाओ प्यारे तालमे बजाओ लकुटीसे लाओ  
गैयां घेरी । चंद्र सरखी भज बालकृष्ण छवि हरि चरणनकी चेरी ॥

पद १५३. ( राग विभास. )

जै भगीरथनंदनी मुनिचितचकोर चंदनी नर नाग विबुध  
चंदनी जै जन्हुबालिका । विष्णुपंदसरोजजासि ईश शशिवर  
विभासि त्रिपथगासि पुण्यराशि पाप छालिका ॥ विमल विपुल ब्रह्मसि  
वारि शीतल त्रयताप हारि भंवर वर विमंग तर तरंगमालिका ।  
पुर जन पूजोपहार शोभित शशि धौल धार भँजन भवभार भक्त  
कल्प थालिका ॥ निज तट बासी विहंग जल थल चर पशु पतंग  
कीट जटिल तापसि सभ सर्स पालिका । तुलसी तब तीर तीर  
सुमिरत रघुवंशवीर विचरत मति देह मोह महिपकालिका ॥

पद १५४. ( राग काफ़ी. )

धन धन धन मात गंग चाहत मुनि जन प्रसंग प्रगटी रघुनाथ  
चरन करन सुख विहारी । दीनी विधि बूंद डार अरि अनंग शीश  
धार आई मृत मध्य लोक संतनको प्यारी ॥ पर्वत द्रुम लता तोर  
स्वर्ग औ पताल फोर भागीरथ करन धार सगरतनय तारी ।  
अमित वारि अति उत्तंग चाहत अति रूप रंग दरश परश मज्जन  
कर पाप पुंज हारी ॥ माता मैं यँचों तोहि रामभक्ति देहु मोहि शरण  
गही तुलसिदास दीन हो पुकारी ॥

पद १५५. ( राग त्रिभास. )

भोर भयो जागो रघुनंदन । गत व्यलीक भक्त न उर चंदन ॥  
शशिकर हीन छीन द्युति तारे । तमचर मुखर सुनो मेरे प्यारे ॥  
विकसत कंज कुमुद विलखाने । लै पराग रस मधुप उडाने ॥ अनुज  
सखा सब बोलन आये । वंदिन अति पुनीत गुण गाये ॥ मन भाव  
तो कलेऊ कीजै ॥ तुलसिदासका जूठन दीजै ॥

पद १५६. ( राग असावरी. )

सखीरी मुनि संग बालक काके । रतनारे नयना जाके । रवि  
शशि कोटि वदनकी शोभा श्याम गौर तनु जाके । राम लषण  
कौसल्या जाये दशरथ नाम पिताके ॥ ऋषिको यज्ञ संपूर्ण करके अब  
आये राजाके । आपदा सबकी हरी रामने कारज करन सिया के ॥  
कीटमुकुट मकराकृत कुंडल धनुषबाण कर जाके । गौतमऋषिकी  
नारि अहिल्या तारी है चरण छुवाके ॥ सब सखियां मिल सियाके  
स्वयंवर पूजा करत उमाके । तुलसिदास सेवक रघुनंदन लेख  
लिखे विधनाके ॥

बन्यो अधिकैया । चतुर भुज प्रभु गिरिधर न लालको व्याखू करा-  
वत लेत बलैया ॥

पद १५१. ( राग नट. )

हरिकी लीला कहत न आवै । कोटि ब्रह्मांड छिनहि में नाशै  
छिनही में उपजावै ॥ बालक वच्छ ब्रह्म हर लैगयो ताको गर्व नशायै ॥  
ऐसो पुरुषारथ सुन यशुमति खीजत पुनि समझायै ॥ शिव सनका-  
दिक अंत न पावै भक्तवच्छल कहवायै । सुरदास प्रभु गोकुल में सो  
घर घर गाय चरायै ॥

पद १५२. ( राग वसंत. )

श्री राधे देडारोना बांसुरी मोरी । जिस बंसी में मोरे प्राण बसत  
हैं सो बंसी गई चोरी ॥ सोनेकी नाहीं कान्हा रूपेकी नाहीं हरे हरे  
बांनकी पोरी । काहेसे गाऊं राधे काहेसे बजाऊं काहेसे लाऊं  
गडआं घेरी । मुखसे गाओ प्यारे तालमे बजाओ लकुटीसे लाओ  
गैयां घेरी । चंद्र सरखी भज बालकृष्ण छवि हरि चरणनकी चेरी ॥

पद १५३. ( राग विभास. )

जै भगीरथनंदनी मुनिचितचकोर चंदनी नर नाग विबुध  
चंदनी जै जन्हुबालिका । विष्णुपंदसरोजजासि ईश शशिवर  
विभासि त्रिपथगासि पुण्यराशि पाप छालिका ॥ विमल विपुल ब्रह्मसि  
वारि शीतल त्रयताप हारि भंवर वर विमंग तर तरंगमालिका ।  
पुर जन पूजोपहार शोभित शशि घौल धार भँजन भवभार भक्त  
कल्प थालिका ॥ निज तट बासी विहंग जल थल चर पशु पतंग  
कीट जटिल तापसि सभ सर्स पालिका । तुलसी तब तीर तीर  
सुमिरत रघुवंशवीर विचरत मति देह मोह महिपकालिका ॥

सुमित्रानंदन भवे कुटुंब ते न्यारे । तुलसिदास प्रभु दूर गमन  
कियो चलत नयन जल डारे ॥

पद १६० ( राग देश )

बिनारघुनाथके देखे नहिं दिलको करारी है । हमारी मात की  
करनी सकल दुनियासों न्यारी है ॥ विमुख जिन राम सों कीना  
ऐसी जननी हमारी है ॥ लगी रघुवंश में अगनी अवध सगरी  
उजारी है ॥ भरत शिर लोट धरणी पै यही करता पुकारी है ।  
सुना जब तात का मरना मनो बरछीसी मारी है ॥ परा व्याकुल  
हुआ बेसुध दगनसे नीर जारी है ॥ धरूं मैं ध्यान सूरत का मुझे  
तृष्णा जो भारी है ॥ परूं रघुनाथके पाऊं यही तुलसी विचारी है ॥

पद १६१ ( राग बिहाग )

शरण गहु शरण गहु शरण गहु रावणा सेतुजल बंध रघुवीर  
आये । अष्टदश पदम योधा जुरे अति बली उडत पग धूर रवि  
गगन छाये ॥ कोटि योधा जुरे जनकके नगरमें धनुष ना सक्यो  
उठाय कोई । तोय्यो धनुष गज नाल तोरत जैसे जान लीजो राजा  
राम सोई ॥ वालि सों शूरमा योधा अतुलित बली ताहि सामर्थ्य  
ना जगत माहीं । लग्यो जब बाण रघुनाथके हाथको गिरि पय्यो  
धरणि फिर उठयो नाहीं ॥ लै मिलो जानकी बात आसान की वेग  
धावो नहीं विलम की जै । सूरस्वामी रंगलाल लय लाय लै आयो  
है काल बचाय लीजै ॥

पद १६२ ( राग कलिगडा )

जयजयजय रघुवंश दुलारे । सुखसागर रविवंश उजागर लीला  
ललित मनोहर प्यारे ॥ यज्ञ सुधारन असुर सैहारन गौतम नारि

उधारन हारे । जनक स्वयंवर पावन कीनो भृगुपति गर्व निवारण  
हारे ॥ पिता वचन मुन राज काज तज अनुज सहित वनको पग  
धारे । बालि वधन वैदेही शोधन लंकापति भुज भंजन हारे ॥ जग-  
नायक प्रभु संत सहायक गावत वेदपुराण पुकार । रामसखे रघु-  
नाथ रूप लख युगयुग येही विरद तिहारे ॥

पद १६३ ( राग कल्याण )

पूछत ग्राम वधू मृदुबानी । गौरश्याम अभिराम सुभग तनु यह  
तुमरेको लगत सयानी ॥ शील स्वभाव लपण लघुदेवर कर शरधनुष  
समंजल पानी । पियतन चितै दृष्टि नीचेकर सखिन विलोकि भिया  
मुसकानी ॥ को तुम कौन देशते आये जिहि पुर बसो समगल  
खानी । चलत पियादे पाय व्रान विन राजकुंवारी किमि करो बखानी ॥  
यह दोउ कुंवर अवधपतिके सुत मैं विदेह तनया जग जानी । वान  
कुमति उरबसी सवति पन राज समय वन दीनो रानी ॥ सियके  
वचन सुनि सखी दुखित भई पल छिन मनो विरह गलानी । एक  
कहै भल भूपन कीनो वन नहिं दीनो कीनो हानी ॥ राम लपण  
सिय पंथ कथा सुनि जाके हृदय बसी छिन आनी । सो भवसिंधु  
तरै गोपद जिमि मन तुलसी यह करत बखानी ॥

पद १६४ ( राग देश )

हैंस पूछैं जनकपुरकी नारी नाथ कैसे गजके फंद लुड़ाये ।  
तिहारो यही अचरज मन भाये ॥ गज औ ग्राह लैं जल भीतर  
दारुण द्वंद्व मचाये । गजकी टेर सुनी रघुनंदन गरुड छोड उठ  
धाये ॥ भिलनीके बेर सुदामाके तंडुल रुचि रुचि भोग लगाये ।  
दुर्योधन की भेवा त्यागो साग विदुर घर पाये ॥ इंद्रने कोप कियो



ब्रज ऊपर छिनमें बारि बहाये । गोवर्धन स्वामी नख पर लीनो इंद्रको  
मान घटाये ॥ अर्जुनके स्वारथ रथ हांक्यो महाभारत में गाये । भारत  
में भरुहीके अंडा घंटा तोर बचाये । ले प्रल्हाद खंभसे बांध्यो राजन  
त्रास दिखाये । जन अपनेकी प्रतिज्ञा राखी नरसिंहरूप बनाये ॥  
छोरे न छुटे सियाजीको कँगना कैसे चाप चढ़ाये । कोमल गात अंग  
अति नीके देखत मनहिं लुभाये ॥ जहं जहं भीर परी संतन पर  
तहैं तहैं होत सहाये । तुलसिदास सेवक रघुनंदन आनंद मंगल गाये ॥

पद १६५ ( राग कानडा )

ठुमकि चलत रामचंद्र बाजत पैजनियां । किलकत उठि चलत  
धाय परत भूमि लटपटाय धाय मोद गोद लेत दशरथकी रनियां ॥  
अंचल रज अंगझार विविध भांति सों दुलार तनमन धन वारिदेत  
कहत मृदुवचनियां । मोदक मेवा रसाल मनभावत लेउ लाल और  
लेउ रुचिर पान कंचन रुनझुनियां ॥ आनंद सज कंबु कंठ ग्रीवा  
अति रुचिर रेख काच कुटिल कमलवदन मंद सों हँसनियां । विद्रुम  
सों अधर ललित बोलत प्रिय मधुर वचन नासा अति सुभगबीच  
लटकत लटकनियां ॥ अद्भुत छवि अति अपार को कवि नहिं वरणे  
पार कह न शके शेष जिहिं सहस्र तोरसनियां । तुलसिदास रूपरंग  
परतरको दिये कहा रघुवरकी छवि समान रघुवर छवि बनियां ॥

पद १६६ ( राग गौरी )

छबीले बंसीनेक बजावो । बलि बलि जात सखा यह कह कह  
अधर सुधारस प्यावो ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ वृंदावन दुर्लभ प्रेमतारंग । ना  
जानिये बहुरे कब हैं हैं श्याम तुम्हारे संग ॥ विनति करत सुबल  
श्रीदामा सुनो श्याम दै कान । या यशको सनकादि शुकादिक करत

अमर मुनि ध्यान ॥ कब पुनिगोप वेष ब्रज धर हो फिरहो सुरभिन  
साथ । कब तुम छाक छीनके खैहो श्रीगोकुलके नाथ ॥ अपनी अपनी  
कांथ कमरिया ग्वालन दर्ई डसाई । सोह दिवाय नंद बाबाकी रहे सकल  
गहि पाई ॥ सुनसुन दीनगिरा मुरलीधर चितये मुख मुसकाई ।  
गुण गंभीर गोपाल मुरलिका लीनी कंठ लगाई ॥ धरंकरवेणु अधर  
मनमोहन कियो मधुर धुन गान । मोहै सकल जीव जल थलके सुन  
वारें तनप्राण ॥ चपल नयन भुकुटी नासा पुट मृन सुंदर मुख बैन ।  
मानो निरत भाव दिखावत गति लिय नायक मैन ॥ चमकत मोर  
चंद्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल । मानो कमल कोमल कोशरस  
चाखन उड आये अलिमाल ॥ कुंडल लोल कपोलन झलकत ऐमी  
शोभा देत । मानो सुधा सिंधु मे क्रीडत मकर पानके हेत ॥ उप  
जावत गावत गति सुंदर अनाघातके ताल । रम सभ दिपो मदन  
मोहनको प्रेम हर्ष सभ ग्वाल ॥ लोलित वैजंती चरणन पर श्वासा  
पवन झकोर । मानो सुधा पियन अहि आयो ब्रह्मकमंडलु फोर ॥  
डोलत लता मंद मारुत गति सुन सुंदर मुख बैन । खग मृग मीन  
अधीन भये सब कियो यमुन जल सैन ॥ झलमलात भ्रुकुटी पद  
रेखा सुभग सांवरे गात । मनु पटवधू एक रथ बैठी उदय कियो अध-  
रात ॥ बांके चरणकमल भुज बांके अवलोकन जो अनूप । मानो  
कल्पतरोवर बिरवा आन रच्यो सुर भूप ॥ अतिमुख दियो गोपाल-  
सवनको सुखदायक जियजान । **सूरदास** चरणन रज मांगत निरखत  
रूप निधान ॥

छंद १६७

पारब्रह्म परमेश्वर अविगत भुवन चतुर्दश नाथ हरी । जब जब .

भीर परी संतन पै प्रकट होय प्रतिपाल करी ॥ आदि अंत सबके  
 तुम स्वामी ब्रह्मादिक हैं अनुगामी । कृष्ण नमामि नमामि नमामी  
 दयासिंधु अंतर्यामी ॥ ज्याको ध्यान धरत योगीजन शेष जपत नित  
 नाम नये । सो भवतारण दुष्ट निवारण संतन कारण प्रगट भये ॥  
 जाको नाम सुनत यम डर्पत थरहर कांपत काल हियो । ताका  
 पकर नंदकी रानी ऊखलसों लै बांध दियो ॥ जै दुखमोचन पंकज  
 लोचन उपमा जाय न कहत बनी । जै सुखसागर सबगुण आगर  
 शोभा अंग अनंग घनी ॥ नारदको हम अति गुण मानै शाप नहीं  
 वरदान दियो । जा कारण ते प्रभू आपने दर्शन दियो सनाथ कियो ॥  
 जो हरहूँके ध्यान न आवत अपर अमर हैं किहि लेखे । सो हरि  
 प्रगट नंदके आंगन ऊखल संग बंधे देखे ॥ जिनकी पदरजको सुर-  
 तरसें अगम अगोचर दनुजारी । त्राहि त्राहि प्रणतारत भंजम जन-  
 मन रंजन सुखकारी ॥ तुमरी माया जीव भुलानो किहि विधि नाथ  
 तुहैं जाने । तुमहीं कृपा करो जब स्वामी तबहीं तुमको पहुँचाने ॥  
 हे मुकुंद मधुसूदन श्रीपति कृपानिवास कृपा कीजै । इन चरणनमें  
 सदा रहै मन यह वरदान हमैं दीजै ॥ जै केशव जै अधम उधारन  
 दयासिंधु हरि नित्य मगन । जै सुंदर ब्रजराज शशी मुख सदा बसो  
 मम हृदय गगन ॥ रसना नित तुमरे गुण गावे श्रवण कथा सुन  
 मोदभरें । करनित करें तुम्हारी सेवा नयन संतजनदरश करें ॥  
 नेम धर्म व्रत जप तप सयम योग यज्ञ आचार करें ॥ नारायण  
 बिन भक्ति न रीझो वेद संत सब साख भरें ॥

पद १६८ ( राग नट )

हैं हरि पतित पावन सुने । हैं पतित तुम पतितपावन दोउ

ब्रानक बने ॥ व्याध गणिका गज अजामिल साग्व निगमन भने ।  
औं पतित अनेक तारे जात कापैं गने ॥ जाननाम अज्ञान लीने  
जानयमपुर मने । दास तुलसी शरण आयो राखिये अपने ॥

पद १६९ ( राग देश )

रघुवर तुमको मेरी लाज । सदासदा मैं शरण तिहारी तुम बडे  
गराव निवाज ॥ पतितउधारन विरुध तिहारो श्रवणन मुनि अवाज ।  
हैं तो पतित पुरातन कहिये पार उतारो जहाज ॥ अध खंडन  
दुखमंजन जनके यही तिहारो काज । तुलसिदास पर किरपा  
कारिये भक्तिदान देहु आज ॥

पद १७० ( राग भैरव )

जाऊ कहां ताजि चरण तिहारे । काको नाम पतितपावन जग किहि  
अति दीन पिया रे ॥ कौने देव बराय विगद हित हठि हठि अधम  
उधारे । खग मृग व्याध पपाण विटप जड यमन कवन सुरतारे ॥  
देवदनुज मुनि नाग मनुज सब माया विवम विचारे । तिनके हाथ  
दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे ॥

पद १७१ ( राग वसंत )

नवल रघुनाथ नव नवल श्रीजानकी नवल ऋतु कन्त वसंत  
आई । नवल कुमुमावलि फूल चहुं दिशि रही नवल मारुन नवल  
सुगंध छाई ॥ नवल भूपण वसन पहन दोउ रंगमये नवल पिया  
सखी निरखैं सुहाई । नवल गुण रूप जोवन जडत नित नयो रतन  
हरि देत आशिष बवाई ॥

पद १७२ ( राग कलिंगडा )

हम रघुनाथ गुणनके गवैया । ताना री री ताना री री तानुम

तन नाना नाना नहिं जाने ताता थैया ॥ भैरू ध्रुपद कवित्त तलानो  
नाहिन ख्याल ग्विलैया । गीत संगीत प्रबंध त्रिबत जति इनके  
नाहिं गटैया ॥ दूम अर्थाई काल कलाउंत नाहिन मांड भवैया ।  
रतनहरी रघुनाथ भजन विन काहू सों राम रमैया ॥

### पद १७३ ( राग भैरवी )

कब दुरिहौ रघुनाथ हमारे । जैसे दुरे भक्त प्रल्हाद हिं खंभ  
फारि हिरणाक्ष संहारे ॥ जैसे दुरहे राजा बलिके देत दरश नित  
नित प्रति द्वारे । जैसे दुरहे भक्त त्रिभीषण लंका जार सो रावण  
मारे ॥ जैसे दुरहे द्रुपदसुता पै खैचत चीर दुशासन हारे । ऐमे  
दुरहो दास तुलसि पर हमसे पतित अनेकन तारे ॥

### पद १७४ ( राग जंगला )

रे मन राम भरोमो भारी । पानीपर जिन पाहन तारे और अहल्या  
तारी ॥ यमके बांधे पतित छुड़ाये ऐसे पर उपकारी । सबकी खबर  
लेत दुख सखकी अर्जुनके हितकारी ॥ तू दयालु प्रभु वेद पुकारें  
महिमा सुनी तिहारी । मिहिरदास प्रभु शरण गहे की राखो  
लाज हमारी ॥

### पद १७५ ( राग बडहंस )

जगके रुसे ते क्या भयो जाके राम हैं रखवारे हो । अब देख  
प्यारे खंभ में नरसिंह होकर अवतरे ॥ हिरण्याक्षको मारके प्रल्हाद  
रक्षा करे हो । अब देख प्यारे सभा में जह कपटके पाँसे परे ॥  
द्रौपदी को चीर बढायकै खैचत दुशासन हरे हो ॥ अब देख प्यारे  
समर में तयार दोऊदल खरे ॥ चिंगना बचे भर दूलक गज घंट

वापर परे हो । अब देख प्यारे लंकमें संकट विभीषणको परे ।  
तुलसि सराहत रामको जिन अवध मंगल भरे हो ॥

पद १७६ ( राग सोरठ )

ऐसो को उदार जग माहीं । विन सेवा जो द्रव्य दीन पर राम  
मरिस कोउ नाहीं ॥ जो गति योग विराग जतन कर नाहि पावत  
मुनि ज्ञानी । सो गति देत गीध शबरीको प्रभु न बहुत जिय जानी ।  
जो संपति दश शीश अर्प कर रावण शिव पै लीनी । सो संपदा  
विभीषणको अति सकुच सहित हरि दीनी । तुलसिदास सब भांति  
सकल सुख जो चाहत मनमेरो । तो भज राम काम सब पूरण करै  
कृपानिधि तेरो ॥

पद १७७ ( राग प्रभाती )

सांचे मनके मीता रघुवर सांचे मनके मीता । कब शबरी  
काशीको धाई कब पढ़ि आई गीता ॥ जूटे फल ताके प्रभु खाये  
नेक लाज नाहि कीता । लंका पतिको गर्व हन्यो है राज्य विभीषण  
दीता ॥ सुग्रीव सखा कियो रघुनंदन वानर किये पुनीता । मफल  
यज्ञ मुनि जनके कीले सब भूपन बल जीता ॥ भसम रमाई कहां  
अहल्या गणिका योग न लीता । तुलसिदास प्रभु शुद्ध चित्त लग्य  
सबहीं मोक्ष पद दीता ॥

पद १७८ ( राग तोड़ी )

और कौन मांगिये का मांगवो निवारि है । तुम बिना दातार  
कौन दुख दरिद्र टारि है ॥ धर्म धाम राम काम कोटि रूप रूरो ।  
साहब सब विधि सुजान दान खंड शूरो ॥ सुसमय द्वै दिन निशान

सबक द्वार बाजै । कुसमय दशरथके दानि तू गरीब निवाजै ॥ सेवा  
विन गुण विहीन दीनता सुनाये । जे जे तैं निहाल किये फूले फिरत  
पाये ॥ तुलसिदास याचक रुचि जान दान दीजिये । रामचंद्र  
चन्द्र तू चकोर मोहि कीजिये ॥

### पद १७९ ( राग सोरठ )

ऐसी मूढता या मनकी । परिहरि राम भक्ति सुरसरिता आश  
करत ओसकनकी ॥ धूम समूह निरख चातक ज्यों तृषित जान  
मति घनकी । नहिं तहं शीतलता नवारि पुनि हानि होत लोचन  
की ॥ ज्यों गच कांच विलोकि शेर जड छांह आपने तनकी । टूटत  
अति आतुर अहार वश क्षति बिसार आननकी ॥ कहं लग कहौ  
कुचल कृपानिधि जानत हो गति जनकी । तुलसिदास प्रभु हरो  
दुसह दुख लाज करो निज पनकी ॥

### पद १८० ( राग धनाश्री )

हरिजू मेरो मन हठन तजै । निशिदिन नाथ देखं शिख बहु  
विधि करत स्वभाव निजै ॥ ज्यों युवती अनुभवत प्रसव अति दारुण  
दुख उपजै । होय अनुकूल बिसार शूल सब पुनि खल पतिहिं  
भजै ॥ लोलुप भ्रमत श्रमित निशि बासर शिर पद त्रान बजै ।  
तदपि अधम विचरत तिहिं मारग अजहुं न मूढ लजै ॥ हौं हान्यो  
बहु यन विविध कर अतिशय प्रबल अजै । तुलसिदास वश होत  
तवै जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥

### पद १८१ ( राग तोड़ी )

दीनको दयालु दानि दूसरो न कोई । जाहि दीनता कहों हौं

दीन देखों सोई ॥ मुनि सुरनर नाग असुर साहिब तो घनेरे । पै  
तौ लौं जौलौं रावरे ननेक नयन फेरे ॥ त्रिभुवन तिहु काल विदित  
वदत वेद चारी । आदि अंत मध्य राम साहिबी तिहारी ॥ तोहि  
मांग मांगनो न मांगनो कहायो । सुन स्वभाव शील सुयश याचक  
जन आयो ॥ पाहन पशु विटप विहग अपने करलीने । महाराज  
दशरथ के रंक राव कीने ॥ तू गरीबको निवाज मैं गरीब तेरो ।  
बारक कहिये कृपालु तुलसिदास मेरो ॥

पद १८२ ( राग शिञ्जोटी )

मैं किहि कहौं विपति अति भारी । श्रीरघुवर दीन हितकारी ॥  
मम हृदय भवन प्रभु तोरा । तहं बसे आय बहु चोरा ॥ अति  
कठिण करैं बरजोरा । मानैं नहिं विनय निहोरा ॥ तम मोह लोभ  
हंकारा ॥ मद क्रोध बोध रिपु मारा ॥ अति करैं उपद्रव नाथा ।  
मरदैं मोहिं जानि अनाथा ॥ मैं एक अमित बटपारा । कोउ मुनै  
न मोर न पुकारा ॥ भागे हू नहिं उनारा । रघुनायक करो संभारा ॥  
कह तुलसिदास सुन रामा । छूटैं तस्कर तव धामा ॥ चिंता यह  
मोहिं अपारा अपयश ना होय तिहारा ॥

पद १८३ ( राग पिछ्छ )

भरत कपिसैं उक्तण हम नाहिं । सौ योजन मर्याद सिंधुकी कूद  
गयो छिन माहीं ॥ लंका जार सिया सुध लाये गरब नहीं मन-  
माहीं । शक्ती बाण लंग्यो लक्ष्मणके शोर भयो दल माहीं ॥ द्रोणा-  
गिरी पर्वत छै आये भोर होन नहिं पाई । अहिरावणकी भुजा  
उखारी बैठ रक्षो मठमाहीं ॥ जो पै भरत हनुमत नहीं होतेको



लावे जग माहीं । आशा भंग कभूं नहिं कीनी जहिं पढ्यो तहिं  
जाई ॥ तुलसिदास मारुतसुत महिमा प्रभु अपने मुख गाई ॥

पद १८४ ( राग जैतश्री )

ऐसी कौन प्रभुकी रीति । विरद हेतु पुनीत परीहर पामरन पर  
प्रीति ॥ गई मारन पूतना कुच कालकुट लगाय । मातकी गति  
दियो ताकि कृपालु यादवराय ॥ काम मोहित गोपिकन पर कृपा  
अतुलित कीन । जगत पिता विरंचि जिनके चरणकी रज लीन ॥  
नेमते शिशुपाल दिन प्रति देत गिन गिन गार । कियो लीन सो  
आपमें हरि राजसभा मंझार ॥ व्याध चरणहीं बाण मान्यो मूढमति  
मृग जानि । सो सदेह स्वलोक पढ्यो प्रगटकर निजवानि ॥ कौन  
तिनकी कहै जिनके सुकृत भौ अघदोय । प्रगट पातक रूप तुलसि  
शरण राखे सोय ॥

पद १८५ ( राग झिझोटी )

अस कछु समुझि परै रघुराया । विन तब कृपा दयालु दास  
हित मोहन छूटै माया । वाक्य ज्ञान अत्यंत निपुण भव पार न पावे  
कोई । निशि गृह मध्य दीपकी बातनतम निविरत नहिं होई ॥ जैसे  
कोउ इक दीन दुखित अति अशन हीन दुख पावै । चित्र कल्प-  
तरु कामधेनु गृह छिखै न विपति नशावै ॥ पटरस बहुप्रकार भोजन  
कोउ दिन अरु रैनि बखानै । विन बोले संतोष जनित सुख ग्वाय  
सोई पै जानै ॥ जबलग नहिं निज हृदय प्रकाश अरु विषय आश  
मनमाही । तुलसिदास तब लग जग भर मत सुपनेहुं सुख नाही ॥

पद १८६ ( राग देश मल्हार )

सावन घन गरजें घूम घूम । बरसत शीतल जल झूम झूम ॥  
 कायल कीर कोकिला बोलें हंस चकोर चहुं दिश डोलें नाचन वन  
 अति करत कलोलें मोर मोरनी चूम चूम ॥ कंचन को हिंडोला  
 झलके रेशम पाट मेढ माखमलके चुन चुन कली बिछौना हलके  
 कली कली दल तूम तूम ॥ चलत समीर त्रिविध पुखाई मंद मगंध  
 महा छवि छाई झुलें जनकसुता रघुगई बहु बाल झुलावें ऊम ऊम ॥  
 गावें राग रागनी भामिन दमक रही मानो छवि दामिन झुटा देत  
 नारि गजगामिन पायल बाजें छम छम छम ॥ जय जय करत सुमन  
 सुरवर्षत इंद्र निशान बजावत हर्षत दास गणेश युगल छवि निर्वृत  
 छाय रह्यो सुखरूप रूम ॥

पद १८७ ( राग अमावरी )

लाज न लागत दास कहावत । सां आचरण बिसार शोच तज  
 जो हरि तुमको भावत ॥ सकल संग तज भजत जाहि मनि जप  
 तप याग बनावत । मोसम मंद महाखल पामर कौन जतन तिहिं  
 पावत ॥ हरि निर्मल मन प्रसन हृदय असमंजस मोहिं जनावत ।  
 जिहि सर काक कंक बक शूकर क्यों मराल तहं आवत ॥ जाकी  
 शरण जाय कोविद दारुण भयताप बुझावत । तिहुं गये मद मोह  
 लोभ अति स्वर्गहिं मिटत नशावत ॥ भवसरिताको नाव संत यह  
 कह और न समुझावत । हैं तिन सों हरि परम धैर कर तुमसो भलो  
 मनावत ॥ नाहिं न और ठौर मोको ताते हठ नातो लावत । राख  
 शरण उदार चूडामणि तुलसिदास गुण गावत ॥

## पद १८८

अब तुम कब स्मरो गे राम ॥ जिवडा दो दिनका मेजवान ॥ ध्रु०  
 गरभपनोमें हात जुड़ाया । निकल हुवा बैमान ॥ अब० ॥ १ ॥  
 बालपनोमें खेल गमाया तारुनपनमों काम ॥ अब० ॥ २ ॥ हात  
 पांव जब कांपन लागे । निकल गये अवसान ॥ अब० ॥ ३ ॥  
 झुठी काया झुठी माया । अखर मोत निदान ॥ अब० ॥ ४ ॥  
 कहत कबीर सुन भाई साधु । यही घोडा यही मैदान ॥ अब० ५ ॥

## पद १८९

आपही धनक धारी प्रभुजी । आपही खेल खिलाडी है ॥ ध्रु०॥  
 तंबू तो अस्मान बनायो जमीन गलिचा भारी है ॥ चांद सुरज दो  
 मशाल बनायी । तेरी खुदरत न्यारी है ॥ आप० ॥ १ ॥ रामना-  
 मकी चौपट मांडी । तुम फांसा जग सारी है ॥ फांसा डाले डाक  
 जितावे । सारी कवन विचारी है ॥ आप० ॥ २ ॥ छुके पंजेसे  
 नरद बचावे । बाजी कढण करारी है ॥ जाकी नरद पकी घर  
 आवे । सोही सुगर खिलाडी है ॥ आप० ॥ ३ ॥ रंका तारे बंका  
 तारे । गणिका कवण विचारी है ॥ ध्रुवप्रल्हादने किसे ज्यां बैठे ।  
 आपही धानक धारी है ॥ आप०॥४॥ ज्यांके सिरपर साहेबका पंजा ।  
 बाको जगद भिकारी है ॥ कहत कबीर सुन भाई साधो । साची  
 जीत हमारी है ॥ आपही० ॥ ५ ॥

## पद १९०

अखेर मरना है मरनाहै । तुम काहेकू गुमान करता है ॥ ध्रु ॥  
 कोई मोठा राव और राना । जिने जोधपूर बंधना ॥ सो नर सोता  
 है मसाना ॥ अखेर० ॥ १ ॥ जो नर कुर कपुरे लमता ॥ जो नर

सुखपोलासन रमता ॥ सो मैं नजरे देखा जलता ॥ अखेर०  
॥ २ ॥ अरे बंदा मरना सुमजानी । देख गुरुकी निशानी ॥ अरे  
तेरी खरी जात बेमानी ॥ अखेर० ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुन रे  
भाई । तेरे तात मात ले गई ॥ ये सब झुठी जाल लगाई ॥  
अखेर० ॥ ४ ॥

### पद १९१

खेल सब पैसेका । सब कुछ बाता है पैसा ॥ ध्रु० ॥ पैसा जोरू,  
पैसा लरका । पैसा बाबा बेहेना ॥ पैसा हत्ती, घोडे पलाना । पैसा  
लगे निशाना ॥ खेल० ॥ १ ॥ पैसा देव, पैसा धरम । पैसा सब  
कुच्छ भाई ॥ पैसा राजा राज करावे । पैसा करे लड़ाई ॥ खेल० ॥  
२ ॥ पैसा हत्तीपर अबुज चढ़ावे । पैसा घोडे उरावे ॥ एकदिन  
पैसा बदल गया तो । पगमें लंगर पेरावे ॥ खेल० ॥ ३ ॥ पैसा  
गुरु पैसा चेला । पैसा भक्ति करावे ॥ कहत कबीर सुन भाई  
साधु । पैसा जीव छोरावे ॥ खेल० ॥ ४ ॥

### पद १९२

जमका अजब तडाका बे । तू क्या जाने लडका बे ॥ ध्रु० ॥  
बड़े मिजासी कठडे बैठे । तू क्या गिसाइत साजा ॥ मारझपटकर  
जम लेजावे । जैसा खबुतर वृक्षा ॥ जमका० ॥ १ ॥ नवभी मर  
गये दसभी मरगये । मरगये सहस्र अठ्याशीं ॥ तेहतिस कोटी देवता  
मरगये । पडे कालकी फांसी ॥ जमका० ॥ २ ॥ पीर मरे पैगंबर  
मरगये । मरगये जीदा जोगी ॥ जयी तपी संन्यासी मरगये ।  
मरगये हकीम रोगी ॥ जमका० ॥ ३ ॥ तीन लोकपर छत्र बिराजे

छटा कुंजबिहारी ॥ कहत कबीर सोबी मरगये । रयत कोन  
बिचारी ॥ जमका० ॥ ४ ॥

पद १९३

भलाइ करते बुराई होती तो बी भलाइ करना ॥ बालबालकी  
झडपी यारो आंग आंगसे देना ॥ ध्रु. ॥ एक पलंगपर दो बैठे एक  
जागे एक सोये ॥ अनुहातकी नौबत बाजे चोर कहाँसे आवे  
॥ १ ॥ शहर म्याने तेनी चुटा कसबू हो पुकार ॥ दस दरवाजे  
बंद रहे तब निकल गये अस्वार ॥ २ ॥ मा कोहती मेरा मेरा बाप  
कहे तेरा ॥ कहत कबीर सुन भाई साधु नहीं घर तेरा मेरा ॥ ३ ॥

पद १९४

भजो रे भैया राम गोविंद हरी ॥ ध्रु० ॥ जप तप साधन कछु  
नहीं लागत । खरचत नहीं गठरी ॥ भज० ॥ संतति संपति  
मुखके कारन । जासे भूल परी ॥ भज० ॥ कहत कबीर जिस  
मुख राम नहीं ॥ या मुख धूल परी ॥ भज० ॥

पद १९५

तूं तो राम सुमर जग लरवा दे ॥ ध्रु. ॥ चंडी भैरव सितला  
देवी । फतर पुजत वाकु पुजवा दे ॥ तूं० ॥ १ ॥ हाती चाल  
चलत गती आपनी । कुतर भुक्त वाकु भुक्वा दे ॥ तूं० ॥ २ ॥  
कोरा कागद काली शार्ई । लिखत पढत वाकु पढवा दे ॥ तूं० ॥  
कहत कबीर सुन भाई साधु । नरत पचत वाकु पचवा दे ॥ तूं० ॥

पद १९६

राम नाम तूं भजले प्यारे । काय कुं मगरूरी करता है ॥ कच्ची  
मिठीका बंगला तेरा । पाव पलकमें गिरता है ॥ ध्रु० ॥ बम्नन हो

कर पोथी बांचे । स्नान तरपन करता है ॥ सब काल सुचिल  
रहत है । यों क्या साहेब मिलता है ॥ राम. ॥ १ ॥ जोगी होकर  
जटा बढावे । हाल मसीमें रहता है ॥ दोनो हात शिरपर धरके ।  
यों क्या साहेब मिलता है ॥ २ ॥ मानभाव हो कर काले कपडे ।  
दाढी मीछी मुंडता है ॥ उलटी लकडी हातमें पकडी । यों क्या  
साहेब मिलता है ॥ राम. ॥ ३ ॥ मुछा होकर बांग पुकारे । वो क्या  
साहेब बहिरा है ॥ मुंगीके पांव में घुंगुरु बाजे ओढी अछा सुनता  
है ॥ राम. ॥ ४ ॥ जंगम होकर लिंग बांधे । घरघर फेरी फिरता  
है ॥ शंख बजाकर भिक्षा मांगे ॥ यों क्या साहेब मिलता है ॥ राम.  
॥ ५ ॥ कहत कबीर सुन भाई साधु । मनकी माला जपता है ॥  
भाव भगतिसे ध्यान धरत है ॥ उनकू साहेब मिलता है ॥ ६ ॥

### पद १९७ ( राग असावरी )

कौन जतन विनती करिये । निज आचरण विचार हार हिय-  
मान जान डरिये ॥ जिहि साधन हरि द्रवो जान जन सो हठ परि-  
हरि ये । जाते विपति जाल निशिदिन दुख तिहि पथ अनुसरिये ॥  
जानत हूं मन कर्म बचन परहित कीने तरिये । सो विपरीत देख  
परसुख विनकारण ही जरिये ॥ श्रुति पुराण सबको मत एही सत  
संग सुदृढ धरिये । निज अभिमान मोह ईर्ष्या वश तिसे न आदरिये ।  
संतत सो प्रिय मोहि सदा जाते भवनिधि परिये । कहो अब नाथ  
कौन बल ते संसार शोक हरिये ॥ जबकब निजकरुणा स्वभाव ते  
द्रवो तो निस्तरिये । तुलसिदास विश्वास आन नहि कत पचपच  
मरिये ॥

पद १९८ ( राग जैजैवंती )

प्रीति की रीति रघुनाथ जाने । जात कुल वरणको नाहिं माने ॥  
 प्रीति प्रह्लादकी जान करुणानिधी खंभ सों प्रगट नख उदर माने ।  
 दौड गजराजके फंदको काटने गरुडको छोड आये उलाने ॥ अधम  
 कुल भीलनी बेर दिये रामको पाय मन मगन अतिही सराने ।  
 गीध पक्षी महा अधम आमिष भखी ताहि तनु परश सुरपुर पठावे ।  
 जानकी कारणे जेरि कपि भालुदल कोट सी लंक गढको ढहाने ।  
 बैरको भाव उत्साह हरि मिलनको अंतको बेर अंग में समाने ॥  
 भक्त भगवंत अंतर निरंतर नही यहीं तो निगम आगम बखाने ॥ दास  
 कान्हर यही रीति रघुनाथ की आपसे भक्त को सरस माने ॥

पद १९९ ( राग जैतश्री )

श्रीरघुवीरकी यह बानी । नीच हूं सो करत नेहसो प्रीति मन  
 अनुमानी ॥ परम अधम निषाद पामर कौन ताकी कानि । लियो सो  
 उरलाय सुत ज्यों प्रेमको पहंचानि ॥ गीध कौन दयाळु जो विधि  
 रच्यो हिंसा सानि । जनक ज्यों रघुनाथ ताको दियो जल निजपानि ॥  
 प्रकृति मलिन कुजाति शबरी सकल अवगण खानि । खात ताके  
 दिये फल अति रुचि बखान बखानि ॥ रजनिचर अरु रिपु बिभी-  
 षण शरण आयो जानि । भरत ज्यों उठताहि भेटत देह दशा  
 मुलानि ॥ कौन सौम्य सुशील बानर जिनिहिं सुमिरत हानि । किये  
 ते सब सखा पूजे भवन अपने आनि ॥ राम सहज कृपालु कोमल  
 दिनहित दिन दानि । भजहिं ऐसे प्रभुहिं तुलसी कुटिल कपट न  
 ठानि ॥

पद २०० ( राग सोरठ )

जानत प्रीति रीति रघुआई । नाते सब हाते कर राखत राम  
सनेह सगाई ॥ नेह निवाह देव तज दशरथ कीरति अचल चलाई ।  
ऐसे हु पितुते अधिक गीध पर ममता गुण गरुआई ॥ तिय विरही  
सुग्रीव सखा लखी प्राणप्रिया बिसराई । रणपण्यो बंधु बिभीषण ही  
को शोच हृदय अधिकआई ॥ घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भई  
जब जहं पहुनाई । तब तहं कही शबरीक फलनकी रुचि माधुरी  
न पाई ॥ सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत कुच शिरनाई ।  
केवट मीत कहत सुख मानत बानर बंधु बडाई ॥ प्रेम कनौडो  
राम सों प्रभु त्रिभुवन तिहुं काल नभाई ॥ नेरो ऋणी हो कद्यो  
कपि सों ऐसी मानि है को भेवकाई ॥ तुलसी राम सनेहशील  
लखि जो न भक्ति उरआई । तौ तोहि जन्म जाय जननी जड  
तनु तरुणता गंवाई ॥

पद २०१ ( राग भैरव )

ऐसी हरि करत दास पर प्रीति । निजप्रभुता बिसार जनके वश  
होत सदा यह रीति ॥ जिन बांधे सुर असुर नागनर प्रबल कर्म  
की डोरी । सो परब्रह्म यशोमति बांध्यो सकत नहीं तनु छोरी ॥  
जाकी माया वश विरंचि शिव नाचत पार न पायो । करतल ताल  
बजाय ग्वाल युवतिन सों नाच नचायो ॥ विश्वभर श्रीपति त्रिभुवन  
पतिवेद विदित यह लीख । बली सों कछु नचली प्रभुता वर हो  
द्विज मांगी भीख ॥ जाके नाम लिये छूटत भवजन्म मरण दुख  
भार । अंबरीषहितलाग कृपानिधि सो जन्म्यो दश बार ॥ योग  
विराग ध्यान जप तप कर जिहि खोजत मुनि ज्ञानी । वानर भाल



चपल पशु पामर नाथ तहां रति मानी ॥ लोकपाल यमकाल पवन  
रवि शाही सब आज्ञा कारी । तुलसिदास प्रभु उग्रसेनके द्वार  
बेत करधारी ॥

पद २०२ ( राग जंगला )

ऐसो श्रीरघुबीर भरोसो । वारिन बोर सको प्रह्लादाहें पावक  
नाहीं जरोसो ॥ ऐसो० ॥ हरणाकुश बहुभांति सतायो हठकर वैर  
करोसो । मान्यो चहै दास नरहरिको आपै दुष्ट मरोसो ॥ ऐसो० ॥  
मीराके मारनके कारण पठ्यो जहर खरोसो । राम नाम अमृत भयो  
ताको हंस हंस पान करोसो ॥ ऐसो० ॥ द्रुपद सुताको चीर दुशा-  
सन मध्यसभा पकरो सो । ऐंचत ऐंचत भुज बलहारे नेकन अंग  
उघरो सो ॥ ऐसो० ॥ भारत में भरुहीके अंडा कोटीनदल बि-  
खरोसो । राम नाम जब पक्षी टेन्यो घंटा टूट परोसो ॥ ऐसो० ॥  
जाय्यो लंक अंजनीनंदन देखत पुर सगरोसो । ताके मध्य विभी-  
षणको गृह राम कृपा उबरोसो ॥ ऐसो० ॥ रावण सभा कठिण  
प्रण अंगद हठकर हरि सुमिरोसो ॥ मेघनादसम कोटिन योधा टारे  
पगन टरोसो ॥ ऐसो० ॥ तुलसिदास विश्वास राम कोका कर  
नारिनरो सो ॥ और प्रभाव कहां लग वरणो ज्यहि यमराज डरो  
सो ॥ ऐसो० ॥

पद २०३ ( राग सोरठ )

ऐसे राम दीन हितकारी । अति कोमल करुणा निधान बिन  
कारण पर उपकारी ॥ साधन हीन दीन निज अध वश शिला भई  
मुनि नारी । गृह ते गवन परश पद पावन घोर शाप ते तारी ॥  
हिंसारत निशाद तामस बपु पशु समान बनचारी । भेद्यो हृदयं

लगाय प्रेम वश नहीं कुलजाति विचारी ॥ यद्यपि द्रोह किया  
सुरपति सुत कहिन जाय अति भारी । सकल लोक अवलोकि शोक  
हत शरण गये भय टारी । विहंगयोनि आमिष अहार परगीध  
कवन व्रत धारी । जनक समान क्रिया ताकी निजकर सब बात  
संवारी ॥ अधम जाति शवरी योषित शठ लोक वेद ते न्यारी ।  
जान प्रीति दे दरश कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी ॥ कपि सु-  
प्रीव बंधु भय व्याकुल आयो शरण पुकारी । सहिन मके दारुण  
दुख जनको हल्ये बालिसहगारी ॥ रिपुको बंधु बिभीषण निशिचर  
कौन भजन अधिकारी । शरण गये आगे होय लिनो भेद्यो भुज  
पसारी ॥ अशुभ होय जिनके सुभिरण ते वानर रीछ विकारी ।  
वेद विदित पावन किय ते सब महिमा नाथ तुम्हारी ॥ कहं लग  
कहौं दीन अगणित जिनकी तुम विपति निवारी । कलिमल  
प्रसित दास तुलसीपर काहे कृपा विसारी ॥

पद २०४ ( राग कल्याण )

देख सखि आज रघुनाथ शोभा बनी । नील नीरद वरण  
वपुष भुवना भरन पीत अंबर धरन हरन द्युति दामनी ॥ सरयु  
मज्जन किये संग उज्जन लिये हेतु जन परहिये कृपा कोमल धनी ।  
सजनि आवत भवन मत्त गजवर गवन लंक मृगपति ठवन  
कुंवर कौशल धनी । सघन चिक्कन कुटिल चिक्कर विललित मृदुल  
करन विवरत चतुर सरस सुखमाननी । ललित अहि शिशु निकर  
मनो शशि सन समर लरत धरहर करत रुचिर जनु युग फनी ॥  
भाल भ्राजत तिलक जलज लोचन पलक चारु भू नाशिका सुभग  
शुक आननी । चिवुक सुंदर अधर अरुण द्विज द्युति सुधर वचन

गंभीर मृदुहास भव भाननी ॥ श्रवण कुंडल विमल गंड मंडल  
चपल कलित कल कांति अति भांति कलु तिनतनी । युगल कंचन  
मकरमनो विधुकर मधुर पियत पहचानकर सिंधु कीरति भनी ॥  
उरासि राजत पदिक ज्योति रचना अधिक भाल सुविशाल चहुं  
पास वनि गजमनी । श्यामनय जलद पर निरख दिनकर कला  
कौतुक मनो रही घेर उडगन अनी ॥ मंदरन परखरी नारि आनंद  
भरी निरख वरषहि विपुल कुसुम कुंकुम कनी । दास तुलसीराम  
परम करुणाधाम काम शत कोटि मदहरत छबि आपनी ॥

पद २०५ ( राग धनाश्री )

सब दिन गये विषय के हेत ॥ तीनों पन ऐसेही बीते केश  
भये शिर श्वेत ॥ रुंधो श्वास मुख बैन न आवत चंद्र ग्रस्यो  
जिमिकेत ॥ तजि गंगोदक पियत कूपजल हरि तजि पूजत प्रेत ॥  
कर प्रमाद गोविंद बिसान्यो बूझ्यो कुटुंब समेत ॥ सूरदास कछु  
खरच न लागत राम नाम मुख लेत ॥

पद २०६ ( राग धनाश्री )

केते दिन हरि सुमिरन बिन खोये ॥ पर निंदा रसना के रससे  
अपने करम बिगोये ॥ तेल लगाय कियो तनु मर्दन वस्तर मल मल  
धोये ॥ तिलक लगाय चले बन स्वामी विषयनके संग जोये ॥  
काल बली ते सब जग कांण्यो ब्रम्हादिक मुनि रोये ॥ सूर अधम  
कि कौन गती है उदर भरे भर सोये॥

पद २०७ ( राग जंगला )

हंसकी गुजार दम साईं नाल लावीं नेह देवीं तेहढावीं खावीं  
कित कारण संचना ॥ जोडे सीवथेरे दम आये भी न किसे कम

लाखां ते हजारां वाले नंगी पैरीं चल्तुना ॥ सीधे मारग पाऊ राख  
चुभे नहीं कंडाकाख विगे मारग पाउं न धरिये होवे अंग भंगना ॥  
शाहबाद शाहसूरे किसे दे न कम पूरे बुलहैदी बलाय झूरे आखि  
मर वंजना ॥

पद २०८ ( राग प्रभाती )

रहुवे बीबा रहुवे अडया बोल नदी नहीं जावे अडया ॥ जे  
शिर कइ लवे धड नालों पाछे कदम नदवीं हालों तदभी कुछ न  
कहूवे अडया ॥ जे तैं हक दा राह पछाता दमना मारीं रही चुगता  
गरदन कहु नाबहु वे अडया ॥ गोरनमानी दियां छमकां केहीयां हू  
हवा विचरह गैयां सैयां कहिदा शाहसूरेन वे अडया ॥

पद २०९ ( राग सोरठ )

रे मन रामसों कर प्रीत । श्रवण गोविंदगुण मुनो अरु गाउ  
रसना गीत ॥ कर साधु संगति सुमिर माधो होय पतित पुनीत ।  
काल व्याल ज्यो पग्यो डोलै मुख पसारे मीत ॥ आज कल पुनि  
तोहि प्रसि है समझ राखो चीत । कहै नानक राम भजले जात  
औसर बीत ॥

पद २१० ( राग जैजवंती )

राम सुमिर राम सुमिर यही तेरो काज है । मायाको संग त्याग  
हरिजूकी शरण लाग जगत सुख मान मिथ्या झूटो सब साज है ॥  
सुपनें ज्यों धन पछान काहे पर करत मान बारूकी भीत तैसे  
वसुधा को राज है । नानक जन कहत बात विनश जैहै तेरो गात  
छिन छिन कर गयो काल तैसे जात आज है ॥

## पद २११ ( राम भैरव )

राम जप राम जप राम जप बावरे । घोर भव नीरनिधि नाम  
निज नाव रे ॥ एकही साधन सब ऋद्धि सिद्धि साध रे । प्रसे कलि  
रोग योग संयम समाध रे ॥ भलो जो है पोच जो है दाहिनोजो वाम रे ।  
राम नाम हीसे अंत सभहीको काम रे ॥ जग नभ वाटिका रही है फैल  
फूल रे । धू आं कैसे धौल हैं तू देख मत भूल रे ॥ राम नाम छांड  
जो भरोसो करै और रे । तुलसी परोसो त्याग मांगे कूर कौर रे ॥

## पद २१२ ( राग जंगला )

कोई मोडो दिलां दियां बागां नूं ॥ मन समझाया समझे नाहीं  
रात दिने उठ पैदा राहीं टूंडन जाय स्वादांनूं ॥ यह मन मेरा कौआ  
कहिये विना हंस क्यों मोती लहिये मिल हंसातज कागां नूं ॥  
और किसी को दोष न दीजै जो कछु बी जिया सो लुन लीजे दोष  
है अपन्या भागां नूं ॥ कहै हुसैन सुनो भाई साधो मन मजबूत  
पकड जब बांधौं फेर की करो किताबां नूं ॥

## पद २१३ ( राग भैरवी )

माटी खुदी करेंदी यार ॥ माटी जोडा माटी घोडा माटी दा  
असवार ॥ माटी माटी नूं मार न लागी माटी दे हथियार ॥ जिस  
माटी पर बहुती माटी तिस माटी हंकार ॥ माटी बागवगीचा माटी  
माटी दी गुलजार ॥ माटी माटी नूं देखन आई माटी दी बहार ॥  
हंसखेल फिर माटी होई पौंदी पांव पसार ॥ बुल्लाशाह बुझारत  
बुझी लाह सिरों भों मार ॥

पद २१४ ( राग सोरठ )

या जग मीतन देख्यो कोई ॥ सकल जगत अपने सुखलाग्यो  
 सुखमें संग न होई ॥ दारा मीत पूत संबंधी सगरे धनसों लागे ॥  
 तबहीं निरधन देख्यो नरको संग छांड सभ भागे ॥ कहा कहूं या  
 न बैरे को इनसो नेह लगाया ॥ दीननाथ सकल भय भंजन यश  
 को बिसराया ॥ श्वान पूंछ ज्यों भयो नसूधो बहुत जतन में  
 हनो ॥ नानक लाज विरद की राखो नाम तिहारो लीनो ॥

पद २१५ ( राग सारंग )

तजो मन हरी विमुखन को संग ॥ जिनके संग कुवधि उपजे  
 रत भजन में भंग ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह में निशिदिन  
 इत उमंग ॥ कहा भयो पय पान कराये विष नहीं तजत भुवंग ॥  
 गहि कहा कपूर खवाये श्वान न्हावाये गंग ॥ खरको कहा  
 रगजा लेपन मर्कट भूषण अंग ॥ पाहन पतित बान नहीं भेदत  
 तो करत निपंग ॥ सूरदास खल कारी कामर चढत न दृजो रंग ॥

पद २१६ ( राग सोरठ )

मन रे प्रभुकी शरण विचारो । जिहि सुमिरत गणिका सी उधरी  
 को यश उर धारो ॥ अटल भयो ध्रुव जाके सुमिरन अरु निर्भय  
 द पाया ॥ दुख हरता या विधिको स्वामी तैं काहें बिसराया ॥  
 बही शरण गही किरपानिधि गज ग्राह ते दूटा ॥ महिमा नाम  
 हां लग वरणों राम कहत बंधन तिहि दूटा ॥ अजामील पापी  
 ग जाने निमिष माहि निस्तारा ॥ नानक कहत चेत चितामाणि  
 पी उतरसपारा ॥

कुह हाथ न आवे जैसे चंदा छिप जात घनमें ॥ पथरीमे आग जाने सब कोई चकमक झाडके धूनी रमाई गुरु अपने से आज्ञा पाई जैसे मुख देखत दर्पनमें ॥ महिदीके पातमें लाली रहत है बिन घोटे रंग चढे न हाथ पै ऐसी खोजना करो मन अपने निश्चय कर चितला साधन में ॥ गजके कुंभ सों निकस्यो मोती अंधरे से क्या कीमत होती हेमदास कोई विरला जाने ज्ञानी समझत है सैनन में ॥

पद २२३ ( राग कलिंगडा )

मूरख छांड वृथा अभिमान ॥ औसर बीत चल्यो है तेरो दो दिनको महिमान ॥ भूप अनेक भये पृथिवि पर रूप तजे बलवान ॥ कौन बच्यो या काल व्याल ते भिट गये नाम निशान ॥ धवल धाम धन गज रथ सेना नारी चंद्रसमान ॥ अंतसमय सबही को तज कर जाय बसे शमशान ॥ तज सतसंग भ्रमत विषयनमें जा विधि मर्कट श्वान ॥ छिन भर बैठ न सुमिरन कीनो जासों होय कल्यान ॥ रे मन मूढ अंत जिन भटके मेरो कह्यो अब मान ॥ नारायण ब्रजराज कुंवर सों वेगहिं कर पहिचान ॥

पद २२४ ( राग जंगला )

राम रंग लागा हरी रंग लागा । मेरे मनका संसा भागा ॥ जबमैं होतीथी अहिल दिवानी तब पिया मुखों न बोले । जब बंदी भई खाक बराबर साहब अंतर खोले ॥ साहब बोलेतो अंतर खोले सेजडीया सुख दीजे । रोम रोम प्यारे रंग रत्तीया प्रेम प्याला पीके । सांचे मन ते साहब नेडे झूटे मन ते भागा । हरि जन हरिजीको ऐसे मिलत जैसे कंचन संग सुहागा ॥ लोक लाज कुलकी मरयादा

तोड दियो जैसे धागा । कहत कबीर सुनो भइ साथो भाग  
हमारा जागा ॥

पद २२५ ( राग बिभास )

भज मन रामचरन सुखदाई । जिहि चरणनसे निकसि मुरसरी  
शंकर जट समाई ॥ जटा शंकरी नाम पय्यो है त्रिभुवन तारन  
आई ॥ जिहि चरणनकी चरण पादुका भरत रह्यो लवलाई ॥  
सोई चरण केवट धोय लीने तब हरि नाव चलाई । सोई चरण  
संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ॥ सोई चरण गौतम ऋषि-  
नारी परश परमपद पाई । दडकवन प्रभु पावन कीनां ऋषियन  
त्रास मिटाई ॥ सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनक मृगा संग धाई ॥  
कपी सुग्रीव बंधु भयव्याकुल तिन जय छत्र फिराई ॥ रिपुको  
अनुज विभीषण निशिचर परशत लंका पाई । शिव सनकादिक  
अरु ब्रम्हादिक शेष सहस मुख गाई ॥ तुलसिदास मारुत सुतकी  
प्रभु निज मुख करत बडाई ॥

पद २२६ ( राग जंगला )

पीलेरे अवधू हो मत्तवारा प्याला प्रेम हरी रस कारे ॥ पाप  
पुण्य दोउ भुगतन आये कौन तेरा है तू किसका रे ॥ जो दम जीवे  
हरिके गुण गाले धन यौवन स्वपना निशि कारे ॥ बाल अवस्था  
खेल गंवाई तरुण भयो नारी वश कारे ॥ वृद्ध भयो कफ वाईने  
वेच्यो खाट पडा नहीं जाय मसकारे ॥ नाभिकमलमें है कस्तुरी कैसे  
भरम मिटे पशुकारे ॥ बिन सत गुरु ऐसे दुख पावे जैसे मृगा  
फिरे बनका रे ॥ लाख चुरासी उबन्यो चाहे छोड कामिनिका



चसका रे ॥ प्रेममगन चरनदास कहत है नख शिख रूप भन्योः  
विसका रे ॥

पद २२७ ( राग बरवा )

हरि नाम लाहा लेत रे तेरो जन्म ब्रियो जात ॥ जैसे वृक्ष  
पक्षी आन बैठे उठ चले परमात ॥ गयो श्वास न बहुडियो तेरी  
पलक लखियो न जात ॥ जुए जुवारी धन हन्यो मन खेलने दे  
चाउ ॥ खेड कर पछतायगा रे तू हार घर क्यों जात ॥ बन जारेने  
बैल जैसें टांडा लदियो जाय ॥ लाभ कारन आयो प्राणी चल्ह्यो  
मूल गंवांय ॥ आछे दिन पाछे गये तैं हरि सों कियो न हेत ॥  
अब पछतावा क्या करे जब चिडियां चुग गई खेत ॥ कार्ची काया  
कांच कीरे समझ देखों लोय ॥ सगुरे को समझ परत है निगुरा जावे  
खोय ॥ जबलग तेल दिवें में बाती सूझत है सब कोय ॥ जल गया  
तेल निकस गई बाती लेचल लेचल होय ॥ रल मिल सखी सागर  
चली शिर फूट गागर परी ॥ पछतायगी पनिहार जिउं कर रीते  
घर क्यों जात ॥ फटी सुरनाही फूक निकसी जायसुनी अवधेहि ॥  
कहे नानक दास प्रभुका तेरी अंत हो जाऊ खेहि ॥

पद २२८. ( गजल. )

जिन प्रेम रस चाख्या नहीं अमृत पिया तो क्या हुआ । जिन  
इश्क में शिर ना दिया युग युग जिया तो क्या हुआ ॥ महशूर हुआ  
पंथमें साबित न कीया आपको । आलिम और फाजिल बनादाना  
हुआ तो क्या हुआ ॥ देखी गुलिस्तां बोस्तां मतलब न पाया शेखका ।  
सारी किताबां याद कर हाफिज हुआ तो क्या हुआ ॥ जब लग  
प्याला प्रेमका पी कर के मतवाला नहीं । राग तार मंडल बाजते

जाहिर सुना तो क्या हुआ ॥ जोगी उ जंगम वेप कर कपड़े रंगा कर पहिनते । बाकिफ नहीं उस हालके कपड़े रंगे तो क्या हुआ ॥ दिख में दरद नहीं पियाको बैठा मुशाइख होय के ॥ दिलका हरट फिरता नहीं तसबी फिरी तो क्या हुआ ॥ औरां नसीहत तूं करे आप अमल करता नहीं । दिलका कुफर टूटा नहीं हाजी हुआ तो क्या हुआ ॥ जब इश्क के दरियाय में गर्काब तू होता नहीं । गंगा यमुन गोदा-वरी न्हाता फिरा तो क्या हुआ ॥ बलीराम पुकारत है यही पी पी जो करते जी दिया । मतझुब हामिल ना हुआ रो रो मुआ तो क्या हुआ ॥

पद २२९. ( राग देवगंधार. )

यह मन नेक न कह्यो करै । सीख भिगवाय रख्यो अपनी सी दुर-मति ते न टैरे ॥ भद माया के भयो बावरो हरि यश नहि उचैरे ॥ कर परपंच जगत को डहकै अपनो उदर भैरे ॥ श्वान पूछ ज्यों होय न सूधो कह्यो न कान धरे । कह्यो नानक भज राम नाम नित जाते काज सैरे ॥

पद २३०. ( राग देवगंधार. )

सब कछु जीवत को व्यवहार । मात पिता भाई सुत बांधव अरु पुन गृहकी नार ॥ तनते प्राण होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार । आध धरी कोऊ नहीं राखै घरते देत निकार ॥ मृग नृणा ज्यों जग रचना यह देखो हृदय विचार । कह्यो नानक भज राम नाम नित जाते होत उधार ॥

पद २३१. ( राग देवगंधार. )

जगतमें झूठी देखी प्रीत । अपनेही सुखसों सब लागे क्या दारा

क्या मीत ॥ मेरो मेरो सभी कहत हैं हितसों बांध्यो चीत । अंत-  
काल संगी नहिं कोऊ यह अचरज है रीत ॥ मन मूरख अजहूं नहिं  
समझत शिख दे हाय्यो नीत । **नानक** भौ जल पार पैर जो गावै  
प्रभुके गीत ॥

पद २३२. ( राग सोरठ. )

मनकी मनही माहिं रही । ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी  
काल गही ॥ दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सभ मही । और  
सकल मिथ्या यह जानो भजन राम को सही ॥ फिरत फिरत बहुते  
जुग हाय्यो मानस देह लही । **नानक** कहत मिलनकी बिरियां  
सुमिरत कहा नहीं ॥

पद २३३. ( राग झिझोटी. )

मेरे रानाजी मैं गोविंद के गुन गाना ॥ राजा रूठे नगरी राखे  
अपनी मैहर रूठे कहां जाना ॥ राने भेजा जहर प्याला मैं अमृत कर  
पी जाना ॥ डबिया में काल! नाग जो भेजा मैं साल गराम कर  
जाना ॥ **मीराबाई** प्रेम दिवानी मैं सांवरिया वर पाना ॥

पद २३४. ( गजल. )

समझ बूझ दिल खोज पियारे आशक होकर सोना क्या ॥ जिन  
ननों से नींद गंवाई तकिया लेफ बिछौना क्या ॥ रूखा सूखा रामक  
टुकड़ा चिकना और सलोना क्या ॥ कहत **कमाल** प्रेमके मारग  
शीश दिया फिर रोना क्या ॥

पद २३५. ( गजल. )

नाम जपन क्यों छोड दिया ॥ क्रोध न छोडा झूठ न छोड  
सत्य वचन क्यों छोड दिया ॥ झूठे जगमें दिल ललचाकर असल

वतन क्यों छोड़ दिया ॥ कौड़ी को तू खूब संभाला लाल रतन क्यों छोड़ दिया ॥ जिहि सुमिरन ते अति सुख पावैं सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ॥ खाल सड़क भगवान भरोसे तन मन धन क्यों छोड़ दिया ॥

पद २३६. ( राग खमाज. )

प्रीतम तुम मोहिं प्राण ते प्यारो । जो तोहिं देख हिये मुख पावत सो बडभागिन वारो ॥ तुम जीवन धन सरवस तुमहीं तुमहीं दृग-नके तारो । जो तुमको पल भरन निहारू दीखत जग अंधियारो ॥ मोद बढावनके कारण हम माननी रूपको धारो । नागायण हम दोउ एक है फूल सुगंधि न न्यारो ॥

पद २३७. ( राग बिलावल. )

दीन दयाल दिवाकर देवा । कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा ॥ हिमं तम करि के हारे करमाली । दहन दोष दुख दुरित रुजाली ॥ कोक कोकनद लोक प्रकासी । तेज प्रताप रूप रम रासी ॥ सारधि पंगु दिव्य रथ गामी । हरि शंकर विधि मूरति स्वामी ॥ वेद पुरान प्रगट यश जागै । तुलसी राम भगति वर मागै ॥

पद २३८. ( राग गौरी. )

मंगल मूरति मारुतनंदन । सकल अमंगल मूल निकंदन ॥ पवन-तनय संतन हितकारी । हृदय विराजत अवध विहारी ॥ मात पिता गुरु गणपति शारद । शिवा समेत शंभु शुक नारद ॥ चरण बंदि विनवों सब काहू । देहु राम पद नेह निबहू ॥ बंदौ राम लषण वैदेही । जो तुलसी के परम सनेही ॥

पद २३९. ( राग जंगला. )

नर अचेत पाप से डर रे ॥ दीनदयाल सकल भय भंजन  
शरण ताहि तूपडरे ॥ वेद पुराण जिसका गुण गावें ताको नाम  
हिये में धर रे ॥ पावन नाम जगत में हरिको सुमिर सुमिर पापां मल  
हर रे ॥ मानस देह बहुरि नहिं पावे कछु उपाउ मुक्ति का कर रे ॥  
नानक कहत गाय करुणामय भवसागर से पार उतर रे ॥

पद २४०. ( राग जंगला. )

कोउ हरि समान नहिं राजा ॥ यह भूपति सभ दिवस चार के  
झूठे करत दिवाजा । जन तेरा सो कभूं न डोले तीन भुवन पर  
छाजा ॥ चेत अचेत मूढ मन मेरें करो हरीके काजा । हाथ पसार  
सके नहिं कोई बोल न सके अंदाजा ॥ कहत कबीर संशय भ्रम  
चूका ध्रुव प्रह्लाद निवाजा ॥

पद २४१. ( राग कानडा. )

आज बंशीबट बरसत रंग । यमुना तीर समीर सुहावत बोलत  
विविध विहंग ॥ कीरति कुवारी लाल नंदजी को झूल रहे इक संग ।  
रूप सिंधुके अंग अंग ते छबिकी उठत तरंग । बजत बीन ताऊस  
सरंगी बंशी झांझ मृदंग । नारायण गावत मिल सजनी हिय में  
बढत उमंग ॥

पद २४२. ( राग जैजैवंती. )

तुम बिन कौन हमारो प्रभुजी ॥ होय असत्यके हम अनुरागी  
हितकर सत्य विसारो ॥ दिव्य ज्ञान बिन अंध भये हम सूझे न सार  
असारो ॥ कभूं न बैठ छिनक निरजन में जीवन तत्व विचारो ॥

दीन हीन अति कृपा पात्र लख करुणा हस्त पसारो ॥ पाप विकार  
हरो गिरिधर अब ज्यों जानो त्यों तारो ॥

पद २४३. ( राग झिझोटी. )

जिन मग रोको नंदकिशोर । तोहिं उरझनकी बान परी है सांझ  
तकत नहिं भोर ॥ देर लगत मोहिं सास रिसावै तुम्हें छैल नित रा  
सुहावै इन कुचाल कछु हाथ न आवै गागरिया दई फोर । तुम  
अति चंचल छैल विहारी कैसे कूख रखे महतारी यह अचरज मोको  
है भारी घरघर तेरो शोर ॥ नारायण अब क्यों इतगवो भई सो  
भई न बात बढावो ताही को तुम आंख दिखावो जो होय तेरी बँदोर ॥

पद २४४. ( राग सोरठ. )

मन रे कौन कुमति तैं लान्ही । पर दाग निद्रा रस रान्यो राम  
भगति नहिं कीनी ॥ मुक्त पंथ जान्यो तैं नाहिन धन जोरनको  
धायो । अंत संग काहू नहिं दीनो बिरथा आप बंधायो ॥ ना हरि  
भजे न गुरु जन सेयो नहिं उपज्यो कछु ज्ञाना । घटही मांहि  
निरंजन तेरे तैं खोजत उद्याना ॥ बहुत जन्म भरमत तैं हान्यो  
अस्थिर मति नहिं पायो । मानस देह पाय पद हरि भज नानक  
बात बतायो ॥

पद २४४ ( राग भैरव )

मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई ॥ हौं तो साईं द्रोही पै  
सेवक हित साईं ॥ राम सों बडो है कौन मोसों कौन छोटो ॥ राम  
सों खरो है कौन मोसों कौन खोटो ॥ लोक कहै रामको गुलाम  
हौं कहावों ॥ एतो बडो अपराध मौ न मन पावों ॥ पाथमाथे चढे  
वृण तुलसी जो नीचो ॥ बो रतन बारि ताहि जान अपनो सीचो ॥

## पद २४५ ( राग गौरा )

साधो राम शरण विश्रामा ॥ वेदपुगण पढे को यह गुण सुमिरे  
हरिको नामा ॥ लोभ मोह माया ममता पुनि औ विषयनकी सेवा ॥  
हर्ष शोक परसै जिहि नाहिन सो मूरत है देवा ॥ स्वर्ग नरक अमृत  
विष यह सभ ल्यों कंचन अरुपैसा ॥ अस्तुति निंदा यह समजाके  
लोभ मोह पुनि तैसा ॥ दुख सुख यह बांधे जिहिं नाहिन तिहि  
तुम जानो ज्ञानी ॥ नानक मुक्त ताहि तुम मानो यहि विधिको  
जो प्रानी ॥

## पद २४६ ( राग धनाश्री )

सोई बडो जो हरि गुन गावै ॥ शौच पवित्र होत पदसेवा  
विनगुपाल ऊंच जन्म न भावै ॥ वाद विवाद यज्ञ व्रत साधन कित-  
हूं जाय जन्म डहकावै ॥ होय अटल जगदीश भजन ते सेवा तामु  
चार फल पावै ॥ कहूं ठौर नहिं चरण कमल बिन भुंगी ज्यों दश  
हूं दिशि धावै ॥ सूरदास प्रभु संतसमागम आनंद अभय  
निशान बजावै ॥

## पद २४७ ( राग भैरव )

मन राम सुमिर पछतायगा ॥ पापी जी उडा लोभ करत है  
आज कल्ह उठ जायगा ॥ लालच लागे जन्म गंवायो माया भरम  
भुलाय गा ॥ धन यौवन का गर्व न करिये कागजसा गलजायगा ॥  
सुमिरन भजन दया नहिं कीनी तामुख चोटा खायगा ॥ धर्मराय  
जब लेखा मांगे क्या मुख लेकर जायगा ॥ कहत कबीर सुनो  
भाई साधो साधसंग तरजायगा ॥

पद २४८ ( राग भैरवी )

सभ सुख राम नाम लवलाई । नामविना सुख सकल वृथाई ॥  
ना सुख होवत मूंड मुंडाई । ना सुख घरघर अलख जगाई ॥ ना  
सुख है अपने घरमाहीं । ना सुख भगवै भेष बनाई ॥ ना सुख  
वनमें ना सुख धनमें ना सुख चिंता ना हरपाई । ना सुख योग यज्ञ  
तप पूजा ना सुख झूठि समाधि लगाई ॥ ना सुख राजे ना सुख  
रानी ना सुख हास विलास कहानी । ना सुख मानी ना अपमानी  
ना सुख झूठी कर चतुराई ॥ ना सुख वेद किताब पुगना ना सुख  
कछु कथे सुख ज्ञाना । सगरे सुख कवीर सो पाई जां जन राम  
नाम लवलाई ॥

पद २४९ ( राग सोरठ )

ऐसो है रे भाई हरिरस ऐसो है रे भाई जाके पिये अमर हांजाई ॥  
ध्रुव पीया प्रह्लाद ने पीया पीया है मीराबाई ॥ वृलख ब्रह्मारे के  
मीयां पीया छोडी है बादशाही ॥ हरिरसमहंगा मोलकारे पीवे विरला  
कोय ॥ हरिरस महंगा सो पिये जाके धर पै शीश न होय ॥ आगे  
आगे दौ चले रे पीले हरिया होय ॥ कहत कवीर सुनो भाई  
साधो हरि भज निर्मल होय ॥

पद २५० ( राग भैरवी )

रे प्राणी क्या मेरा क्या तेरा । जैसे तरवर पंख बमेरा ॥ जलकी  
भीत पवन का थंभा रक्त बिंदु का गारा । हाडमांस नाडीका पिंजर  
पंखी बसे बिचारा ॥ राखो कंध उसारो नीवां । साढेतीन हाथ तेरी  
सीवां ॥ बांके बाल पाग शिर टेढी । यह तन होगा भस्मकी देरी ।  
ऊंचे मंदिर सुंदर नारी । राम नाम बिन बाजी हारी ॥ मेरी जात



कमीनी बुद्धि कमीनी होछा जन्म हमारा । तुमरी शरणागत मैं प्रभुजी कहे रामदास चमारा ॥

पद २५१ ( राग सोरठ )

मुकुंद मुकुंद जपो संसार । बिन मुकुंद तन होसी छार ॥ सोई मुकुंद मुक्तिका दाता । सोई मुकुंद हमरा पितु माता ॥ जिवत मुकुंदे मरत मुकुंदे ॥ ताके सेवकको सदा अनंदे ॥ मुकुंद मुकुंद हमारे प्रान । मुकुंद हमारे मस्तक निशान ॥ उपज्यो ज्ञान हुआ प्रकास । कर किरपा लीने कीटदास ॥ कहे रविदास अब तृष्णा चूकी । जप मुकुंद सेवा ताहूकी ॥

पद २५२ ( राग गौरी )

माधो हरि हरि हरि मुख कहिये । हमते कछु न होवै स्वामी ज्यो राखो ल्यो रहिये ॥ क्या कछु करेकी करने हारा क्या इस हाथ बिचारे । जित तुम लावो तितही लागा तितही पूरण खसम हमारे ॥ करहु कृपा सर्व के दाते एक रूप लव लावहु ॥ नानक की विनती हरि पै अपना नाम जपावहु ॥

पद २५३ ( राग गौरी )

चोआ चंदन मरदन अंगा ॥ सोतन जलै काठ के संग ॥ इसतन धन की कौन बढ़ाई ॥ धरनि परै उर बारन जाई ॥ रातजो सोवहि दिन करे काम ॥ इक क्षण लेहि न हरिको नाम ॥ हाथ तां डोर मुख खायो तंबोर ॥ मरती बार कस बांध्यो चोर ॥ गुरु मति रस रस हरिगुन गावै ॥ रामहिं राम रमत मुख पावै ॥ किरपा करके नाम द्वाडै ॥ हरि हरि बास सुगंध बसाई ॥ कहत कबीर चेतरे अंधा ॥ सत्य राम झूठा सब धंधा ॥

पद २५४ ( राग देश )

माल जिन्होने जमा किया बनजारे हारे जाते है ॥ भाई बंधु कुटुंब कबीला दावा करकर खाते है ॥ जमी मुसाफर मारा जायगा सभी अलग हो जाते है । तू क्या जाने साई का रस्ता बाटर मारग बहुतसे हैं ॥ इम रस्तेके बीच मुसाफर अकसर मारे जाते है ॥ उंचे नीचे महल बनाये बैठ रहे चौबारे में ॥ जागत रहना मोना नाहीं हाथ पसारे जाते है ॥ अग्नि पलीता राज दंड अरु चोर मूछ ले जाते है ॥ राम नामपर कभी न दीना माल जवाई खाते है ॥ भाई बंधु संबंधी सारे सभी अलग हो जाते हैं ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो अपने हाथ जलते है ॥

पद २५५ ( राग जंगला )

आली मोही लागत वृंदावन नीको ॥ घर घर तुलसी ठाकुर पूजा दर्शन गोविंदजीको ॥ निर्मल नीर बहत यमुनाको भोजन दूध दहीको ॥ रत्न सिंहासन आप विराजे मुकुट धर्यो तुलसी को ॥ कुंजन कुंजन फिरत राधिके शब्द सुनत मुरली को ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर भजन बिना नर फीको ॥

पद २५६ ( राग जंगला )

जै जानकीनाथ जै श्रीरघुनाथ ॥ दोउ कर जोडे बिनवों प्रभु मोगी सुनो वाता ॥ तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता ॥ तुमही सज्जन संगी भक्ति मुक्ति दाता ॥ जै० ॥ चौरामी प्रभु फंद छुडावो मेटो यम त्रासा ॥ निशिदिन प्रभु मोहिं राखो अपने संग साथी ॥ जै० ॥ वाम लक्ष्मण भरत शत्रुहन संग चारो भैया ॥ जग मग ज्योति विराजै शोभा अति लहिया ॥ जै० ॥ हनुमत नाद बजावत

नेवर ठिमकाता ॥ सुवर्ण थाल आरती करत कौशल्या माता ॥  
 क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै शोभा अति भारी ॥ मनीराम दरश-  
 नको पल पल बलिहारी ॥ जै० ॥

पद २५७ ( राग देश )

सखी जबसों नंदलाल निहारे ॥ तबहीसों बोंरी भई डोढ़ं इत  
 उत गली गिरारे ॥ शीश मुकुट शिरपेंच रतनको लसत बार घुघ-  
 रारे ॥ खंजन नयन मैंन मद गंजन अंजन रेख समारे ॥ कुंडल  
 छोल कपोल मनोहर कोटि भानु उजियारे ॥ मानो रूपसिंधु में खेलत  
 मकरनके द्वै बारे ॥ मंद हंसन मुख श्याम बरन शशि मनोज लख  
 हारे ॥ दशन पांति ज्यों मुतियनकी लर अधर सांहै अरुणारे ॥  
 नाक बुलाक कुटिल बर भ्रुकुटी वचन रचन अति प्यारे ॥ नारायण  
 नख शिख श्रृंगार कर ठाढे भवनके द्वारे ॥

पद २५८ ( राग बिलावल )

को याचिये शंभु तज आन । दीन दयाल भगत आरति हर सब  
 प्रकार समर्थ भगवान ॥ कालकूट ज्वर जरत सुरासुर निज पन लाग  
 कियो विषपान । दारुन दनुज जगतदुखदायक मान्यो त्रिपुर  
 एक ही बान ॥ जो गति अगम महामुनि दुर्लभ कहत संत श्रुति  
 सकल पुरान । सोइ गति मरनकाल अपने पुर देत सदाशिव  
 सबहि समान ॥ सेवत सुलभ उदार कलपतरु पारवतीपति परम  
 सुजान । देहु राम पद नेहु काम रिपु तुलसिदास कहं कृपानिधान ॥

पद २५९ ( राग रामकली )

जय जय जग जननि देवि सुर नर मुनि असुर सेवि भक्तभूति-  
 दायनि भय हरणि कालिका । मंगल मुद सिद्ध सदानि पर्व शर्व रीश

वदनि तापतिमिर तरुण तरति किरण मालिका ॥ वमे चर्म कर  
कृपाण शूल शेल धनुष बाण धरणि दलनि दानव दल रणकरालिका ।  
पूतना पिशाच प्रेत डाकिनि शाकिनि समेत भूत ग्रह वेताल खग  
मृगालि जालिका ॥ जय महेश भामिनि अनेक रूप नामिनि समस्त  
लोक स्वामिनि हिमशैलबालिका ॥ रघुपतिपद परम प्रेम तुलसि  
चहै अचल नेम देहु है प्रसन्न पाहि प्रणतपालिका ॥

पद २६० ( राग भैरव )

राम राम रम रामराम रट राम राम जप जीहा ॥ राम नाम नव  
नेह मेह को मन हठ होहि पपीहा ॥ सब साधन फल कृप सरित  
सर सागर सलिल निरासा ॥ राम नाम रति स्वाति सुधा शुभ  
सीकर प्रेमपियासा ॥ गरज तरज पापान वरप पवि प्रीति परख  
जिय जानै ॥ अधिक अधिक अनुराग उमग उरपर परमित पहि-  
चानै ॥ राम नाम गति राम नाम मति राम नाम अनुरागी ॥ है  
गये हैं जे होहिंगे तेई गनियत त्रिभुवन बडभागी ॥ एक अंग मग  
अगम गवन कर विलंब न छिन छिन छाहैं ॥ तुलसि हित अपनी  
अपनी दिशि निरुपधि नेम निबा हैं ॥

पद २६१ ( राग सारंग )

हरि हैं सभ पतितन को नायक ॥ को करिसकैं बराबरी मेरी  
और नहीं कोइ लायक ॥ जैसे अजामिल को दीनो सो पाटो लिख  
पाऊं ॥ तो विश्वास होय मन मेरे औरौ पतित बुलाऊं ॥ यह मारग  
चौगुनो चलाऊं तो पूरो व्योपारी ॥ बचन मानलैं चलों गांठ दे  
पाऊं सुख अति भारी ॥ अबके तो इतने लै आयो बेर बहुर की  
और ॥ पतित उधारन नाम सुन्यो जब शरन गही तक दौर ॥

होडा होडी ममहिं भावते पाप किये भर पेट ॥ सबै पतित पायन  
तर मेरे यहै तुम्हारी भेट ॥ बहुत भरोसो जान तुम्हारो अघ कीने  
भर भांडो ॥ लीजै वेगि निवेर तुरत ही सूर पतित को टांडो ॥

पद २६२ ( राग धनाश्री )

काहे ते हरि मोहिं बिसँरो । जानत निज महिमा मेरे अघ तदपि  
न नाथ संभारो ॥ पतित पुनीत दीन हित अशरन शरन कहत  
श्रुति चारो । हौं नहिं अधम सभीत दीन किधौं बेद न वृथा पुकारो ॥  
खग गनिका गज व्याध पांति जहिं तहिं हौं हूं बैठारो ॥ अब किहि  
लाज कृपानिधान परसत पनवारो फारो । जौ कलि काल प्रबल  
अति हो तो तुव निदेश ते न्यारो ॥ तौ हरि शेष भरोस दोष गुन  
तेहिं भजते तज गारो । मशक विरिंचि विरिंचि मशक सम करहु  
प्रभाव तुम्हारो ॥ यह सामर्थ्य अछत मोहिं त्यागहु नाथ तहां कछु  
चारो । नाहिन नर्क परत मोकहं डर यद्यपि हौं अति हारो ॥ यह बड  
त्रास दास तुलसी प्रभु नामहुं पाप न जारो ॥

पद २६३. ( राग असावरी. )

है कोई दमकी बात जगतमें हरको सुमिर दिन रात ॥ उस बिन  
नहिं तेरा पार उतारा क्यों नहिं हरि गुन गात ॥ चार पहर नींदर  
में बीते जाग होई परभात ॥ यह दुनिया है रैन बसेरा जो आवत  
सो जात ॥ काम क्रोध तज लोभ प्राणी चारों वेद बखात ॥ धन  
योवनका मान न करिये चार दिननकी बात ॥ कोई जात नहिं संग  
तिहारे मात पिता क्या भ्रात ॥ माया लोभमें नितही भरमत काल  
लगाई घात ॥ राम कृष्ण सुमिरो निसि बासर छोड़ छाड पछपात ॥

रोग दोष त्रैताप विनाशे गंगा जमुना न्हात ॥ रूपचंद हैं वे नर  
मूरख जिन्हें न हरि यश भात ॥

पद २६४. ( राग पिछ )

हरसे भी मन प्रीत लगाले । जिंदगीका कछु नफा कमाले ॥ यह  
जीना हैं चार दिहाडे । किस हस्तीपर पाउं पसारे ॥ इस दिहका  
नहिं कुछ भरवासा । काहे दरदर फिरत पियासा ॥ जैसा मोह माया  
में कीना । अंत समय वैसा दुख दीना ॥ मुनि जन कर कर गये  
पुकारा । ऐसाही जीवन संसारा ॥ नये साल नित खुशी मनाई ।  
खुशी नहीं यह उमर घटाई ॥ जिस खातर जग ठाट बनावे ।  
आखिर कुछ तेरे साथ न जावे ॥ हाजिर होगा जब जम द्वारे ।  
तुझे मिलेंगे संकट भारे ॥ समज सोच कर समा बिताओ । अंत  
समै पूरा सुख पावो ॥ दुनीचंद हरि प्रीत सहारे । कर मझ धार  
से नाव किनारे ॥

पद २६५. ( राग बिहाग. )

बस्स करजी हुन बस्स करजी ॥ काई बात असां नाछ हस्स  
करजी ॥ तुसी दिल मेरे बिच बसदेसी ॥ तदों सानूं दूर क्यों दस देसी ॥  
तदों घत्त जादू दिल खस देसी ॥ हुन कितवल जासू नस्स करजी ॥  
तुसी मोयां नू मार न मुकदे सी ॥ नित्त खुदों बांगूं कुट देसी ॥  
गल्ल करदे से गल घुट देसी ॥ हुन तीर लायो तन कस्स करजी ॥  
तुसी छिप दे से असां पकडे हो तुसी अजे छिपण तूं तकडे हो ॥  
असां बिच जिगर दे जकडे हो ॥ हुन कहां जाओ दिल खस्स  
करजी ॥ बुल्लाशाह असीतेरे बरदेसे ॥ तेरे मुख देखन नूं मरदेसे ॥  
तुष बांगूं भिन्नता कर दे से ॥ हुन बैठे पिंजरे बिच धस्स करजी ॥

पद २६७. ( राग धनाश्री. )

जयति जय सुरसरी जगदखिल पावनी । विष्णु पद कंज मकरंद  
 इव अंबुवर वहसि दुख दहासि अघवृंद विद्रावनी ॥ मिलत जल  
 पात्र अज युक्त हरि चरण रज विरज वर वारि त्रिपुरारि शिर  
 धामिनी । जन्हु कन्या धन्य पुण्यकृत सगर सुत भूधर द्रोणि विद-  
 राणि बहु नामिनी ॥ यक्ष गंधर्व मुनि किन्नरोरग दनुज मनुज मज्जहिं  
 सुकृत पुंज युत कामिनी । स्वर्ग सोपान विज्ञान ज्ञानप्रदे मोह मद  
 मदनं पाथोज हिम यामिनी ॥ हरित गंभीर वानीर दुहुं तीर वर मध्य  
 धारा विशद विश्व अभिरामिनी । नील पर्यङ्क कृत शयन सर्पेश जनु  
 सहस शीशावली स्रोत सुर स्वामिनी ॥ अमित महिमा अतित रूप  
 भूपावली मुकुटमणि बंध त्रैलोक्य पथगामिनी । देहु रघुवीर पद प्रीति  
 निर्भर मातु दास तुलसी त्रास हरणि भव भामिनी ॥

पद २६८. ( राग धनाश्री. )

माधोजू मो सम मंद न कोऊ । यद्यपि मीन पतंग हीन मति  
 मोहिं न पूजे ओऊं ॥ रुचिर रूप आहार वश्य उन पावक लोह न  
 जान्यो । देखत विपति विषय न तजत हौं ताते अधिक अयान्यो ॥  
 महामोह सरिता अपार महिं संतत फिरत बह्यो । श्रीहरिचरण कमल  
 नौका तज फिर फिर फेन गह्यो ॥ अस्थि पुरातन क्षुधित श्वान अति  
 ष्यो भरमुख पक्यो । निज ताळ गत रुधिर पान कर मन संतोष  
 धन्यो ॥ परम कठिन भव व्याल ग्रसित हो त्रासित भयो अति भारी ।  
 चाहत अभय भेक शरणागत खगपति नाथ बिसारी ॥ जल चर वृंद  
 जाल अंतरगत होत सिमिटि इक पासा । एकहिं एक खात लालच  
 वश नहिं देखत निज नासा । मेरे अघ शारद अनेक युग गनत

पार नहीं पावै । तुलसीदास पतित पावन प्रभु यह भरोस  
जिय आवै ॥

पद २६९. ( राग जंगला. )

इक दिन होगा कूच जरूर ॥ चलना होमी साहिब हजर ॥  
कूडा करे प्रदेसी माणा ॥ रैन गुजार भोर उठ जाणा ॥ दौलत  
माया छोड गरूर ॥ क्यों सोया है जाग प्यार ॥ रैन गई छिपे सब  
तारे ॥ मंजिल भारी चलना दूर ॥ कंकर चुन चुन महल उमारे ॥  
झूठे है यह सब विस्तारे ॥ इक दिन होमी चकनाचूर ॥ मात पिता  
अर घरकी नारी ॥ कोई नहीं दुख बांटनहारी ॥ सुख के साथी न  
हो मसरूर ॥ दौलत माया जोड खजाने ॥ इकठे कीने जोर धिगाने ॥  
यह जग किशती काहै पूर ॥ क्या उंच नीच अमीर फकीर ॥ सब  
पर चलती है तकदीर ॥ इक दिन जम मुंह देसी धूर ॥ यह दुनिया  
सुपनेकी नाई ॥ जो आया सोही चल जाई ॥ एक रहेगा प्रभुका  
नूर ॥ इस दमदा कुल कर लै भाई ॥ हरिके बिन नहीं और सहाई ॥  
घट घट आप रखा भरपूर ॥ काम क्रोध सभ तज दे प्राणी ॥ झूठी  
मति क्यों दिलमें ठानी ॥ आखर होवेगा मजबूर ॥ जब जम आवे  
पकड ले जावे ॥ दौलत दुनिया पलमें छुडावे ॥ नहीं चलेगा कुछ  
मगदूर ॥ कहत रूपचंद सुनहो प्राणी ॥ यह दुनिया है बिलकुल  
फानी ॥ कृष्णचरनका हो मशकूर ॥

पद २७०. ( राग जंगला. )

हरिनाम कभी ना पुकारा ॥ गया बिरथा जनम है सारा मोह  
माया में उमर गुजारी ॥ नित धनके रहे व्योपारी ॥ और दुर्लभ नाम  
बिसारा ॥ गया ॥ किया दिनको मेरा तेरा ॥ सुख नींदने रैनको



धेरा ॥ हंस बोला काल नगारा ॥ गया० ॥ थे बार बार क्या कहते ॥ जब गरभमें थे दुख सहते ॥ ना भुदंग्गा कभी मुरारा ॥ गया० ॥ कीनी धरती जरसे पोली ॥ झट मौत आसिर पर बोली ॥ है जग से तेरा किनारा ॥ गया० ॥ किले महल मकान बनाये ॥ और बागबगीचे लगाये ॥ संग गया न बुरज मुनारा ॥ गया० ॥ किस बात पै है मन भूला ॥ किस करनी पै है फूला ॥ तज मोह कुटुंब संसारा ॥ गया० ॥ कुछ करले अब भी भाई ॥ नहीं हारि बिन कोई सहाई ॥ नहीं साथी कोई प्यारा ॥ गया० ॥ मानस देह नहीं नित मिलती ॥ नहीं बाग बहार नित खिलती ॥ निकट आया है जमका द्वारा ॥ गया० ॥ इस काल ने हैं सब धेरे ॥ रुख रावन कंसके फेरे ॥ दुरयोधन भीमको नारा ॥ गया० ॥ गये कौरव पांडव राजे ॥ जग डंका था जिनके बाजे ॥ इस कालने पकड़ा पछाड़ ॥ गर्व काखू जैसे के तोड़े ॥ जिन लाख खजाने थे जोड़े ॥ औरगे-को बड़ा हंकारा ॥ गया० ॥ नौशेखां हातमताई ॥ सखावत जिन थी बनाई ॥ कर जगमें गये चमकारा ॥ गया० ॥ श्रीविक्रम भोज करनथे ॥ जो नितही धरमकी शरनथे ॥ कर गये धर्म जयकारा ॥ गया० ॥ हो ध्यान न जब तक सगुणका ॥ कभी ज्ञान नहीं होता निर्गुणका ॥ मन किया न न सोच विचारा ॥ गया० ॥ कर अबहीं मन हरिसेवा ॥ तो पावे ज्ञान हरिमेवा ॥ हो रूप तेरा निस्तारा ॥ गया० ॥

पद २७१ ( राग केदार )

सुन धुन मुरली बैन बाजै हरिरास रच्यो । कुंज कुंज द्रुम बेली  
प्रफुलित मंडल कंचन मणिन खच्यो ॥ निरतत युगल किशोर युवति

जन रासमें राग केदार रच्यो । हरिदासके स्वामी श्यामा कुंजबिहारी  
नीकेही आज गोपाल नच्यो ॥

पद २७२ ( राग कान्हरा )

कैसे रास रसहि मैं गाऊं । श्रीराधिका श्यामकी प्यारी तुम्हरी  
कृपा बास ब्रज पाऊं ॥ आनंदेव स्वपने नहीं जानूँ दंपतिको शिर  
नाऊं । भजन प्रताप चरण महिमा ते गुरुकी कृपा दिखाऊं ॥  
वृंदावन वीथिन यमुना तट आनंदकुटी छवाऊं । सूरदास प्रभु  
तिहारी मिलनको वेद विमल यश गाऊं ॥

पद २७३ ( राग पीछ )

संग चलीं ब्रज बाल लाल कर तालन लै लै जोरी । लाई गति  
मृदंग उपजाई झाई वन घनघोरी ॥ ततथेई धुमकित ततथेई यह  
धुन सुन ले जोरी ॥ बल्लभ रसिक बिहारी प्यारी प्यारी तान झकोरी ॥

पद २७४ ( राग बिलावल )

आली रा रासमेंडल मध्य निरतत मदन मोहन अधिक प्यार  
लाडिली रूप निधान । चरण चारु हंमत भेद मिलवत गति भांति  
भांति भ्रूविलास मंद हास लेत नयननहीमें मान ॥ दोऊ मिलि  
राग अलापत गावत होडा होडी उघटत देकर तारी तान । परमानंद  
निरख गोपी जन वारत है निजप्रान ॥

पद २७५ ( राग देश )

लालको नाचन शिखवत प्यारी । जै सोइ सुभग बन्यो श्रीवृंदा-  
वन तैसी शरद उजियारी ॥ मान गुमान लकुट लिये ठाढी डरपत  
कुंजबिहारी । थेई थेई करत लाल मनमोहन उरप तुरप गति न्यारी ॥  
वंशीवट यमुना तट कुंजन रहस रच्यो गिरिधारी । कोऊ मृदंग कोऊ

वीण बजावत कोई हंसत दै तारी ॥ छबिसों गावत खडी नचावंत  
रोम रोम बलिहारी । देख देख ब्रम्हादिक नारद अचरज शोच  
विचारी ॥ व्यास स्वामिनी सो छवि निरखत रीझ देत करतारी ॥

पद २७६ ( राग रेखता )

नाचै छली छबीलो नंदका कुमार है ॥ गल बाहिं दै प्रियाके  
सुंदर श्रृंगार है ॥ इत मंद मंद झीनी नूपुर अवाज है ॥ उत पाय-  
जेब पायल घन कीसी गाज है ॥ पगिया लसी कुंवरके शिरपेंच  
लाल है ॥ भ्रुकुटी लगी ललोंई प्यारीके भाल है ॥ कटि काछनी  
सुचोली पटुका किनारका ॥ कानों जडाऊ झुमका लग हिर हार है ॥  
दामिनी सुरंगी सेला कीरती कुमारिका ॥ मोतिनकी माल सुंदर शोभा अपार  
है ॥ गुंजा गले गुनीके तर गुंजमाल है ॥ छतियां लगी लला सों वंसी  
रसाल है ॥ नासा बुलाक वेसर माथेपै मुकुट सोहै ॥ दोनों झुके  
परस्पर छवि वेशुमार है ॥ प्यारीके नख छटापर रवि चंद्र कोटी  
मोहै केशव खडा विलौके प्राणन अधार है ॥

पद २७७ ( राग झिजोटी )

मोहि मत रोकै तू एरी ब्रज नागरी । रूपकी निधान है तू सभी  
गुणखान है तू तेरे सम कौन आज तेरो बडो भाग री ॥ कहे तो  
मैं नृत्य कलं बांसुरी में राग भरूं कान्हरो केदारो भैरव सोरठ विहा-  
गरी । तू तो सदा उपकारी हितद्वकी करनहारी आज नारायण  
मोसों क्यों राखै लाग री ॥

पद २७८ ( राग देश )

अब आये प्रात क्यों मेरे भाम । तुम जाओ जहां जाके जागे हो  
याम वश किये तुम्हें सो धन धन्य बाम ॥ पग धरत धरन पर डग-

मगात मुख वचन कहत तुतरात जात कत भूल परे इत कौन काम ।  
अंजन अधरन पर पीक गाल जावक है भाल दोउ नयन लाल  
बिन गुनकी माल कहां पहरी श्याम ॥ तुम्हरे जिया भावत है जो  
बाल मैं परखी रसिक विहारीलाल अब कीजै पिया वा घर आराम ॥

पद २७९ ( राग बिलावल )

नयननकी चंचलता कहा कीने भीन रंग कौनके हो श्याम हमसे  
कहा दुरावत । औरके बदन देखनको नेम लियो किधों पलकन मध्य  
राखी प्यारी ताके भार भये नहीं आवत ॥ मधुप गंध लुब्ध सेज  
समीप निशि बसे संग लगे आवत रति कीरति गावत । सूरदास  
प्रभु मदनमोहन तनुकी प्रीति प्रगट भई है मुख नहि बनत बनावत ॥

पद २८० ( राग बरवा )

तुम जाओ जी जाओ जाके रहेहो रात । म्हारे काहेको आये  
जब भयो प्रभात ॥ लटपट पेच उनीदेसे नयना डगमग डगमग  
डगमगात । कपटि कुटिल मैं तोहि ते कहतहों मैं ना मानूंगी तोरी  
एक बात ॥ हा हा करत हैं पैयां परत हैं अबकी चूक मेरी करो  
जी माफ । जुगरामदास पिया मैं ना मानूंगी तुम वाहीके जावो  
जाके लगे हो गात ॥

पद २८१ ( राग मल्हार )

राधाजकी सहज अटपटी बोलन । अहो पिया कौन बसत  
त्रिया उरपाई कहां बिन मोलन ॥ मोहूं सों गुण रूप आगरी नीले  
अंगन चोलन । बडे बडे नयन अरुण कजरारे सुंदर अधर कपोलन ।  
उमग उमग पिया सन्मुख आवे मन भावत करत कलोलन । भग-  
वत् रसिक कहो क्यों ना साची नाहि करो अनबोलन ॥

## पद २८२ ( राग देश )

तुम सुनो राधिका विनय कान । नहिं सोहत मान तजिय  
सुजान ॥ अब करो कृपा जन अपनो जान । ऐसी काहेकी रही  
हो मौन ठान ॥ मेरे तूही है जीवन आधार । अब वेगि मिलो नहिं  
जात प्रान ॥ तुम देहु बात मोको बताय प्यारी जाते अब गइ रिसाय  
अपराध कौन कहो गुणनिधान । सुन रसिक विहारीजकी बात  
मेरे आनंद उर में नहिं समात हंसि मिलिये कंठ में डारी पान ॥

## पद २८३ ( राग धनाश्री )

सांची कहो कै प्यारी हांसी । काहेको इतनी रिसपावत कत  
तुम होत उदासी ॥ पुनि पुनि कहत कहां तब हीं ते कहा ठगीसी  
ठाढी । इकटक चितै रही हिरदे तन मानो चित्र लिखि काढी ॥  
समझी नहिं कहां मन आई मदन त्रसै तू आगे । सूरइयाम अति  
भये आतुरे भुजा गहन तब लागे ॥

## पद २८४ ( राग बेहाग )

एतो श्रम नाहिंन तबहु भयो । सुन राधिका जेतो श्रम मोको तै  
यह मान दयो ॥ धरणीधर विधि वेद उधारे मधुसो शत्रु हयो ।  
द्विज नृप किये दुसह दुख मेटे बलि को राज्य लियो ॥ तोज्यो धनुष  
स्वयंवर कीनो रावण अजित जयो । अघ बक बच्छ अरिष्ट कोशि  
मथि दावानल अंचयो ॥ त्रिय वपु धन्यो असुर सुर मोहे कों जग  
जो न द्रयो । गुरुमुत मृतक ज्यायबे काजे सागर शोध लियो ॥  
जानुं नहीं कहा या रिस में सहजहिं होत नयो । सूर सो बल अब  
नोहिं मनावत मोहिं सब विसर गयो ॥

पद २८५ ( राग बरवा )

मान तज चल सजनी ब्रजचंदा बुलावै री । हाहा हठको काम नहीं है क्यों जीया तरसावेरी ॥ जो हमरे संग चलो न भामिनि वह तो आपहि आवेरी । घनछाया सम जोवन जानो पल छिन में यह जावेरी ॥ यमुना निकट कदमकी छैयां गोपी संग नचावे री । **मुरलीधर** तेरो ध्यान धरत है तेरो ही गुण गावेरी ॥

पद २८६ ( राग केदार )

छांडदे माननी श्याम संग रूठि बो । रहत तू अलीन जलमीन लौ सुंदरी करो किन कृपा नव रंग पर टूटिबो ॥ बेगि चल बेगि चल जात यामिनि घटत कुंजमें केलिकर अमीरस घूटिबो ॥ **बाल-कृष्णदास नवनाथ** नंदन कुंवर सेज चढ ललन संग मदन गढ छिटि बो ॥

पद २८७ ( राग देश )

तुम काहेको लाडिली मान करत । वाकी प्रकृति जैसी है तैसी तुम जानो वाके गुण अवगुण कत जियामें भरत ॥ ताहिसों कीजिये कोप कुंवारि बिन कारण बैठत लरलर तुमसे तो पिया प्यारो नितहा डरत । **व्यास स्वामिनी चतुर नारी** मैं तोहि मनावत गई जो हारि कब देखूंगी पियासे तों को अंक भरत ॥

पद २८८ ( राग जिल्हा )

रैनि गईरी प्यारी छांडो हठेरी । सुन वृषभानु कुंवरी हरि तो वश निशिदिन तेरोही नाम रटेरी ॥ मदन गुपाल निरख नयनन भर बेगि चलो अब काहेन टेरी । **दास गोविंद प्रभुकी छवि** निरखे प्रीति करेसे तेरो कहा घटेरी ॥

## पद २८९ ( राग जैजैवंती )

बनत बनाऊं कछु बन नहीं आवे सांवरे सजन बिन तलफत  
प्राण हमारे । सोच किये क्या होत री सजनी बे हरि कठिण हृदय  
समझाऊं कैसे कारे ॥ तपोंगी ताप चढ़ूं ओर अगन दे तनुको  
जराऊं तो मैं पाऊं पिया प्राण प्यारे । सूर सकल विधि कठिण  
भई है बीतत रैनि गिनत गई दई के तारे ॥

## पद २९० ( राग पीछ )

श्याम श्याम श्याम रटत प्यारी आपही श्याम भई । पूछत फिरत  
अपनि सखियन ते प्यारी कहां गई ॥ बृंदावन बीथिन यमुना तट  
श्रीराधे श्रीराधे । सखी संगकी यह छवि निरखत रहीं सकल मौन  
साधे ॥ गरुवी प्रीति कहान करावै क्यों न होय गति ऐसी । कहै  
भगवान हित रामराय प्रभु लगन लगे जो जैसी ॥

## पद २९१ ( राग बिलावल )

नंदलाल निठुर होय बैठ रहे । प्यारी हाहा करत न मानत पुनि  
पुनि चरण गहे ॥ नहीं बोलत नहीं चितवत मुख तन धरणीं नख  
न करोवत । आप हंसत पुनि पुनि उर लागत चकित होत मुख  
जोवत । कहा करत यह बोलत नाही पिय यह खेल मिटावो ॥  
सूरश्याम मुखचंद्र कोटि छवि हंस कर मोहि दिखावो ॥

## पद २९२ ( राग परज )

मृदु मुसुकन कीजै थोरी थोरी । हमसों कहा रूसनो यमतुम  
नेह कुंजके चंद चकोरी ॥ तजिये मान तनैनी भ्रुकुटी ढीली करिये  
ललित किशोरी । निठुराई सभ छांड छबीली वचन सुधा दीजै  
श्रुति दोरी ॥

पद २९३ ( राग कलिंगडा )

अपनी डगर चलयो जारे ब्रजबासी । तू मेरे ढिग जिन ठाढ़ो  
रह देखेंगे लोग करेंगे हासी ॥ तुम ब्रजवासी अपनी गरजके नयना  
मिलिय गले डार गयो फांसी ॥ पुरुषोत्तम प्रभु नीठ मिलेहां तू  
मेरो ठाकूर मै तेरी दासी ॥

पद २९४ ( राग भैरवी )

मोहन मैं गूजर बरसाने दी मोते नाहक मांडीरार ॥ पांच  
टकाकी कामर ओढे तापर करत गुमान ॥ गाय चरावत नंदकी  
मोपै मांगत दधिको दान ॥ रत्न जडित मेरी ईडुरी हीरा लगे करार ॥  
एक हीरा गिरजाय गो तेरी सब गायनको मोल ॥ कृष्ण जीवन  
लछीरामके प्रभु प्यारे मोते नाहक मांडी रार ॥ नेक चित्त बलि  
जाऊं सांवरे मेरो विमल विमल दधि खाय ॥

पद २९५ ( राग बिलावल )

येरी यह कोहै री याहे दान देत गोवर्धन केरी खंडे ॥ हारन  
खेतन गाम मडैया कान्हर ठाडो ऐंडे ॥ बाप भैर कर कम रजा को  
पूत जगाती पैडे ॥ या ब्रजकी अब रीति नई है औलाति को नीर  
बैरेडे ॥ पराये बगर जिन देहु अडीठन कान्हर छैंडी छैंडे ॥ कृष्ण-  
दास बरजो नहि मानत तोरत लाजकि मैडे ॥

पद २९६ ( राग गुजरी )

गिरिवर धन्यो अपने करको । ताही के बल दान लेतहो रांक  
रहतहो हमको ॥ अपनेही मुख बडे कहावत हमहूं जानत तुमको ॥  
यह जानत पुनि गाय चरावत नित प्रति जातहो बनको ॥ मोर,



मुकुट मुरली पीतांबर देखे आभूषनको । सूर कांध कमरी हूं जानत  
हाथ लकुटिया करको ॥

पद २९७ ( राग बिलावल )

यह कमरी कमरी कर जानत । जाके जितनी बुद्धि हृदय मे, सों  
तितनी अनुमानत ॥ या कमरीके एक रोमपर वारों कोटिन अंबर ।  
सो कमरी तुम निंदत गोपी तीन लोक आडंबर ॥ कमरीके पल  
असुर संहारे कमरी तेसब भोग । जात पांत कमरी है मेरी सूर  
सबहि यह योग ॥

पद २९८ ( राग बिलावल )

मोसों बात सुनो ब्रजनारी । एक उपख्यान चलत त्रिभुवनमें  
सो तुम आज उधारी ॥ कबहूँ बालक मोह न दीजै मोह न दीजै  
नारी । जो मन आवै सोई कर डारै मूंड चढत हैं भारी ॥ बात कहत  
अठिलात जात सब हंसत देत कर तारी । सूर कहा ये हमको जाने  
छाँछकी बेचन हारी ॥

पद २९९ ( राग बिलावल )

यह जानत तुम नंद महर सुत । धेनु दुहत तुमको हम देखत  
जबहि जात खरकहि उत ॥ चोरी करत यही पुनि जानत घरघर  
ढूँढत भांडें । मारग रोक भये अब दानी वे ढंग कबते छांडे ॥ और  
सुनो यशुमति जब बांधे तब हम करी सहाय । सूरदास प्रभु  
यह जानत हम तुम ब्रज रहत कन्हाय ॥

पद ३०० ( राग कल्याण )

रजधानी तुम्हरे चित नीकी । मेरे दास दास दासनके तिनको  
लागत है अति फीकी ॥ ऐसी काहे मोहिं सुनावत तुमको यही अगाध ।

कंस मार शिर छत्र फिराऊं कहा तुच्छ यह साध ॥ तबहीं लग  
यह संग तिहारो जबलौं जीवत कंस । सूरश्यामके मुख यह सुन  
तब मनमें कीनो संस ॥

पद ३०१ ( राग कालिगडा )

अच्छा लेऊ ब्रजवासी कन्हैया अच्छा लेहु रे । बरसाने से चली रे  
मुजुरिया आगे मिले महाराज रे ॥ कोरी कोरी मटुकी में दही रे जमाया  
चाख लेहु महाराज रे । दधि मेरो खायो मटुकियारो फोगी इंडुगी कहां  
डायी लाल रे ॥ हार शृंगार सभी मेरो तोयो दुलरी कहां डारी  
लाल रे ॥ जाय पुकारुंगी कंसके आगे न्याव करो महाराज रे ।  
मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल बलिहार रे ॥

पद ३०२ ( राग मल्हार )

ब्रज पर नीकी आज घटा । नान्ही नान्ही बृंद मुहावनी लागत  
चमकत बिज्जु छटा ॥ गर्जत गगन मृदंग बजावत नाचत मोर  
नटा । गावत सुरहि देत चातक पिक प्रगख्यो मदन भटा ॥ सब  
मिल भेंट देत नंदलालहि बैठे उंची अटा । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन  
लाल शिर कसुमी पीतपटा ॥

पद ३०३ ( राग खमाज )

दर्शन देना प्राण प्यारे । नंद लला मेरे नैनोके तारे ॥ दीनानाथ  
दयाल सकल गुण नव किशोर सुंदर सुख बारे ॥ मनमोहन मन  
रुक्त न रोक्यो दर्शनकी चित चाह हमारे ॥ रसिक सुशाल मिल-  
नकी आशा निशि दिन सुमिरन ध्यान लगा रे ॥

पद ३०४ ( राग सोरठ )

तोहि इगर चलत का भयोरी बीर । कहूं पगकी पायल कहूं

शिरको चीर ॥ भई बावरी न कछु सुध बुध शरीर । तेरे मतवारन  
सम झूमत नयन ॥ मुख भाषत है तू अति विरहके बैन । मानो  
घायल काहू ने करी दगन तीर ॥ मोसों नारायण जिन रख दुराव  
जो तू कहेगी सोई मैं तेरो करूं उपाव ॥ जासों रोग हू घटे हटे  
सकल पीर ॥ १

पद ३०५ ( राग पिट्ठ )

लागी रे लगनियां मोहनासों । सुंदर श्याम कमलदललोचन  
नंदजूको छैल छकनियां ॥ कछु टोना सा डार गयोरी कैसे भरन जाऊं  
पनियां । कृष्णदास की प्यास भिटे जब निरखों गिरिके धरनियां ॥

पद ३०६ ( राग खट )

आज नंदलाल मुख चंद नयनन निरख परम मंगल भयो भवन  
मेरे । कोटि कंदर्प लावण्य एकत्र कर वारों तबहीं जबहीं नेक हेरे ॥  
सकल सुख सदन हर्षत वदन गोपवर प्रबलदल मदन जनो संग घेरे ।  
कहो कोउ कैस हूं नाहिं सुध बुध रहे गदाधर मिश्र गिरिधरन टेरे ॥

पद ३०७ ( राग खट )

मुकुट माथे धरे खोर चंदन करे माल मुक्ता गरे कृष्ण हेरे ॥  
पीत पट कटि कसे कर्ण कुंडल लसे निशिदिना उरबसे प्राण मेरे ॥  
मुरलिका मोहनी करकमल मोहनी ले कनक दोहनी खिरक नेरे ॥  
लाल लोचन बने ललित रस में सने सैनसे अनगिने ग्वाल तेरे ॥  
किंकिनी काछनी देत शोभा घनी देख कौस्तुभ मनी सुर छकेरो ॥ प्रभु  
छबीलो रंगीलो रसीलो आली लग्न से मग्न मनमें बसेरे ॥

पद ३०८ ( राग भैरवी )

छबि आछी बनी बनवारी की । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल

अलकां धूधरवारी की ॥ सुदु मुसुकान आन नयनन की को बरणे  
गिरिधारी की । कृष्णदास युगल जोरी पर तन मन धन सभ वारी की ॥

पद ३०९ ( राग बिलावल )

लाल तेरे चपल नयन अनियारे । नंदकुमार सुरत रस भीने प्रेम  
रंग रसनारे ॥ कलु अस रीझे चकित चहुं दिशि नव वर जोवन-  
वाँट मानो शरद कमल पर खंजन मधुप अलक धुंधरारे ॥ एजो  
मीन धनश्याम सिंधुमें ब्रिलसत छेत झुलारे । गोवर्धनधर जान  
मुकटमणि कृष्णदास प्रभु प्यारे ॥

पद ३१० ( राग रामकली )

लोचन भये श्यामके चेरे । एते पर सुख पावत कोटिक मोतन  
फेर न हेरे ॥ हा हा करत परत हरि चरण न ऐसे वश भये उनहीं ।  
उनको वदन विलोकित निशिदिन मेरो कह्यो न सुनहीं ॥ ललित  
त्रिभंगी छबि पर अटके फटके मोसों तोरी । सूरदास यह मेरी  
कीनि आपुन हरिसो जोरी ॥

पद ३११ ( राग गौरी )

अब तो प्रगट भई जग जानी । वा मोहन सों प्रीति निरंतर  
क्यों न रहेंगी छानी ॥ कहां करों सुंदर मूरत इन नयनन माझ  
समानी । निकसत नहीं बहुत पचहारी रोम रोम उरझानी ॥ अब  
कैसे निर्वार जात है मिले दूध ज्यों पानी । सूरदास प्रभु अंतर्यामी  
ग्यालिन मनकी जानी ॥

पद ३१२ ( राग मल्हार )

कोऊ माई लैहै री गोपालहिं । दाधिको नाम श्यामसुंदर धन  
मुख चढ्यो ब्रजबालहिं । मटुकी शीश फिरत ब्रजविधि न बोलत वचन

रसालहीं । उफनत तक्र चहुं दिशि चितवत चित लाग्यो नंदलालहीं ॥  
हंसत रिसात बुलावत बरजत देखो उलटीं चालहि । सूरश्याम  
बिन और न भावत या विरहिन बेहालहि ॥

पद ३१३ ( राग गौरी )

ग्वारन क्यों ठाढी नंद पौरी । बेर बेर इत उत फिर पवत  
विजया खाय भई बौरी ॥ सुंदर श्याम सलोने से ढोटा उन दोधि  
लेन कह्यो री । हमको कह गयो नेक खडी रह आपुन बैठ रह्यो री ॥  
नौखल धेनु नंद बाबा घर तेरोही लेन कह्यो री । जोवन माती तिन  
ग्वारनी तैं मेरो लाल ठग्यो री ॥ इतनी सुनत निकस आये मोहन  
दधिको मोल कहो री । परमानंद स्वामी रूप लुभाने यह दधि  
भलो बिक्यो री ॥

पद ३१४ ( राग असावरी )

हर हर हर हर हर हर हरे । हर सुमिरत जन बहु निस्तरे ।  
हरिके नाम कबीर उजागर । जन्म जन्मके काटे कागर ॥ जन राम-  
दास राम संग राता । गुरुप्रसाद नरक नहिं जाता ॥ गोविंद गोविंद  
संग नामदेव मन लीना । आठ दामको छीपरो होयो लाखीना ॥  
बुनना तनना त्यागके प्रीति चरण कबीरा । नाच कुला जो लाहरा  
भयो गुणी गहीरा ॥ सैन नाई बुतकारिया ओह घर घर सुनिया ।  
हिरदे बस्या पारब्रम्ह भक्तन में गिनिया ॥ रामदास अधम ते बाल्मीकि  
तिन त्यागी माया । परघट होय साध संग हरिदर्शन पाया ॥ यह  
विधि सुनके जाटरो उठ भक्ति लागा । मिले प्रत्यक्ष गुसाइयां  
धन्या बडभागा ॥

पद ३१५ ( राग ठुमरी )

माथेपै मुकुट श्रुति कुंडल विशाल लाल अलक कुटिल सो अलिन  
मद गंजनी ॥ काछनी कलित कटि किंकिणी विचित्र चित्र पीत पट  
अंग सो विराजै युति वैजनी ॥ दिये गलबाहीं प्रिया प्रीतम विहार  
कैं जाति अनुराग भर आई नई द्वै जनी ॥ कहै जैदयाल प्रभु  
मेरु मोहि लियो मंद मंद बाजत गोविंद पायं पैजनी ॥

पद ३१६ ( राग असावरी )

मोहनी रूप बनायो हरिबाना । बाहीं बरा बाजूबंद सोहे छला  
छाप दस्ताना ॥ मुखभर पान सीक भर सुरमा लै दर्पण कान्हा मन  
मुसकाना । माय यशोदा यों उठ बोली तू क्यों भयो जनाना ॥ मोहि  
छलिगई वृषभानु किशोरी ताहि छलबेकी बरसाने मोहि जाना ॥  
बरसानेकी कुंज गलिन में कान्हा फिरे दिवाना । भानराय की पौर  
बूझके काहू गूजरिया सों जाय बतराना ॥

पद ३१७ ( राग बडहंस )

सांझ परी घर आये न कन्हैया ॥ गोपी पूछे ग्वालनसों कह  
गये मोरे ब्रजके बसैया ॥ घर रहे बछरू बन नहीं गैयां यमुना  
किनारे ठाढी यशुमति मैया । जाय पताल कालीनाग नाथ्यो फण  
ऊपर प्रभु निरत करैया ॥ लालदास प्रभु कह कर जोरे चरण  
कमल पर चितको धरैया ॥

पद ३१८ ( राग तोडी )

पाती सखि मधुबन से आई । ऊधो हाथ श्याम लिख पठई  
तुम सुनहो मोरी माई ॥ अपने अपने गृहसे दौरी ले पाती उर  
लाई । नयनन नीर निखै नहिं खंडित प्रेम बिथा न बुझाई ॥ कहां

करूं सूनो यह गोकुल हरि बिन कछु न सुहाई । सूरदास प्रभु  
कौन चूक ते श्याम सुरति बिसराई ॥

पद ३१९ ( राग देस )

ऊधो कारे सबै बुरे ॥ कारेकी परतीत न करिये कारे-विषके भरे ॥  
कारो अंजन देत दृगनमें तीखी सान धरे ॥ नाग नाथ हरि हर  
आये फण फण निरत करे ॥ कोयलके सुत कागा पाळे अर्पण ही  
ज्ञान धरे ॥ पंख लगे जब उडने लागे जाय कुटुंब रले ॥ सूरदास  
कारो मतवारो कारेसे काल डरे ॥

पद ३२० ( राग जिह्वा )

चल गये दिलके दागनगीर । जब सुधि आई प्यारे तेरे दरशकी  
उठत कलेजे पीर ॥ नटवर वेष नयन रतनारे सुंदर श्याम शरीर ।  
आपन जाय द्वारका छाये खारी नंदके तीर ॥ ब्रजगोपिनको प्रेम  
बिसान्यो ऐसे भये बेपीर । बृंदावन बसीवट त्यागो निर्मल यमुना  
नीर ॥ सूरश्याम ललता तब बोली आखिर जात अहीर ॥

पद ३२१ ( राग सोरठ )

यशुमति बार बार यह भाखै । है कोऊ ब्रज हितू हमारो चलत  
गोपालहीं राखै ॥ कहा काज भरे छगन मगनको नृप मधुपुरी  
बुलाये ॥ सुफलक सुत मेरे प्राण हरणको काल रूप हो आये ॥  
बरु यह गोधन कंस लेय सब मोहि वंदी लै मेलै ॥ इतनो मांगत  
कमल नयन मेरि आंखन आगे खेलै ॥ को कर कमल मथानी गही है  
को दधि माखन खैहै ॥ बहुरो इंद्र बरसि है ब्रज परको गिरि नख  
पर लैहै ॥ बासर रैनि विलोकत जीयो संग लागि झुलराऊं ॥ हरि  
बिछुरत जो रहों कर्मवश तो किहि कंठ लगाऊं ॥ टेरे टेरे धर परत

यशोदा अधर बदन बिलखानी ॥ सूर सो दशा कहां लग धरणौ  
दुखित नंदकि रानी ॥

पद ३२२ ( राग परज )

भजो मन वृंदावन सुखदाई । अवनी कनक सुहाई ॥ अवनी  
कनक सुरंग चित्र छवि कालिंदी मणि कूले ॥ लतन रहे भर पाय  
सखी गृह कंचनके द्रुम मूले ॥ जलज थलज रहे विकस जहां तहं  
नरुण धरुण छवि छाई ॥ सहज रैन सुखदै न विराजत वृंदावन सुख-  
दाई ॥ भजो० ॥ राजत नवल निकुंजहि लालन निरख होत सुख  
पुंजहि ॥ निरख होत सुख पुंज कमलदल रची है सुंदर सैन ॥  
बहत समीर त्रिविध गुण लीने आकर्षत मन मै न ॥ डोलत केक  
कीर पिक बोलत जित तित मधुपन गुंजही ॥ रतन खचित फूलन  
सौ फूली राजत नवलनिकुंजहि ॥ भजो० ॥ करत निकुंज विहार ।  
सखियन प्राण आधार ॥ सखियन प्राण आधार रसिक बर नवल  
किशोर किशोरी । हंस मुर चित चोरत प्यारे को सभ अंग नागर  
गोरी ॥ अति बिलास नव नव रुचि उपजत बल किंकिणि शंकार ।  
अति प्रवीन रति कौक कलन में करत निकुंज विहार ॥ भजो० ॥  
निख निख बल जाई । श्रम जल कण झलकाई ॥ श्रम जल कण  
रहे झलक बदन बिंब कहुं कहुं पीक जो सोहै ॥ हंस मुरचित चोरत  
प्यारे को ऐसी को जुन मोहै ॥ चितहि चिन्ह रजनी के सजनी  
नयननमें मुसकाई । जै श्रीहित ध्रुव सखी सरस रंग त्रीनी निख  
निख बल जाई ॥ भजो० ॥



## पद ३२३ ( राग धनाश्री )

नमो नमो वृंदावनचंद । आदि अनंत अनादि एक रस पिय प्यारी  
विहरत स्वच्छंद ॥ सत चित आनंद रूप घन खग मृग द्रुम बेली  
और वृंद । भगवत रसिक निरंतर सेवत मधुप भये पीवत मकरंद ॥

## पद ३२४ ( राग बरवा )

शरण गये प्रभुको न उबारे । जित जित भीर परी भयभीती  
चक्र सुदर्शन तहां सम्हारे ॥ महाप्रसाद बैठ अंबरीषहि दुर्गाको  
कोप निवारे । ग्राह प्रसत गजको जल डूबत नाम छेत वाको दु  
टारे ॥ सूरश्याम बिन करै और को रंगभूमि में कंस पछारे ॥

## पद ३२५ ( राग बिलावल )

अबके माधो मोहि उधार । मगन होत भवसिंधु में कृपासिंधु  
मुरार ॥ नीर अति गंभीर माया मोह लहर तरंग । लिये जात  
अगाधको वर गहै ग्राह अनंग ॥ मीन इंद्रिय अतिहि काटत पेट  
अघ शिर भार । भूमि पाइन जात जितकित उरक्ष मोहसिवार ॥  
क्रोध दंभ भयान तृष्णा पवन अति शकशोर । नाहि चितवत देत  
सुत त्रिय नाम नौक ओर ॥ पय्यो बीच बिहाल बिहल सुनहु  
करुणामूल । श्याम भुज गह काढि डारहु सूर जन ब्रजकूल ॥

## पद ३२६ ( राग झिझोटी )

मोसम कौन अधम जगमाहीं । भ्रमत रहत नित विषय वासन  
तज निधि बन द्रुम बेलिन छाहीं ॥ चितन करत न ललित किशोरी  
युगल लाल दीने गरबाहीं । निरतत नवल नागरी ललना लालन  
करत मुकुट परछाहीं ॥

## पद २२७ ( राग धनाश्री )

मेरी सुध लीजो श्रीब्रजराज । और नहीं जग में कोउ मेरो  
तुमहि सुधारन काज ॥ गणिका गीध अजामिल तारे औ शबरी  
गजराज । सूर पतित तुम पतित उधारन बाह गहेकी लाज ॥

## पद २२८ ( राग प्रभाती )

की पैज राखो धनी । संकट काट निवाजे के ते गिनत न  
जाय गनी ॥ खंभा ते प्रल्हाद छुड़ाये द्रौपदी के पुनि चीर बढाये  
गुनके कंदन काट निकाले सुनतहि ढेर कनी । नामदेवकी गऊ  
जिवाई धनेके दुध पीया जाई सुदामाके मंदिर ऊंचे साजे सुरत  
सों सुरत बनी ॥ कबीर राख गैयर से लीने सूर भक्तको दर्शन  
दीने पीपा बीच सभाकर सांचा दियो मिलाय जनी । जयदेवकी  
अष्टपदी विचारी मीराबाई की जहर निवारी रामदासको कनक  
जनेऊ दीन ऐसे दयालु प्रनी ॥ भीलनी ते लै वन फल खाये त्रिलो-  
चन के व्रंतिया हो धाये अंबरषि भक्तको बरत रखायो चक्रकी फेर  
अनी कर्माबाई की खिचडी लीनी सैनेकी जाय प्रतिज्ञा दीनी धुरू  
राख्यो अटल द्वारे लागी प्रीति धनी ॥ सुवा पढावत गणिका तारी  
अहल्या चरणन लाय उधारी नातक वेदी कियो हजूरी राख्यो लाय  
तनी । दुनिदास प्रभु संतसहाई असुर संहारत वेगहि आई ताको  
नाम हृदय में राखो सुमिरो एक मनी ॥

## पद ३२९ ( राग देश )

मेरे माधोजी आयों हौं सरे । तेरा बार बार यश गाऊं सांवरे  
आयों हौं सरे ॥ करुणाकरे लिखे गुणवंती यह मन में उचरे ।  
लेख पतियां द्विज हाथ पठाऊं द्वारका गमन करे ॥ लगन लिखाय

चदेरीको भेजा कागज मेल धरे । रुकमैया जब मानत नाही कूडे  
बचन करे ॥ दल जोडे शिशुपाल जो आये लंगर घेर खडे । पद-  
मके स्वामी वेग पधारो रुक्मिणि याद करे ॥

पद ३३० ( राग सोरठ )

सुन अलका वाले कृष्णजी मोरे मनमें आन बसो । जरद जाना  
पहरके शिर मुकुटको कसो ॥ चलतेहो टेढी चाल मत घायत न करो  
करो ॥ शिवगिरिकी अरज मानिये दीनानाथ हरे ॥ महाराज की  
कृपासे कई कोटि पतित तरे ॥

पद ३३१ ( राग बिलावल )

किन तेरो गोविंद नाम धन्यो । लेन दनके तुम हितकारी मोते  
कल्लु नस्यो ॥ विप्र सुदामा कियो आयाची तंदुल भेट धन्यो ।  
दुपद सुताकी तुम पति राखी अंबर दान कन्यो ॥ संदी पनके तुम  
सुत लाये विद्या पाठ पढ्यो । सूरकी बिरियां निठुर है बैठे कानन  
मंद धन्यो ॥

पद ३३२ ( राग कानडा )

पूतना विष दे अमृत पायो । जो कल्लु दैयत सो फल पैयत  
नाहक वेद न गायो ॥ शत यज्ञ राजा बलि कीनो बांध पताल  
पठायो । लक्ष गऊ राजा नृग दर्नी गिरगट रूप करायो ॥ रंक  
जन्मके मित्र सुदामा कंचन धाम बनायो । सूरदास तेरी अद्भुत  
लीला वेद नेत कह गायो ॥

पद ३३३ ( राग सोरठ )

दरमांदे ठाढे दरबार । तुझ विन सुरत करै को मेरी दरशन  
दीजै खोल किवार ॥ तुम धन धनी उदार त्यागी श्रवणन सुनियत

पुण्यश तुह्यार । मांगों कौन रंक सब देखों तुमहीं ते मेरो निस्तार ॥  
जयदेव नामा विप्र सुदामा तिन पर कृपा भई है अपार । कह  
कबीर तुम समरथ दाते चार पदारथ देत न वार ॥

पद ३३ ( राग जगला )

कृष्ण नारायण ब्रह्म परायण श्रीपति कमलाकांत । नाम अनंत  
कृष्ण वरणों शेष न पावत अंत । नारद शारद शिव सनकादिक  
सिद्ध धरंत मच्छ कच्छ शूकर नरहरि प्रभु वामन रूप धरंत ॥

शुराम श्रीरामचंद जग लीला कोटि करंत । जन्म लियो वसुदेव  
देवि गृह नाम धन्यो नंदनंद ॥ पैठ पताल कालीनाग नाथ्यो फण  
फण निरत करंत । बलभद्र होकर असुर संहारे कंसको केश गहंत ॥  
जगन्नाथ जगपति चिंतामणि होय बैठे निश्चिंत । कलियुग अंत  
अनंतत होकर कलकीरूप धरंत ॥ दश अवतार हरिजूके गाये  
सूर शरण भगवंत ॥

पद ३३५ ( राग भैरव )

मंगल आरति गोपालकी । नित उठ मंगल होत निख मुख  
चेतवन नयन विशालकी ॥ मंगल रूप श्यामसुंदरको मंगल छबी  
भुकुटी भालकी । चतुर्भुजदास सदा मंगलनिधि वानिक गिरिधर  
लालकी ॥

पद ३३६ ( राग रामकली )

आरती कीजै सुंदर वरकी । नंदकिशोर यशोदानंदन नागर नवल  
ताप तप हरकी ॥ नवविलास मृदु हास मनोहर श्रवण सुधा सुख  
मोहन करकी । विहारीदास लोचन चकोर नित अंश प्रिया  
भुजधरकी ॥

पद ३३७ ( राग धनाश्री )

परम पुनीत प्रीति नंदनंदन यही विचार विचार । कहो शुक  
 श्रीभागवत विचार ॥ हरिजीकी भक्ति करो निशिवासर अल्प जीवन  
 दिन चार । चिंता तजो परीक्षिति राजा सुन शिख शीख हमार ॥  
 कमलनयनकी लीला गावो मिट गयै कोटि विकार । भजन करो  
 विश्वास तजो नृप चिंता शोक निवार ॥ खट्वांग दिलीप त  
 उधरे तुमरे हैं सतबार । तुम तो राजा परम भक्त हो म  
 हमार ॥ हरिजीकी भक्ति युगोयुग वरणों आन धर्म दिन चार  
 एक समय दुर्बासा पठये आये समय विचार ॥ कै राजा मोहिं भोजन  
 दीजै कै जावो ब्रत हार । राजा कहै मोहिका संकट दीजो नाहिं न  
 और उपाय ॥ द्रुपदसुता कहै कृष्ण सुमिर लेहु तुमरे सदा सहाय ।  
 तब पांडव सुत सुमिरण कीनो प्रगटे कृष्ण मुरार ॥ चक्र सुदर्शन  
 की सुधि आई ऋषी चले ब्रत हार । अष्टादश षट तीन चार मिल  
 करते यही विचार ॥ एको ब्रह्म सकलघटपूरण केवल नाम अधार ।  
 सतयुग सत त्रेता तप संयम द्वापर पूजा चार ॥ सूर भजन कलि  
 केवल कीर्तन लज्जा कान निवार ॥



भाग २ रा समाप्त









